श्री राम

साहित्यिक लोकगीत रागिनी का अनुपम सङ्ग्रह

गुरशरणम् रागिनी संग्रह

वैद्य भूषण पं० गुरशरणदास वैष्णव

श्री राम

कविकुल चक्रचूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास जी को गुरु रूप में वरण कर, उन्हीं का अनुकरण करते हुए अपने निवास क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजधानी क्षेत्र दिल्ली की लोकभाषा "कैरवी" में वैद्य भूषण पं० गुरशरणदास जी की "रागिनी" विधा में रचित काव्य रचनाओं का सङ्ग्रह

गुरशरणम्
रागिनी संग्रह

प्रेषकः
रामचरितमानस मण्डल

संस्करणः प्रथम

प्रस्तावना

श्रीमद् गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा "वेदानां सामवेदोऽस्मि" अर्थात वेदों में मैं सामवेद हूँ। हमारे महान ज्ञानपुञ्ज ऋषियों के द्वारा इसकी व्याख्या समझें तो 'वेद' शब्द का अर्थ 'ज्ञान' है तथा 'साम' का अर्थ "गान" से लिया गया है। गान का सीधा सम्बन्ध भाव संवेदना से है इससे स्वतः सिद्ध होता है कि ज्ञान के साथ भावना अर्थात गान के संयोग में ही ईश्वर की विशेष उपस्थिति है। यह सत्य है कि ज्ञान से ईश्वर का साक्षात्कार किया जा सकता है, किन्तु भावना के बिना ज्ञान दृष्टि भी अपूर्ण ही है। "भावो हि विद्यते देवः तस्मात भावो हि कारणं" वेद अनुभूति जन्य ज्ञान है, और ऋषि मुनि इसे अनन्त होने के बाद भी व्यक्त करने का प्रयास करते रहे हैं। शब्दों द्वारा ईश्वर अभिव्यक्ति की तीन धाराएँ हुई– गद्य, पद्य, गान। ये तीनों धाराएँ क्रमशः मानो ईश्वर–भक्ति और जीव की प्रतीकात्मक छाया है। जैसे सन्त श्री तुलसीदास जी की ब्रह्मावतार की चौपाई यहाँ भी सटीक और सार्थक होती नजर आ रही है "उभय बीच सिय सोहहि कैसे, ब्रह्म जीव बिच माया जैसे"। सन्त श्री ने कितनी सरलता से ईश्वर और जीव के बीच में माया अर्थात भक्ति का होना निर्देशित कर दिया। उसी सूत्र में गद्य पद्य गान में भी पद्य भक्ति रूप में समझना सार्थक होगा। अर्थात बिना भावना के ईश्वर को अभिव्यक्त करना आकाश में बीज अङ्कुरण के प्रयास मात्र जैसा ही है। यही कारण है कि जब भी कोई सन्त अपने इष्ट से साक्षात्कार के आनन्द को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करने की इच्छा करता है तो सरस्वती स्वयम् 'पद्य' रूप में सन्त की लेखनी पर आरूढ़ हो जाती है, तथा एक एक शब्द जीवन्त हो उठता है। हमारी संस्कृति में जितने महाकाव्य रचयिता हुए हैं चाहे वह स्वयं वेदव्यास हों या सन्त तुलसीदास, सभी की रचना 'पद्य' में लिखी हुई देखने को मिलती है। ऐसा लगता है ज्ञान बर्फ की तरह स्थिर है लेकिन जैसे हि यह भक्ति रूपी आवेश से युग्म होता है तो रचयिता इतना भाव विह्वल हो जाता है कि उसकी लेखनी के द्वारा वह ज्ञान 'पद्य' रूप में द्रवित होकर जनकल्याण हेतु महाकाव्य रूपी महासागर बन जाता है। जो युग युगों तक प्राणी मात्र के चित्त रूपी खेती को गायन रूपी वृष्टि से सींचता रहता है।

ईश्वर माया जीव के योग से निर्मित सृष्टि रहस्य को महाऋषियों ने सृष्टि के आरम्भ में वेद ज्ञान शब्द के रूप में अभिव्यक्त किया समझा और आनन्द लिया किन्तु समय परिवर्तन शील और जगत की प्रत्येक वस्तु नित्य ह्रास होने वाली है, इसीलिये प्राणी मात्र के ज्ञान आयु बल का भी ह्रास होता गया जिसके परिणाम स्वरूप ईश्वर को समझ पाना या अनुभूत करना कठिन होने लगा। लेकिन जीव का अपने उद्गम तक पहुँचने का प्रयास स्वाभाविक है, इसलिए महापुरुषों ने ईश्वर के इस सूत्र को और सरल किया और उस परब्रह्म परमात्मा को परम 'ज्ञान' रूप में पाया। परमात्मा पुरूष तत्व है तो उनका 'ज्ञान' रूप भी पुरुष तत्व ही हुआ। 'ज्ञान' भी कदाचित अपनी स्त्री तत्व के वाणी रूप से संयुक्त होकर 'पद्य' का निर्माण करता है, जिसमें ईश्वर 'गान' के रूप में निवास करते हैं। तत्पश्चात बुद्धिजनों ने 'गान' का विश्लेषण किया, तो ईश्वर को एक विशेष 'राग' के रूप में अनुभव किया। 'राग' भी इसी

संरचना के क्रम में अति सूक्ष्म एवं गूढ़ होने के कारण जीव कल्याण के लिए अपने स्त्री तत्व 'रागिनी' के योग से जीव के चित्त में एक स्पन्दन करता है, जिसमें अखण्ड आनन्द की अनुभूति होती है। जीव इस आनन्द में इतना लिप्त हो जाता है कि अनन्त ईश्वर की खोज बन्द हो जाती है और अन्ततः यही आनन्द ईश्वर के 'सत्य' रूप में अनुभव होता है। इस प्रकार विद्वानों ने ईश्वर के गूढ़तम सूत्र "वेद-ऋचा-शब्द" के रहस्य को अति सरलतम सूत्र "सत-चित-आनन्द" के रूप में अभिव्यक्त किया। इस दिव्य आनन्द को प्राप्त करने का माध्यम, विद्वानों ने इसकी माता रूप "रागिनी" को ही माना है, क्योंकि "रागिनी" ईश्वर का वह सरलतम भाव है, जिसमें इतना रोमाञ्च है की जीव मात्र किसी पुरुषार्थ के बिना ही उस परब्रह्म परमात्मा की अनुभूति कर लेता है, जो कि नारद जैसे ज्ञानियों के लिए भी नेति नेति है।

बाकी संरचना की कल्पना करें तो वह जीव विशेष के लिए है और स्वयं सिद्ध करने के बाद ही केवल स्वयं को उसका अनुभव हो सकता है, लेकिन "रागिनी" तो ईश्वर का वह भक्ति स्वरूप है जिसे तुलसी जैसे भक्त कवि सिद्ध करते हैं और जन्मों जन्मों तक अनन्त जिज्ञासू जीव उसके आनन्द सागर में गोता लगाते हैं।

ऐसे ही महाकवियों के क्रम में भक्त कवि "स्व० वैद्य भूषण श्री गुरशरणदास जी" ने अपने दिव्य ज्ञान एवं अनुभव से अलग अलग दृष्टान्तों को कथाओं को ऐतिहासिक घटनाओं को "गुरशरणं रागिनी सङ्ग्रह" नामक सरलतम काव्य "रागिनी" काव्य में रचा जो हमें हमारी ग्रामीण भाषा के माध्यम से हमारे चारों पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अनुकरण करना सिखाती है तथा मोक्ष का मार्ग खोलती है।

युग परिवर्तन के कारण मानव का विवेक सङ्कुचित हो जाता है। अतएव वेद, पुराण, उपनिषद आदि वैदिक शास्त्रों की भाषा संस्कृत अथवा गूढ़ हिन्दी में होने के कारण मानव बार बार अपने धर्म से बहिर्मुख होने लगा है। इस कारण जो धर्म आचरण के संस्कार पूर्वजों द्वारा कुल परम्परा के माध्यम से हमारी सन्तति में आने चाहिए वह क्रम टूट जाता है। इस विक्षोभ के कारण आज के आधुनिक काल में मानव मात्र को ईश्वर सत्ता, धर्म आचरण, कुल रीति यहाँ तक कि राष्ट्रभक्ति के दायित्व के लिए भी लौकिक प्रमाण तथा अति सरल भाषा की आवश्यकता होने लगी है। क्योंकि ईश्वर समदर्शी है अतः किसी न किसी सन्त को हम जैसे अल्प बुद्धि जीवों के मार्गदर्शन हेतु अवतरित कर देता है। कदाचित ईश्वर की इस अहैतु की कृपास्वरूप वैद्यभूषण पण्डित श्री गुरशरणदास जी का उदय हुआ और उनका सानिध्य पाकर ही मानो जैसे अस्त होते हुए संस्कार पूर्ण श्वाँस ग्रहण करने के समान सहज और सुलभ हो गये।

इस काव्य सङ्ग्रह में कवि की लेखनी की लगभग ७० वर्ष की अविरल यात्रा है। जिसमें कवि ने नितान्त निरक्षर अथवा तो बहुत कम पढे हुए जन सामान्य की जिज्ञासा को सरलतम काव्य 'रागिनी' के माध्यम से हमारे पूर्व ग्रन्थों की प्रमाणिकता के साथ हृदय में उतारा है। प्राणी मात्र के जीवन के अहम बिन्दुओं के साथ ही साथ भगवद् प्राप्ति, गुरू निष्ठा, धर्म आचरण, नारी चरित्र, राष्ट्रप्रेम, दुर्व्यसन, दुराचरण का जीवन पर प्रभाव आदि अनेक ऐसे

अनेक प्रसङ्गों को हमारे पूर्व इतिहास जैसे श्रवण कुमार, महाभारत, महाराणा प्रताप, ताराचन्द, हरिश्चन्द्र, पृथ्वीराज, हकीकतराय आदि अनेक कथानकों के माध्यम से "रागिनी" विधा के रूप में जन सामान्य में तात्कालिक समय पर प्रचलित तर्जों में लयबद्ध किया है। दिव्य शास्त्रों के गूढ़तम ज्ञान को मानो कवि ने सरलतम काव्य "रागिनी" के माध्यम से एक खिले हुए पुष्प को चुनने जितना सरल बना दिया। इतनी सटीक, सार्थक और कल्याणकारी कविता को सुनते सुनते मानव समाज के लोग कवि के इतने प्रेमी हो गये कि कितने ही काव्य प्रेमियों ने भक्त कवि को अपने गुरु रूप में वरण किया। जिनमें से कईयों ने उनका अनुसरण करते हुए कुसङ्गतियों और दुष्त्याज्य दुर्व्यसनों को वमन की भाँति त्याग कर सद्मार्ग का अनुशीलन किया और कर रहे हैं।यह सब गुरुदेव की लेखनी द्वारा अपनी ग्रामीण भाषा में प्रिय लगने वाली काव्यकला "रागिनी" रूपी मानक में उस परम ज्ञान के मोतियों को पिरोने से सम्भव हुआ।

परमात्मा जब भक्तों को कुछ देते हैं तो कभी कभी साथ ही साथ उसकी परीक्षा भी ले लेते हैं और वही हुआ जब कवि की लेखनी काव्यकला की चरम सीमा पर थी और "रागिनी" काव्य रसिक मानव समाज मधुप की भाँति काव्य रस मग्न थे, तभी परमपिता परमात्मा ने श्री गुरुदेव को अपने धाम बुला लिया और अचानक मानो बगीचे से माली उस पुष्प को चुन ले गया हो जिसे तितली- भँवरा रूपी मानव समाज अपनी अचल धरोहर समझे आनन्द मग्न था इस हानि से जो काव्य मणिका की माला बिखरी वह पुनः जुड़ पाना हरिकृपा के बिना असम्भव ही है, लेकिन पूर्वजों की कहावत है कि पिता का खिलाया रसायन और गुरु से मिला ज्ञान कभी व्यर्थ नहीं जाता, वही हुआ। आज उनके परम निष्ठावान शिष्यों की एकता और गुरु के प्रति समर्पण भाव को देखकर मेरा मन भावविभोर हो रहा है। कितनी आत्मीयता के साथ सभी शिष्य अपने मन, वचन और कर्म से गुरुदेव द्वारा रचित इस बिखरी हुई मनका के काव्य रूपी मोतियों को पुनः एकत्रित कर रहे हैं, और आत्म कल्याण एवं आने वाली सन्तति के जीवन कल्याण के लिए एक शास्त्र के रूप में इस रचना सङ्ग्रह को अमर करने का प्रयास कर रहे हैं।

पूजनीय कवि वैद्यभूषण पण्डित श्री गुरशरणदास जी की यह रचना निश्चित रूप से हमारे लिए और हमारी सन्तति के लिए अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक है। हमें आशा है कि सन्त श्री के इस सङ्कलन से सभी जन आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक लाभ उठा कर अपने जीवन को आनन्दमय बनायेंगे।

जय जय श्री सीताराम

दो शब्द

प्रिय पाठक गण "गुरशरणम् रागिनी सङ्ग्रह" नामक पुस्तक का सङ्कलन एक अति उत्तम एवं मानवता के लिए सार्थक प्रयास है। इस तरह की रचना जो इतिहास के माध्यम से अद्भुत काव्य रस में, सरस्वती माँ के विशेष कृपा पात्र मेरे श्री गुरुदेव जी ने मानव कल्याण के लिए अहैतु की कृपा स्वभाव से शब्द ब्रह्म को कलम बद्ध कर जो असीम कृपा हम पर की है वह अनिर्वचनीय है।

उनकी रचनाओं में लगभग २१ इतिहास तथा वेद, शास्त्र, महाभारत, गीता, रामायण आदि ग्रन्थों के मार्मिक तथ्यों को सहज एवं सरलता से लोकगीत रूप से प्रस्तुत किया है। काव्य की निबन्ध कुशलता में अलौकिकता झलकती है।

प्रेम प्रसङ्गों में चरित्र चित्रण करते हुए शब्दों की मर्यादाओं की विशेषता सौन्दर्यता बढाती है। राजधर्म, वीरता, देशभक्ति, नीति शास्त्र, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति जैसे विभिन्न प्रसङ्ग दिव्य रूप में प्रकट कर समाज को भविष्य को जो उज्जवल दिशा दी है वह अकथनीय है।

आज के कुछ कवि महोदय कविताओं, रचनाओं के माध्यम से जो अश्लील व असभ्यता से भरे शब्दों का चयन कर ख्याति प्राप्त करने की होड़ में समाज को नरक की बाढ़ बनाकर डुबाने के कार्य में संलग्न हैं। उनके लिए सभी सङ्कलन कर्ताओं ने रागिनी का सङ्कलन कर पुस्तक की प्रस्तुति की है जो सभी के लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगी।

कहने के लिए मेरे प्यारे देश भारतवर्ष ने स्वतन्त्रता के उपरान्त बहुत उन्नति की है। ठीक है भौतिक दृष्टि से बहुत सुखी समृद्ध हुए परन्तु एक आयाम ऐसा भी है जहाँ हम बहुत अधिक कमजोर पड़ते जा रहे हैं। वह आयाम है उच्च चरित्र वाले व्यक्तित्वों का दिग्दर्शन।

आजकल स्वाध्याय अर्थात ग्रन्थों के अध्ययन, पठन-पाठन, चिन्तन-मनन, से व्यक्ति दूर होता जा रहा है। हमारे देश में उत्पन्न हुए महान पुरुषों के विषय में भी चर्चायें कम देखने को मिलती है। ऐसे समय में स्व० पं० गुरशरणदास जी द्वारा रचित रागिनी को सङ्कलित कर, उन्हें पुस्तक का रूप दिया जा रहा है। जिसका मुख्य उद्देश्य मानव मात्र के कल्याण के लिए कर्म, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, संयम, सत्य, श्रद्धा, भगवत्प्रेम आदि तत्वों का विवेचन तथा मनुष्य को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना है।

रागिनी गायकों से भी हमारा विनम्र अनुरोध है कि आप रागिनी को गाने से पूर्व इसके आध्यात्मिक तथ्यों पर प्रकाश अवश्य डालें। जिससे रागिनी मनोरञ्जन के साथ साथ अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त करे। क्योंकि इनके रचयिता का मुख्य लक्ष्य भी मानव जाति को किसी पात्र के चरित्र के माध्यम से आत्म कल्याण के लिए प्रेरित करना था।

इस पुस्तक के सङ्कलन में हम उन सभी व्यक्तिओं का भी आभार व्यक्त करते हैं जिन्होनें इनकी रचनाओं को सँभालकर रखा तथा जब हमारे इन विचारों से अवगत हुए कि हम रागनियों को एक पुस्तक का आकार देने जा रहे हैं तो उन्होंने हमें रचनाएँ उपलब्ध कराई।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक रागिनी गायकों व पाठकों में प्राण फूँकने में सक्षम है जो सन्मार्ग से भटके हुए लोगों को उचित मार्ग प्रदान करेगी। यदि यह पुस्तक पसन्द आये

तो इसको अपने मित्र बन्धुओं को जन्मदिन व अन्य पर्वों पर उपहार में देकर इन स्वर्णिम सूत्रों को जन जन तक पहुँचाने का पुण्य लाभ अर्जित करें। इसी मङ्गल कामना के साथ सभी को कोटि कोटि धन्यवाद सहित नमन।

– शिष्य गण ग्राम छाँयसा

गुरुदेव, देव, देवाधि देव, देवों के देव हैं आप प्रभू।
राम, कृष्ण, विष्णु, ब्रह्मा स्वरूप, हैं महादेव अवतार प्रभू।
रामायण, गीता, पुराण, उपनिषद, वेदों के सम्यक सार प्रभू।
जिसने पद रज तिलक लिया शत कोटि कोटि कल्याण प्रभू।
हैं परमब्रह्म अवतार प्रभू, हैं परमब्रह्म अवतार प्रभू।

– आपका शिष्य, ओमवीर सिँह
ग्राम गुलावठी खुर्द, जारचा, दादरी

भारतीय लोक साहित्य में अपनी विशिष्ट काव्य शैली के लिए प्रसिद्ध पूज्य गुरुदेव वैद्यभूषण पं० गुरशरणदास "वैष्णव" जी द्वारा रचित काव्य रचनाओं में ऐतिहासिक तथ्य, आध्यात्मिक चिन्तन, पाखण्ड पर प्रहार, विषमताओं पर सहजता से पार पाने के आदर्श परामर्श, वेदों शास्त्रों के गूढ रहस्यों का अनुवाद का दर्शन होता है। कवि शिरोमणि द्वारा रचित कवित्त, छन्द, सवैया, मुक्तक, रागिनी आदि विधाऐं महज मनोरञ्जन का साधन न होकर जन सामान्य के लिए प्रेरणा स्रोत बन गई, अपने श्रम के मीठे फलों को दूसरे की झोली में डालने का स्वभाव किसी सारस्वत व्यक्तित्व, देवात्मा, प्रज्ञान पुरुष का ही हो सकता है, मेरा सौभाग्य रहा मुझे कुछ काल गुरु सानिध्य में व्यतीत करने का अवसर मिला तो कह सकता हूँ–

महान आत्मा जग में आतीं, धर्म ध्वजा फहरावण को।
ज्ञानयोग महायोग प्रेम की, जग में अलख जगावण को॥

इस रागणी काव्य खण्ड में गायक, श्रोता, पाठक सभी को गौरवमयी भारतीय संस्कृति के दर्शन के साथ पढ़ सुनकर दिव्य अनुभूति होगी। आदरणीय भाई श्री महेन्द्र पाल शर्मा जी के विशेष प्रयासों व श्री रामचरितमानस मण्डल के अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप लोक कल्याण भावना परिलक्षित ये रागणी महाकाव्य उपलब्ध हो सका सो बधाई के पात्र हैं– उस महान विभूति को नमन करते हुए मेरी शुभकामनाएँ

– महेश बैसोया, निठोरा

परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री गुरशरणदास जी का साहित्य अध्यात्मिक, भक्ति एवं मार्गदर्शक राष्ट्र प्रेम से लिप्त हैं । उनकी रचनाओं में शब्दों की क्लिष्टता एवं गूढ़ता अद्वितीय है । "सोई जानहु जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हहि होई जाई ॥" ये चौपाई श्री गुरुदेव की कविताओं से सिद्ध होती है । जो उनकी रचनाओं को व उनके भाव को समझ गया, वह वेद शास्त्रों के ज्ञान को पा गया । उनका व्यक्तित्व सरल हृदय परम वैरागी अहङ्कार शून्य परमात्मा के परम भक्त का था । मेरा उनके चरणों में शत शत नमन

– सेवाराम पिप्पल, पोथ

श्री गुरशरणदास जी की काव्य विचार धारा जीवन के गूढ़तम आध्यात्मिक रहस्यों का बहुत सरलता से व्यक्ति के मानस पटल पर प्रेरक प्रभाव सक्रिय करने में पूर्ण सफल है ।

आपकी लेखन शैली ढोंग, प्रदर्शन, बनावटी, ठगी पर प्रहारात्मक स्पष्ट, सरल तथा मर्यादित, सुसंस्कारित, शास्त्रसम्मत सैद्धान्तिक, एवं भक्ति भाव भावित है ।

आपके साहित्य से मानव समाज को सभी प्रकार के भटकाव से बचाकर जीवन के परम लक्ष्य तक पहुँचने का पूर्ण मार्गदर्शन एवं आचरणीय व्यवहारिक सम्बल प्राप्तव्य है ।

इस कलिकाल के कलुषित वातावरण में आपकी लेखनी मलावरोध को हटाकर जीवन लक्ष्य को प्रत्यक्ष लक्षित कराने वाली है ।

आपकी लेखनी वेद पुराण उपनिषद् आदि के गूढ़ तत्वों के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए भी सङ्गीत की राग रागिनी की शैली में बन्धित है । आपकी इस विलक्षण कला से शास्त्रीय सङ्गीत भी जीवन्त है । आप की रचनाओं में महाराणा प्रताप, सुदामा चरित एवं उद्धव जी एवं नारद जी जैसे परम ज्ञानियों का गाँव की गँवारिन गोपियों के बीच का संवाद कवित्व की उड़ान की पराकाष्ठा छू रही है ।

हम सभी भावुक श्रद्धालु तो आपके साहित्य को गाते हुए झूम जाते हैं, आपके काव्य सागर की एक अनमोल मोती "हम तो वाहू के दीवाने जेहि पै राम नाम को रस है" ने हमारे जीवन को असीम भाव आनन्द रस से लबालब भर रखा है ।

जय जय सीताराम

कृतज्ञ,
राजीव तिवारी
रामचरितमानस मण्डल
ग्रेटर नोएडा

अनुक्रमणिका

श्रवण कुमार

उठा लिया था घडा हाथ २

पृथ्वीराज

सुख सौरभ के दिन बीते ४

ताराचन्द

ताराचन्द सेठ दिल्ली में दूर–दूर ६

भर्तृहरि

नारी की सुन्दरता साधो शत ८
भूप भर्तृहरि चक्रव्रति उज्जैन राजधानी ९
आभूषणों से पिँगला को सजाते १०
नारि स्वतन्त्र भली नहीं होती १२
सुन विक्रम की बात भर्तृहरि १४
सच बोलना बा मुश्किल सुनना १५
पिँगला की तौहीन सुनी तो १६
जय वन्दे मातरम् जय वन्दे १७
राजा का आदेश कठिन सुन १८
नैमिषारन की शोभा सुखद सुहानी २०
आँसू ढले कपोलन पर कोई २२
भारत सम्राट बनेगा तू दिनकर २३
चौबीस वर्ण छन्द गायत्री मन्त्र २५
सन्तों का कर्त्तव्य राष्ट्र का २८
सन्त क्षुब्ध हो गये भूप ३०
किया सन्त दरश, हुआ अमित ३२
अमर होण के लिए अमर ३४
पिङ्गला सी सुन्दरी जहान में ३५
पिँगला हो गई मगन अमरफल ३६
जो सचमुच गुण इस फल ३७

गणिका के हाथों में अमरफल ३८
भर्तृहरि ने फल खाना चाह्या ३९
बोली हाथ जोड़ महाराणी गङ्गा ४०
चार वेद छः शास्त्र सकल ४१
पूछो ना मुझसे सवाल बाबा, ... ४२

महाभारत

महाभारत है रक्त गोत इतिहास ४४
पाँच गन्धरव अन्तरिक्ष में रखवाले ४५
हुई श्यौरत श्यामा रँग औरत ४६
फूल है कली है या ४७
धर्मराज गिन दाव जुए के ४८
करके भेष जनाना बड़गा उतरा ४९
आसन जमा बैठगी होंनी कीचक ५०
धर जान हथेली पै दोनों ५१
चले थे योद्धा लड़ने को, ... ५२
पाँच पाण्डव छटी द्रौपदी रटते ५३
पुनः सुमर गुरुदेव को शारद ५४
कर दुर्योधन ध्यान भला, कीचक ५४
सुने गुरु के वचन, कर्ण ५५
अर्जुन का रथवान सै, बलवान ५६
उ०- श्री गुरु महाराज, बचा ५७
अर्जुन की राणी ने मन्त्र ५८
पीठ ठोक पुचकारे घोड़े माजुम ५९
लिया रण का बाणा पहर ६०
कह दो तो इसको तारूँ ६१
कुन्ती का सुत अर्जुन हूँ ६२
सुन ध्यान से सुनाऊँ, आज ६३
एक रोज जुए का दाव ६४
शेर गफलत में पड़ा आज ६५
आज तो लजाते मेरे दादा, ... ६६
आज सुनो सब धर के ६७

जब कोपा अर्जुन रण में, ... ६८
सभासद बोलो, मुशाहिद बोलो ॥मेरे ६९
शरमाये क्यूँ बैठे हो, शेर ७०
माँ कर दे आरता हीज ७१

महाभारत अभिमन्यु विवाह

अलख, अजन्मा, अजित, वर, अतनु, ... ७३
सत्य क्या असत्य क्या है, ... ७३
बड़े खुशी की बात पिया ७४
आ गये श्याम सुना राणी ७५
धीरज धर दुख में । ७५
वो दासी मैं पीहर में ७६
पागल हुई बावली कैसी प्यार ७७
ब्याह की सुन के बात ७८
पापियों का घेरा गिरग्या, सूर्य ७९
लेता जा इतिहास गैल सुत ८०

महाभारत सन्धि प्रस्ताव

कुछ मित्र भूप कुछ सम्बन्धी ८२
आपदा युधिष्ठिर की सुन भूपालों ८३
कहने लगे नरेश द्रुपद बिन ८४
तब बोले भगवान कृष्ण कुछ ८५
वासुदेव आ रहे सुलह का ८६
सन्धि का प्रस्ताव लिए भगवान ८७
हथिनापुर का राजमार्ग जो जुड़ा ८८
सन्धि प्रस्ताव दूत बन सतचिदानन्द ८९
सभा कक्ष तक मारग पर ९०
गरुड़ मँजीरा जचा करै जब ९१
अपने दिल का हाल सँभाल ९२
सर हाथ धार कै बोल ९३
यदुनन्दन की करके आरती, फिर ९४
श्री कृष्ण की सुनी द्रोपदी ९६

गोपीचन्दभाग–१

गुरु गोविन्द की वन्दना करूँ ९८
दुर्ग करेगी पूरी भक्त की ९९
गोपीचन्द ते माँ बोली सुत १००
हाथ जोड़ मैना माँ ते १०१
जोगियों का चेला बण जा १०२
आज्ञा लेकर महाराणी से गोपीचन्द १०३
जोगीराज मेरी राम राम ले १०५
जोग भोग में अन्तर राजन १०६
सुत की शान पिया का १०७
साँझी गई सुबह हई तरसते, ... १०८
बीती चौंसठ घड़ी भवन, माँ १०९
महारानी बेचैन भगी जण धरती ११०
कर्ण छेदनी कर्द उठा ली १११
खड़े हो गये गोरखनाथ हा ११२

गोपीचन्दभाग–२

पात पात हर डाल में ११४
आसमान तक गूँज उठा माँ ११५
मर्म भेदनी माँ की वाणी ११६
ममता तुम्हारी है भ्रमता जुगती ११७
गोपीचन्द फन्द कट ऊपर ऊठ ११८
मैं तेरा लाल हूँ, ख्वाब ११९
धौलागढ़ की महाराणी गुरु गोरख ११९
महाराणी, हाँ बाबा, ज्ञान के १२०
महारानी, ओ बाबा, बाबा जो १२१
माँ ने पूत फकीर किया १२२
लौटी पूत फकीर बणा के १२३
माँ बोल दिल का माली १२४
जोगिन बनेगी तू महलों में १२५
सुन गोपीचन्द के बोल, गया १२६
गोपीचन्द की झोली में रही १२७

चला भीख माँगने ठा गोपीचन्द १२८
कौली भर चन्दरावल रोई मेरे १२९

नर सुल्तान

हो गई उमर किशोर भूप १३१
सुन सुल्तान भूप के हित १३२
आधी ढ़ली पहर के तड़कै १३३
देख तेरा हाल मेरा दिल १३४
परमेश्वर ने भेज दिया मुझको १३५
हाथ जोड़ कै अरज करूँ १३६
पुरुष सिँह हो गया क्षुब्ध १३७
आशीर्वाद विजय का ले लिया १३८
कच्चे नरियल पके बेर फल १३९
वीरों कैसा गात शकल कुछ १४०
जानी और सुल्तान, बीच में १४१
सुल्तान चल दिया, प्रण मन १४२
हाथ जोड़ माली बोला एक १४३
जब भोजन पाने बैठ गया १४४
शादी का प्रस्ताव ना मानूँ १४५
कर्मठ नर की कर्म करण १४६

अन्तराम सन्तराम

गोप वस्त्र में ढकी मनोहर १४८
राखी ने ज्वानों की तरफ १४९
घमासान सङ्ग्राम था बाजी जान १५०
चित में चित की अगनी १५१
विनयशील वा अदब बन्दगी, नियम १५२
दिन आठ बीतगे फिर तलवार १५३
दिन का भोजन नींद रात १५४
सुत गया था काल के १५५
मोरनी सी रोती रह गई १५६
लगी फैज की सभा शिशु १५७
कुञ्जल पड़ी हुई बरबाद, रे १५८

कुञ्जल फिर खत लिखन लगी १६०
फँस गया अब इतिहास कहर १६१
जब सङ्कट घिरा सुकण्ठ बचाकर १६२
पढ़ते हि खत का हाल १६३

सरवर नीर

आ गये हैं द्वारे तेरा १६५
मेजों पर तोते बोले और १६६
भटियारी के घर महारानी, बर्तन १६७
भटियारी को शीश नवा कै १६८
राजा ने देखे रोते राजकुमार १६९
काम, क्रोध मद लोभ त्याग १७०
दरिया के दोनों किनारों पै १७१
जब पड़ग्या ज्हाज भँवर में, ... १७२
सौदागर का जहाज छूटगा चला १७३
सौदागर की रपट लिखा ली १७४
अजी म्हारा कोई अपराध नहीं १७५

रूप बसन्त

आखर अर्थ अलङ्कृत ज्ञान, सारे १७७
चिड़िया एक चिड़े नै ब्याहली, ... १७८
रूप कँवर चल दिया उछलता १७९
पाप के धोरे पुण्य पहुँचग्या १८०
भज ले री शिव मौसी १८१
फँसी एक उलझन में, फिकर १८२
वा घबराई बड़ी कुफर लुगाई, ... १८३
राजा का दिल सहम गया १८४
छोड़ कै हम थारी नगरी १८५
जो भाग्य में लिखा है १८६
आज रहम करने सै जान १८७
छुप गये तारे, आँधी उठी १८८
बीहड़ बन जग मग होगा १८९
ठाके गोदी में ल्हाश चला १९०

मैं पूँछता हूँ बाबा धोखा १९१
मेरा शेर बावला हुआ धर्म १९२
फैंक दिया ल्हाश को तरङ्ग १९३
एक बन्द कली फूलों से १९४
मैं प्यासी मेरे होंठ सूख १९५
नफरत क्यूँ करते हो आज १९६
मानजा कहे की रूप रे १९७
ल्हाश देख कै रूप कँवर १९८

राणा साँगा

भारत की नरसिंह प्रसूजा नमन २००
स्वार्थी अनर्थी व्यर्थी रास्ता जा २०१
जब निगाह समय की कठिन २०२
गृह कलह का समाचार महिपाल २०३
था घोर निबिड़तम जङ्गल खतराये २०४
हिन्द मुकुट मेवाड़ मही का २०५
छिड़ गया रे जङ्ग, बड़ा २०६
मिला करमचन्द से साँगा,जैसे सोना २०७
यारी का पथ तार पातला, ... २०८
व्याकुल भरी कहानी मेरी और २०९
सिँहासन पै बैठ गया था २१०
अपना निश्चय बहुत पुराना, खत २११
लेकर भारी कटक चला सङ्ग्राम २१२
महाराणा जङ्ग में जमे, अङ्ग २१३
वेदना थी भारी घायल साँगा २१४

हकीकतराय

आज कुफर की घटा उठी २१६
वरदान लाई माँ तू सुत २१७
आज वरदान तू लाई है २१७
हे ईश्वर तुम दीनबन्धु तो २१८
खुदा दोस्त कर दर्ज रहम २१८
दे वरदान बावली क्यूँ भूल २२०

हाकिम हुकूमत की मेरी सलामी, ... २२१
हकीकत मरदाने कहूँ जो तू २२२
यमराज फरद पै तू लिख २२३
प्राण पति तू मुसलिम बन २२४
औलाद वाले रो रहे बेचैन २२५
काजी बेईमान मान जा हमसे २२६
मुँह किसका रहा देख खड़ा २२७
जोर गरीबी ते घट गया २२८
गङ्गा जी के घाट पहुँचगे २२९

अमरसिँह राठौर

सत्य सिन्धु कृपा भवन, जगपति २३१
गुरु गोविँद दोनों सुमर, लिखूँ २३२
पानी पी सन्तोष मिला और २३४
यार सुनो सच बात मुझे २३५
करी कौल करार यों खुश २३५
आसमान पै चन्दा बैठा तेरी २३६
रानी और राठौर का यों २३७
अमरसिँह है क्षत्री जात जुर्माने २३८
नहीं लगती खलक शाह की २३९
सुनके शहँशाह की बात सलावत, ... २३९
लिये घेर कानून से शहँशाह २४०
यमराज फरद पै तू लिख २४२
अमरसिँह की बात से अर्जुन २४३
दहल गया दिल बादशाह का २४५
बादशाह कहने लगे दिया नीच २४६
होता है जो होने वाला २४७
रानी फिर कहने लगी तू २४८
आदत है इन्सान की दाता २४९
आप चलो या ना चलो २५०
खञ्जर ते नर की होड़ २५१
शाहजहाँ कहने लगे सुनो बात २५२

महाराणाप्रताप

असत्यता, अकर्मता, अशिष्टता, विलासिता, अदूरता २५४
सर ना झुकैं कभी कर २५४
भारत देश गुलाम हुआ, क्यूँ २५५
दारू ने तकदीर के दिल २५६
डूब जा सितारा बदले वक्त २५६
मुगल और रजपूतों में शुरु २५७
सीना खुला मार भाला तुम २५८
वीरता भरी थी सचमुच राणा २५९
महाराणा लौट जा सङ्कट को २६०
महाराणा जब लौट के आया, ... २६१
उड़ जा रे ओ पञ्छी, ... २६२
आधी रात घूम रही रानी २६४
जो तनिक हवा में बाग २६५
दिल्ली का दरबार भरा सच २६६
दाँत के नीचे कलम दाब २६७
भारती शिशौदिया की ऐसी रशम २६८
आदर्श झाँकी राम की गीता २६८
जमगी चेहरे पै धूल णाग २७०
विपदा के दरिया का दुर्गम २७१
भाई हिन्दुस्तान तुम्हारा ।.. २७२
बादशाह का हुक्म था तुम २७३
भाई बहन जोट खुली प्रेम २७४
बालधौ पड़ैगो थामणो, बोलदे कड़ै २७५
हलदीघाटी के सूरमा तेरे दरश २७६
धर दई चिता पै ल्हाश २७७
कागज के कर दिये खण्ड २७८
धीरवान सन्तोष पुरुष को मोह २७९
आदाबऽर्ज जनाब हैसियत वाकई जौहर २८०
खत मिला आपका सुन लो २८१
नाड़ झुका कै बैठगी, लुटा २८२
दौलत बैठ बताण लगी जो २८३

अरावली आरण्य भयङ्कर अन्तराल गहरी २८४
पढ़े ना जाते हरफ नजर २८५
खुर कुण्डल में खून खुश्क २८६
चला चेतना पत्र वहाँ यहाँ २८७
गलानी में राणा गल रहे २८८
भामा के घोड़े ने घुटने २९०
सुन महाराणा तू है इतिहास २९१
शङ्कर प्रलय स्वरूप सुमर कै २९२
महाराणा अविराम रात दिन मग २९३
राणा को दुख देगा, कौआ २९४

श्रवण कुमार

कवि उवाच

तर्जः

उठा लिया था घडा हाथ में, मात पिता का दुक्ख गात में,
बहे नैन ते नीर सरवण रोवता चला ॥टेक॥
म्हारी शान काल ने घेरी, वन में काँटे और बड बेरी,
घोर अँधेरी विकट रात में, चीते शेर रहे गर्ज रात में,
कहीं उल्लुन की भीड, सरवण रोवता चला ॥१॥
दुख में गात मेरा धडकै सै, उत मात पिता दोनों तडफै सैं,
बिजली तडकै बियाबान में, बाट मिलै ना बणी बिरान में,
बादल थे गम्भीर, सरवण रोवता चला ॥२॥
नार ने बहुत किया था ढेट, बना दिये एक हाँडी दो पेट,
दिये चढा हम तीनों भैंट में, शान मिला दी धूल रेत में
ओ पापण बेपीर,सरवण रोवता चला ॥३॥
नार ने किया बदी का काम, वह तो लिकडी नमक हराम,
नत्थूराम आपस की फूट ने, गुरशरणदास चुगली की झूँट ने,
फूँक्या म्हारा शरीर, सरवण रोवता चला ॥४॥

पृथ्वीराज

कवि उवाच

तर्ज़ः

सुख सौरभ के दिन बीते आ गया समय गर्दिश का ।
राज लोभ में कलह बढी बढ गया वेग रञ्जिश का ॥टेक॥
सङ्ग्राम सिँह पृथिराज और जयमल थे तीन कुल भाई ।
भट बाँके रणनीति निपुण ऐसी सफल कीर्ति छाई ॥
होनहार ना टली लोभ में सत्ता लेनी चाही ।
पृथीराज स्वारथी दम्भ से कठिन कुटिलता आई ॥
दिन-दिन बढने लगा आपसी फूट वैर महाविष का ॥१॥
देवी मन्दिर में पहुँचे निर्णायक हुआ पुजारी ।
न्याय पक्ष कह दिया विप्र सङ्ग्राम सिँह अधिकारी ॥
निर्णय किया अमान्य पृथ्वीराज भडक गया भारी ।
खींच म्यान से लई तेग साँगा की आँख में मारी ॥
युद्ध हुआ आरम्भ फूट गया घट गुप्ती साजिश का ॥२॥
रणभूमि सा बना दिया था देवी के प्राङ्गण को ।
जयमल पृथ्वीराज ने घेरा था साँगा बलवन को ॥
देख मौत को निकट छोड रण किया पलायन वन को ।
छोड गया शासन के लिये उस जालिम आतम्हन को ॥
छूट गया घर बार नगर तक पता नहीं था जिसका ॥३॥
सङ्ग्राम सिँह भूखा प्यासा बीहड वन में भटकै था ।
साँगा का जीवित रहना उसे काँटा सा खटकै था ॥
मारण खातिर फिरै ढूँढता दाँतों नै कटकै था ।
उधर वीर साँगा सङ्कट के फन्दे में लटकै था ॥
गुरशरणदास शठ वृत्ति अपनी दोष बतावे किसका ॥४॥

ताराचन्द

कवि उवाच

तर्जः

ताराचन्द सेठ दिल्ली में दूर–दूर साहूकारा था ।
धन का आरोपार नहीं कुछ जगव्यापी बन्जारा था ॥टेक॥
कई हजार मुनीम सेठ के लाखों बहीखाते थे ।
दूर देश के व्यापारी भी कर्ज माँगने आते थे ॥
धर्मक्षेत्र खुल रहे हजारों कहीं मन्दिर बनवाते थे ।
होते थे सतसङ्ग हमेशा वहाँ राम कीर्तन गाते थे ॥
आते थे भूपाल वहाँ उनका वैभव न्यारा था ॥१॥
समय बदलते देर लगी ना फेर विपत के दिन आगे ।
आग लगी कहीं चोर फिरे और कहीं मुनीम रकम खागे ॥
चमगादड ब्या गये महल में छत नागा लटकण लागे ।
दोस्त सभी दुश्मन बणगे और प्रेम के टूट लिये धागे ॥
इब तै पहले दुख देखा ना सुखमय जीवन सारा था ॥२॥
खच्चर बैल ऊँट मरगे सब पूँजी गुम गई घाटे में ।
भोजन तक ना हुआ मुहस्सर नमक मिला ना आटे में ॥
कशमीरी मलमल पहरै थे इब रहगे पट फाटे में ।
जो फूलों पर चला करै थे वो बाट खोज रहे काँटे में ॥
ये केतू के चङ्गुल में गहता हुआ सितारा था ॥३॥
चाँदी के चमचों के टुकडे इब हो गये पराये थे ।
निन्दक रिश्तेदार हुए भईयों ने मुँह दुबकाये थे ॥
भूख बुरी दुनिया में न्यूँ ताराचँद घबराये थे ।
गुरशरण कह न्यूँ कङ्गाली ने अपने रूप दिखाये थे ॥
हरि इच्छा बलवान जगत में धन कर गया किनारा था ॥४॥

भर्तृहरि

कवि उवाच

तर्जः

नारी की सुन्दरता साधो शत प्रतिशत हानीकर है ।
धर्म धैर्य मर्यादा की अति घातक आडम्बर है ॥टेक॥
जग जननी सीता का हरण जिस हेतु हुआ प्रसिद्ध कथा ।
कैकेयी की सुन्दरता ने दीन्ही दशरथ को घोर व्यथा ॥
नल दमयन्ती की विपदा इतिहास पढो तो चले पता ।
अर्जुन वधू द्रोपदी सुन्दर टूट गई मर्याद लता ॥
इन्द्राणी की सुन्दरता ने किया नहुष को विषधर है ॥१॥
देव अपसरा पर रीझे थे विश्वामित्र ब्रह्मज्ञानी ।
दिया सुकन्या जन्म त्याग माँ भगी धर्म की कर हानी ॥
अति सुन्दर नारि अहल्या थी इन्दर ने अनीती जा ठानी ।
सुन्दरता से छिका नहीं प्रसिद्ध ययाति की कहानी ॥
भील की कन्या सुन्दर थी मर्याद भङ्ग पाराशर है ॥२॥
सुन्दरता पर रीझ शान्तनु पुत्रों को बलिदान किया ।
हुआ नहीं सन्तोष अवस्था वृद्ध हुई नहीं ध्यान किया ॥
भील सुता से ब्याह पुनः बेढङ्गी शर्तें मान किया ।
दो पुत्रों को जन्म दिलाकर स्वर्ग हेतु प्रस्थान किया ॥
निष्कर्ष यह इतिहासों का नारी सौन्दर्य पाप का घर है ॥३॥
आज लिये पैमाना फिरते लडकी श्वसर परखते हैं ।
सद्गुण जाओ भाड वह सब सुन्दर चमडी लखते हैं ॥
इसी तथ्य पर आधारित हम कथा भर्तृहरि रखते हैं ।
सावधान हो सुनो भूप किस तरह अमरफल चखते हैं ॥
गुरशरण छोड चतुराई को चतुरों से चतुर परमेश्वर है ॥४॥

भर्तृहरि परिचय

तर्ज

भूप भर्तृहरि चक्रव्रति उज्जैन राजधानी थी ।
मधुर मनोज मुकुन्द चन्द सी वधु पिँगला रानी थी ॥टेक॥
विजय प्रतीक पुञ्ज मति नागर श्रेष्ठ तत्व ज्ञानी थे ।
न्यायकारी दया शान्तचित नृप अवढरदानी थे ॥
सुख सम्पति यश वैभव में वो इन्दर की सानी थे ।
देव गन्धर्व नर श्रेष्ठों में गिनती के प्राणी थे ॥
भुजबल ख्याति दया दानता दुनिया ने जाणी थी ॥१॥
पिँगला राणी सुघड सुहानी इन्द्राणी अनुहारी ।
मगध देश के सोमदत्त की थी वो राजदुलारी ॥
फूल सी सुथरी झाग सी कोमल भाल तेज था भारी ।
मुक्त दन्त मुस्कान मनोहर नृप को थी घणी प्यारी ॥
छवी पुञ्ज चित चोर थी चितवन कलरव शारद वाणी थी ॥२॥
नार प्रेम में डूब गये नृप पहले ही गोते में ।
कसे जाल से निकल सकै ऐसी ना शक्ति तोते में ॥
धोबी के मौहतैत गधा ज्यों दुखी भार ढोते में ।
उ तरह भूपाल मगन दुख स्वयम् बीज बोते में ॥
बिसर गया सब ज्ञान लाभ के धोखे में हाणी थी ॥३॥
गुरशरणदास कोई बच ना सका इस जहर के काटे तै ।
नारी से व्यवहार समर्पण अवश दबै घाटे तै ॥
नारद से हो गये कलङ्कित धुँवा धूल चाटे तै ।
स्वास्थ्य लाभ सम्भव कोन्या जब नमक अधिक आटे तै ॥
पिँगला का बण गया दास यह नृप की नादानी थी ॥४॥

सूक्ति– विहाय कामान्यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृह ।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधि गच्छति ॥

अर्थात– जिसका मन संसार के सर्व पदार्थों में मोह से विरक्त हो जाये वही मनुष्य वास्तविक सद्शान्ति को पा सकता है।

भर्तृहरि महाराज वेद वेदाङ्गों के ज्ञाता होते हुए भी काम राक्षस की लीला जाल को समझ नहीं सके। सौन्दर्य एवं छल चपलता की चातुरी के मद से चूर होकर राजा के कर्तव्यों को ही भूल बैठते हैं । पिँगला के प्रति राजा का समर्पण इस गईत के माध्यम से–

कवि उवाच

तर्जः

आभूषणों से पिँगला को सजाते रहे ।
समय को विलासिता में गँवाते रहे ॥टेक॥
हीरे मोतियों की माल कण्ठ में पहिरायें कभी ।
रेशमी पटो का रङ्ग देह से मिलाये कभी ॥
व्यञ्जनों का सुथरा भोजन हाथ से खिलाये कभी ।
आप रस्सी खींचै उसको झूले पै झुलायें कभी ॥
कभी रूठ जाये तो मनाते रहे ॥१॥
गाँव में नगर में घर में गलियों के छोर से ।
राव की प्रमादी चर्चा चली चहुँ ओर से ॥
पिँगला ने नृप को बाँधा ऐसी प्रेम डोर से ।
घायल बनाया उसको नयनों की कोर से ॥
मोर मोरनी की तरह रिझाते रहे ॥२॥
फैलगी अराजकता उज्जैन देश सारे में ।
न्याय बहरा बनकै बैठा निबल के पुकारे में ॥
रिश्वती निकम्मे रक्षक राजघर के द्वारे में ।
राव की फुरसत दिन भर राणी के जुहारे में ॥
इसारे में अपने को नचाते रहे ॥३॥
साधुवों ने देखा भारी अनर्थ हो रहा है ।
भर्तृहरि का जीवन सारा व्यर्थ हो रहा है ॥
गुरशरणदास निष्फल अर्थ हो रहा है ।
धर्म देश वासियों का गर्त हो रहा है ॥
न्याय सो रहा है साधो जगाते रहे ॥४॥

सूक्ति– गुरं सन्तोष येद् भक्त्या विद्या विनय तत्परम् ।
प्रस्तोकाय ददौ पायुः स्तुत्या तुष्टोऽस्त्र मण्डलम् ॥

अर्थात– मानव का कर्तव्य है कि विद्या विनय से सम्पन्न अपने गुरुदेव को भक्ति श्रद्धा पूर्वक सन्तुष्ट करे । राजा प्रस्तोक ने अपने गुरु पाऊ ऋषि को सन्तुष्ट किया तो गुरु ने भी उसे दिव्य अस्त्र मण्डल प्रदान किया ।

यथा राजा तथा प्रजा वाली कहावत उज्जैन में चरितार्थ हो रही थी । साधु महात्मा अपने प्रवचनों में प्रशासन की कठोर शब्दों में निन्दा करने लगे थे ।

भर्तृहरि जी के छोटे भाई जो उस समय प्रधान मन्त्री थे । महात्मा लोग उनको यानि प्रधानमन्त्री को बार बार ज्ञापन पत्र दे रहे थे । तब प्रधानमन्त्री श्री विक्रमदेव ने गुप्त रूप से गुप्तचर विभाग से पिँगला महारानी के कुटिल आचरण की जानकारी प्राप्त की । एक दिन विक्रमदेव साहस करके भर्तृहरि से कहने लगे–

विक्रम उवाच

तर्जः

नारि स्वतन्त्र भली नहीं होती वंश दाग लग जाया करै ।
अशुभ आचरण मुखर मोहनी दाव लगै ठग जाया करै ॥टेक॥
नारी की उपमा समता बहुमूल्य रतन से होती है ।
इसीलिए इसकी रक्षा नृप बहुत यतन से होती है ॥
नारी की मति भङ्ग क्षणेक में सँग दुर्जन से होती है ।
निरालम्ब को खतरा रक्षा आलम्बन से होती है ॥
यश वैभव सुख भवन त्याग दे कामुकता जग जाया करै ॥१॥
अबला जब प्रबला होजा पथ भटक अमित उत्साह करै ।
त्याग दे कोमल मारग को स्वीकार कटीला राह करै ॥
उतरी लाज आचरणहीना कुफल असङ्गत चाह करै ।
पछताये के बणै वक्त के चुके मानसिक दाह करै ॥
द्वार खुले सोने के नीड से उड पञ्छी भग जाया करै ॥२॥
नारी का विश्वास कभी करिये ना जरूरत से ज्यादा ।
कहते हैं अर्धंगी तो अधिकार भी इसका है आधा ॥
दशरथ से नृप पछिताये हैं आगामी करके वादा ।
बेरा ना किस अवसर पर ये कर बैठे दुर्घट रादा ॥
यतन किये भी छुटता ना मन असुर रङ्ग रँग जाया करै ॥३॥
हाथ जोड कर विनय करूँ बुरा मानो ना सच वाणी का ।
राजव्यवस्था दृढ हेतु तजो मोह पिङ्गला राणी का ॥
मोह में मनुष भूल जाता है राह लाभ और हाणी का ।
कीचड का कीडा क्या जाणै वैभव गङ्गा के पाणी का ॥
गुरशरणदास नारी के पतन से धर्म नींव डग जाया करै ॥४॥

सूक्ति– हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापि हितं मुखम्
शु यजु ४० १९

अर्थात– उस ब्रह्म का मुख सुनहले ज्योति पिण्ड से ढका हुआ है । अभिप्राय यह है कि आनन्दमूल परमेश्वर का स्वरूप जगत की सुन्दरता से ढका हुआ है, अर्थात ईश्वर प्राप्ति में भौतिक सुन्दरता बाधक है ।

विक्रम देव के भाषण को सुनकर राजा भर्तृहरि को भारी आश्चर्य हुआ, भर्तृहरि ने ऐसा कभी नहीं सोचा था कि तेरी राजनीतियों की निन्दा भी हो सकती है । पिङ्गला महाराणी का नाम सुनकर तो उन्हें ऐसा लगा मानो उनके माथे पर पत्थर की घातक चोट लग गई हो ।

राजा को ऐसा भी लगा कि विक्रम राणी के सौन्दर्य और उसके पातिव्रत धर्म से ईर्ष्या करने लग गया है । इसलिये यह मिथ्या गल्प घडकर लाया है । कुछ कठोर दृष्टि करके विक्रम से इस प्रकार प्रष्न करने लग गये–

भर्तृहरि उवाच

तर्जः

सुन विक्रम की बात भर्तृहरि विस्मित त्यौर लखाया ।
क्या कह रहे वर भ्रात कहो फिर भाव समझ नहीं पाया ॥टेक॥
मधुर किया व्याख्यान रहस कुछ अवश भरा वाणी में ।
क्या कहीं हुई अनीती देखी मेरी रजधानी में ॥
कहो खोल कर भेद बात स्पष्ट नहीं जानी मैं ।
छिपी बात का लाभ बदल जाया करता हाणी में ॥
भारी संशय मुझे कि तू क्यों कहते में घबराया ॥१॥
मुख मालिन्य देख तेरा मेरे हृदय में खटकै सै ।
भय अथवा सङ्कोच शब्द जो तालू में अटकै सै ॥
रुक रुक बोले वाक्य थूक तू बार बार सटकै सै ।
नई बात रचने के लिये तू गर्दन को झटकै सै ॥
बिन सन्दर्भ प्रसङ्ग बिना नारी का जिकर चलाया ॥२॥
नारी निपट अयोग्य नहीं स्तुत्य वेद में है ।
ऊँच नीच अवधूत धूर्त बुद्धि के भेद में है ॥
इतना मैं समझूँ हूँ मौत नौका के छेद में है ।
विधि का ढङ्ग विरङ्ग तेरा मन वृथा खेद में है ॥
कहो साक्ष के सहित दुखद सन्देश कहाँ से लाया ॥३॥
सुन विक्रम शठ लोग अकारण निन्दा किया करैं ।
उनका है दुर्भाग्य नर्क में अपना ठिया करैं ॥
कुछ पीते मधुशाला में कुछ दम्भ की पिया करैं ।
अचरज क्या मल का कीडा कीचड में हि जिया करै ॥
गुरशरणदास उसे वही भला जिसे जो मन में भाया है ॥४॥

सूक्ति– भोग की लिप्सा के विचार से देवताओं के अधिराज इन्द्र तथा भूतल के कुत्ते में कोई अन्तर नहीं होता। इसलिये भोग की आसक्ति को मन से निकाल फेंकिये तभी ब्रह्मानन्द की उपलब्धि हो सकती है।

वार्ता– भूपाल भर्तृहरि ने कहा या तो तुम हमसे और राणी से ईर्ष्या करते हो इसलिये झूँठी कोई कहानी रचकर लाये हो। अथवा अन्य कोई शठ स्वभाव का व्यक्ति हम तुम सबसे जलन व द्वेष रखता है। वह निन्दक निन्दा के ब्याज से हम दोनों में फूट डालना चाहता है। आप उस साक्ष को हमें बताओ जहाँ से यह सन्देश मिला है। तब विक्रम अति विनम्र भाव से यों कहने लगा–

विक्रम उवाच

तर्ज़ः

सच बोलना बा मुश्किल सुनना कठिन सच बात का ।
बुरा मानिये ना राजन इस दास की हिदायत का ॥टेक॥
धैर्य धर्म का साथी, उतावलपन आतमघाती ।
मोह से बुद्धि चकराती, ऋचा वेदों की बतलाती ॥
वो निर्णय ना कर पाती किसी आपदा सङ्घात का ॥१॥
आप तो वेदों के ज्ञाता, दयालु सन्त दान दाता ।
आप का नाम गिना जाता, जहाँ सद्सन्तों की गाथा ॥
तुम ज्ञान के प्रदाता, ज्यों सूर्य परभात का ॥२॥
हमारे घर पिंगला राणी, रही कर वैभव की हाणी ।
भयङ्कर है इसकी कहाणी, गुप्त भेदज्ञों ने जाणी ॥
कथन ना कर सकती वाणी इस नारी के उत्पात का ॥३॥
कह गुरशरण कृपा कीजे, शीघ्र दुष्टा को त्याग दीजे ।
कामरी भार बढे भीजे, मोह में मत माहुर पीजे ॥
मत पैर काट लीजे, हथियार अपने हाथ का ॥४॥

सूक्ति– आत्मानं चेद् विजानीयात् परं ज्ञान द्युताशयः ।
किमिच्छन् कस्य वा हेतोर्देहं पुष्णाति लम्पटः ॥

अर्थात– आत्मा के द्वारा जिसकी सारी वासनाऐं निर्मूल हो गई हैं और जिसने अपने आत्मा को ब्रह्म स्वरूप जान लिया है उसके लिए भोगों की तृप्ति हेतु इन्द्रिय लोलुप होकर शरीर पोषण का कोई कारण शेष नहीं रहता ।

वार्ता– विक्रम के मुख से प्राण प्रिया सुन्दरता की प्रतिमूर्ति महारानी पिङ्गला के चारित्रिक लाञ्छन को सुनकर राजा का क्रोध ठिकाने से बाहर हो गया । क्रोध से राजा की दशा का वर्णन एवं अन्तिम निर्णय क्या हुआ–

तर्जः

पिँगला की तौहीन सुनी तो दर्द हुआ गहरा ।
पुट फड़कन रद कड़क उठे थे लाल हुआ चेहरा ॥टेक॥
रकत चाप थिर गांत स्वेद कण बिखरे भाल पै ।
अन्तर हृदय हिला हलै जैसे पारा थाल पै ॥
एक प्रिया एक अनुज न्याय सङ्कट भूपाल पै ।
विक्रम संशय युक्त हुआ भ्राता के हाल पै ॥
निर्वाक हुआ भूपाल घटी भर दृष्टिहीन बहरा ॥१॥
धरा धैर्य सँभले नृप पर कम नहीं रोष था ।
क्रोध विवश उनके मन में विक्रम का दोष था ॥
अपना भ्राता जलन करै भारी अफसोस था ।
मृत्यु दण्ड भी कम जचता इतना आक्रोश था ॥
पीपल पात समान चित्त एक ठौर नहीं ठहरा ॥२॥
शनः शनः बढ चला धैर्य क्रोध घटा मन में ।
शान्त हुए ज्यों सिकडन बढती नागा के फन में ॥
बोले नृप गम्भीर ज्यों हल्की गर्जन हो घन में ।
सुन विक्रम इसी हाल चला जा देश छोड़ के वन में ॥
कर पालन तत्काल वचन तुझे देख दुख सहरा ॥३॥
गुरशरणदास हरि की महिमा को सन्त न्यू ही गाते ।
भले समय के लिये प्रथम तो दिन खोटे आते ॥
दुख सुख के कारण कब कैसे समझ नहीं पाते ।
कामादिक शठ पञ्च दोष दुख दर्द सदा लाते ॥
सद्मति का प्रवेश नहीं जहाँ मनसिज का पहरा ॥४॥

सूक्ति– सहृदयं सामनस्यम् विद्वेषं कृणोमिवः ।
अन्यो अन्यमपि हर्यत वत्सं जात मिवाधन्या ॥
अथर्ववेद १२ १ ६३

अर्थात– परस्पर हृदय खोलकर एक मना होकर कर्मशील बने रहो। तुरन्त जन्मे बच्चे को छेड़ने पर जैसे गाय सिँहनी बनकर आक्रमण करने को दौड़ती है, ऐसे तुम लोग सन्तों की रक्षा के लिये प्रत्येक आपत्ति के निवारणार्थ कमर कसे तैयार रहो।

वार्ता– विक्रम को राजा ने आदेश दिया कि पतिव्रता को लाञ्छित करने के अपराध में दण्ड दिया है कि तू इसी हाल में अर्थात बिना किसी से मिले जुले बिना सवारी और बिना अस्त्र शस्त्र लिये तुरन्त उज्जैन की सीमा से बाहर चला जा।

विक्रम ने आदेश को तुरन्त स्वीकार कर लिया। मानसिक भाव से विक्रम ने आराध्य देवों को नमन किया, प्रथम उसने मातृभूमि को नमन किया–

तर्जः

जय वन्दे मातरम् जय वन्दे मातरम् ।
भू देव को करके नमन, बरसाये अश्रुन के सुमन, जय वन्दे मातरम् ॥टेक॥
उज्जैन की नगरी जन्म दात्तरीनमस्कार ले मेरा ।
पाल पोषकर, युवा बनाया, ये उपकार भतेरा ॥
जहाँ सत्य का होता दमन, वहाँ पाप रचता निज भवन ॥१॥
सुत बान्धव वर वधु सम्पदा देव सुपुर्द तुम्हारे ।
अब रक्षा करना, काम आपका, शिव आराध्य हमारे ॥
निष्फल प्रभु मेरा यतन, रक्षक तुम्हीं करुणा सदन ॥२॥
मनोभाव निष्छल विक्रम के शिव मूरति मुस्काई ।
उसको ऐसा दीखा शिव ने आशिष भुजा उठाई ॥
तब चूमकर मूरति चरण, दुख हो गया मन का हरण ॥३॥
गुरशरणदास भूपति को विक्रम नमस्कार पुनि करके ।
पावन मिट्टी का, तिलक चढ़ाया, ध्यान हरि का धरके ॥
तब द्वार को कीया नमन, बहने लगा त्रिविध पवन ॥४॥

सूक्ति- विलम्बं नाचरेद् धर्में चलं चित्त विनश्यति ।
इन्द्रेणागस्त्य संवाद एष धर्म उदाहृतः ॥

अर्थात- इन्द्र ने अगस्त ऋषि के संवाद में धर्म का गूढ़ रहस्य बताते हुए कहा है कि किसी भी धार्मिक कार्य को करने में कभी विलम्ब नहीं करे । कारण कि चित्त बड़ा ही चञ्चल होता है । अभी धर्म का निश्चय करने वाला चित्त दूसरे ही क्षण नष्ट हो सकता है ।

वार्ता- विक्रम राजा का आदेश मानकर सबके लिये नमन करके परमात्मा का गुणगान करता हुआ अनिश्चित मार्ग की ओर प्रयाण करते हैं कैसे-

कवि उवाच

तर्जः

राजा का आदेश कठिन सुन विक्रम चल दिया वन की ओर ।
परमेश्वर के हाथ सौंप दई उसने निज जीवन की डोर ॥टेक॥
मोह कोह परद्रोह अनैतिक इच्छाओं का रहा ना लेश ।
राम कृष्ण हनुमान चरित से लेता था साहस सन्देश ॥
धर्म धैर्य साथ निभाते जिस पर कृपा करैं महेश ।
तीन दिवस दिन रात गमन करि पार किया उज्जैन प्रदेश ॥
भूख प्यास तन थकन भूल गया भक्ति करने लगी हिलोर ॥१॥
ऊबड़, खाबड़, टील, डाकरे, ऊँच नीच समतल मैदान ।
ऐसा लगता था विक्रम को ये सब हैं सद्गुरु महान ॥
चिड़िया चहकन तरुवर थिरकन मानो कर रहे हरि गुणगान ।
स्वर्ग का आनँद अनुभव होता जब कहीं करता था जलपान ॥
झलका झलक रहे पैरों में नर्म चर्म का राजकिशोर ॥२॥
नैमिषारन की सीमा में सुना कीर्तन हरि हरि बोल ।
मिथ्या है संसार स्वप्न सम ओ पागल मन हरि हरि बोल ॥
नर जीवन का सुख कर हेतु हरि आलम्बन हरि हरि बोल ।
नाशवान है सकल पदारथ सच्चा साधन हरि हरि बोल ॥
सबका रक्षक बाल कन्हैया नन्द दुलारा माखन चोर ॥३॥
यत्र तत्र थी सन्त मण्डली गूँज रहा वैदिक सङ्गीत ।
हिंसक जीव अहिंसक हो गये बैर त्यागकर कर रहे प्रीत ॥
देख अतिथि आदर कीया भारत के सन्तन की रीत ।
सदा सुखी भय रहित जगत में जो लेता इन्द्रिन को जीत ॥
गुरशरणदास वन शोभा अद्भुत देखी विक्रम हुआ विभोर ॥४॥

सूक्ति– सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्ति मा कश्चिद् दुख भागभवेत् ॥

अर्थात– हम चाहते हैं सभी जीव सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी निरोग रहें, सब अच्छा ही अच्छा देखें, सुने, करे । कोई भी दुख का भागी ना बने ।

वार्ता– विक्रम नैमिषारन में ऋषियों की व्यवस्था देखकर आनन्द विभोर हो गया । सज्जनों नैमिषारण्य में अपने वैदिक ऋषियों की दिनचर्या एवं व्यवस्था की थोड़ी सी झाँकी आप भी देखिये । कैसा था हमारा भारत देश, वेद मन्त्रों को धारा प्रवाह बोलने वाले आज तोतली भाषा पर रीझ रहे हैं ।–

कवि उवाच

तर्ज़ः

नैमिषारन की शोभा सुखद सुहानी ॥टेक॥
सघन वृक्ष विस्तृत अति जङ्गल परिक्रमा चौरासी कोष ।
सारे तीरथ वहाँ निवासें वायुमण्डल अति निर्दोष ॥
मानो परम शान्ति रानी है और राजा वहाँ का सन्तोष ॥
ठौर ठौर परिवादन हो रहा बना मण्डली बैठे सन्त ।
महका उपवन पुष्प वाटिका पवन सुगन्धित सकल दिगन्त ॥
विक्रम को ऐसा लगता था मानो अब प्रगट भये भगवन्त ॥
पावन सरिता व्यास स्थली जन मन परम लुभानी ॥१॥
लिखी गईं उपनिषद यहाँ पर किये व्यास मुनि वेद विभाग ।
पुराण प्रकट सब हुई यहाँ पर हरि अवतरित हुआ अनुराग ॥
परिभाषित कर रहे मुनिवर भक्ति कर्म ज्ञान वैराग ॥
कथा कहीं पौराणिक हो रहीं उपनिषदों पर गहन विचार ।
रामकथा में मुग्ध महामुनि कहीं कृष्ण की जय जयकार ॥
कहीं सुना गायत्री गायन यज्ञ ऋचा कहीं रही पुकार ॥
कहीं कहीं ऐतहासिक चरचा सुर सम्बन्ध कहानी ॥२॥
कहीं भव्य पठशालाओं में लिख रहे वेदों का अनुवाद ।
कहीं कहीं अभ्यास में रत हैं स्वर चिन्हों को के रहे याद ॥
कहीं निरुक्त निघण्टू शिक्षा कहीं व्याकरणी करें विवाद ॥
शिक्षा कल्प व्याकरण ज्योतिष छन्द निरुक्त वेद के अङ्ग ।
आयर् धनुर् गन्धरव गायन स्थापत्य वेद उपसङ्ग ॥
ऋषिराज मुनियों के द्वारा शिक्षा चलती समय अभङ्ग ॥
जीव आत्मा ब्रह्म एक अद्वैत कहैं ब्रह्मज्ञानी ॥३॥
धन्य धन्य वेदों की शिक्षा धन्य धन्य मेरा भारत देश ।
धन्यवाद शत बार ऋषिन को किया निशुल्क अमर उपदेश ॥
विश्व ग्रहण शिक्षा करता था भारत गुरुवर रहा हमेश ॥
बन्दरसुत आ गये देश में छोड़ गये यहाँ तोतिल भाष ।
घोर नास्तिक शासक बन गये लुप्त हुआ मानव इतिहास ॥
रिश्वतखोर न्याय गल घोटक डूब मरो कहीं धन के दास ॥
गुरशरण मञ्च पर नेता गरजें निखिल झूँठ के दानी ॥४॥

सूक्ति– यस्यैकापि गृहे नास्ति धेनुर्वत्सानु चारिणी ।
मङ्गलानि कुतस्तस्य कुतस्तस्य तमः॥
अत्रि संहिता २१८ २१९

अर्थात– जिसके घर में बछड़ा सहित एक भी गाय नहीं है, उसका मङ्गल कैसे हो सकता होगा? क्योंकि उसके पापों का नाश नहीं हो सकता ।

वार्ता– वन की मोहक शोभा को देखता हुआ विक्रम सन्त समूह की ओर बढने लगा । सन्तों में व्याप्त अलौकिक आनन्द को देखकर विक्रम मानो पावन प्रेम की दिव्य सरिता में डूबने लगा । सामने निर्बोध नाम के अति तेजस्वी प्रमुख साधु डाभासन पर बैठे हैं । उन्हें देखकर विक्रम ने दौड़कर उनके चरणों में प्रणाम किया । कैसे–

तर्जः

आँसू ढले कपोलन पर कोई झरना नीर झिरै जैसे ।
गिरा ऋषि के चरणों में मुरझा अरविन्द गिरै जैसे ॥टेक॥
त्राहि त्राहि कहि कण्ठ रोध विक्रम हिड़की भरके रोया ।
करुणाक्रन्दन सुना सहम गये मुनियों का धीरज खोया ॥
उठा लिया ऋषिवर ने उसे मुख हाथ हथेली से गोया ।
हिम्मत धार सुबक कर बोला जीवन भार वृथा ढोया ॥
घिरा मोह के चङ्गुल में राहू से चन्द्र घिरै जैसे ॥१॥
बलिदेव का लघु सुत मैं उज्जैन नगर का वासिन्दा ।
ज्येष्ठ भ्रात भर्तृहरि भूप नारी के मोह में अन्धा ॥
कुलटा नारि विवेकहीन चारित्र चलन उसका गन्दा ।
भूपति को बेहोश किया माया में कुशल गेरा फन्दा ॥
निन्दा सुन हुए विकल भूप दिल में अति दर्द चिरै जैसे ॥२॥
भ्राता को सावधान करूँ कर्त्तव्य मेरा मैंने जाना ।
सुनकर सत्य शिकायत नृप ने विरल शत्रु मुझको माना ॥
वनोवास आदेश दिया अब नहीं किसी से मिल पाना ।
उज्जैन राज्य की सीमा से जा बाहर निकल नहीं ठहराना ॥
मैं राम भरोसे चल आया जलधार पै पात तिरै जैसे ॥३॥
आया हूँ शरण में हे मुनिवर रक्षा के लिये मेरी बाँह गहिये ।
सुनता हूँ सदा से विपत पड़े सद्गुर की शरण जाना चहिए ॥
दुख सुख दाता कर्म विधाता जो भी मिले सबको सहिये ।
सन्त समागम सुखदायक मुनियों की खोज करता रहिये ॥
गुरशरणदास कविता के लिये नित खोजत शब्द फिरै जैसे ॥४॥

सूक्ति– जन्म प्रभृति यत्किञ्चितत्सुकृतं समपार्जितम् ।
तत्सर्वें निष्फलं याति एक हस्ताभि वादनात् ॥

अर्थात– जो एक हाथ से प्रणाम करता है उसके जीवन भर का किया हुआ पुण्य निष्फल हो जाता है ।

वार्ता– सन्त महात्मा स्वभाव से ही दयालु होते हैं विक्रम की दुखान्त गाथा सुनकर महात्माओं ने उसे अनेक भाँति शास्त्रों का प्रमाण देकर समझाया । निर्बोध नाम के महात्मा उच्च कोटि के योगी थे, उन्होंने ध्यान से विक्रम के भविष्य को जान लिया । निर्बोध जी महाराज कहने लगे । –

सन्त उवाच

तर्जः

भारत सम्राट बनेगा तू दिनकर से उपमित है ।
सन्त प्रसाद आज से तेरा नाम विक्रमादित् है ॥टेक॥
लक्षण हैं दिव्य पुरुष के पड़ रही भाल पर रेखा ।
है भविष मनोहर तेरा अन्तर बुद्धि से देखा ॥
लेखा ना मिटे ब्रह्मा का लिखे ना कभी अनुचित है ॥१॥
भारत भूमि पर तेरा निर्बाध ध्वजा लहरेगा ।
जब तक तेरा राज रहेगा कलिकाल नहीं ठहरेगा ॥
जग न्यायिक तुझे कहेगा तेरा पूर्व जनम सञ्चित है ॥२॥
गायत्री मन्त्र का अब तू नित जाप किया कर मन से ।
उपकार यज्ञ नित करके कुछ लाभ उठा जीवन से ॥
दमन दान दया तीनों भूपों का पावन हित है ॥३॥
गुरशरण गायत्री माता जब तुमको अपना लेगी ।
अनसुलझे कठिन विवादों पर न्याय प्रेरणा देगी ॥
जो सत्य धर्म का रक्षक वह भूपति अपरजित है ॥४॥

सूक्ति– अवधुष्ठं च यद् भुक्तम् व्रतेन च भारत ।
परामुष्ठं शुना चैव तं भागं राक्षसं विदुः ॥

अर्थात– जिस भोज्य दान दावत के लिये ढिँढोरा पीटकर निमन्त्रण गिया गया हो । जिसमें से सङ्कल्प करके तोड़ने वाले ने भोजन कर लिया हो । किसी असत्यवादी शराबी द्वारा परोसा गया हो अथवा उसने उसमें से भोजन कर लिया हो वह अन्न राक्षसों का भाग है, इसलिये ऐसे अन्न का भोजन नहीं करना चाहिये ।

वार्ता– निर्बोध महात्मा ने विक्रम को विक्रमादित्य नाम देकर महामन्त्र गायत्री को सचित्र जपने का आदेश दिया । आदेश को शिरोधार्य करके विनम्र भाव से एक प्रश्न किया ।

गुरुदेव समस्त मन्त्रों में गायत्री मन्त्र का उच्च स्थान क्यों है? और इसके जपने की क्या विधि है? प्रश्न को सुनकर महात्मा अति प्रसन्न हुए और विक्रमादित्य को धन्यवाद दिया और कहा, वत्स तुम सफल शिष्य हो कोई भी कार्य करने में यदि थोड़ा भी सन्देह हो तो बिना समाधान किये उसका आरम्भ नहीं करना चाहिये । ध्यान देकर सुन मैं संक्षेप में गायत्री का महत्व बतलाता हूँ ।–

सन्त उवाच

तर्जः

चौबीस वर्ण छन्द गायत्री मन्त्र प्रधान बताते हैं ।
अध्यात्म विज्ञान प्रणेता वेद पुराण बताते हैं ॥टेक॥
गायत्री इसलिये श्रेष्ठ यह सब मन्त्रों में व्यापक है ।
स्तुति ध्यान प्रार्थना प्रभु की तीनों का संस्थापक है ॥
सब शक्ति का स्रोत लाभ मिलता जो इसका जापक है ।
विधिवत् पद प्रति अर्थ ध्यान से जपै तो लाभ चलाचल है ॥
श्रद्धा और विश्वास प्रेम मन्त्रों का प्राण बताते हैं ॥१॥
मन बुद्धि निष्कपट अनिच्छित शुद्ध बाहरी अङ्ग भी हो ।
परमेश्वर के गुण गायन का हृदय बीच उमङ्ग भी हो ॥
देकर पाँच विराम जपो और व्याहृति का सङ्ग भी हो ।
लय स्वर का सन्धान छन्द के गायन का सही ढङ्ग भी हो ॥
मन्त्र ऋषि मुख छन्द देव सङ्कल्प विधान बताते हैं ॥२॥
हीरा मोती मणियों की तरह ही मन्त्र की रक्षा होती है ।
करो नहीं अपमान मन्त्र तो परमेश्वर की ज्योति है ॥
लिखते फिरैं भित्तियों पर जो उनकी श्रद्धा थोथी है ।
अधिकारी को मिलै सिर्फ ये सबकी नहीं बपौती है ॥
गायत्री महिमा को पुराणैं कर व्याख्यान बताते हैं ॥३॥
छन्द का नाम गायत्री है सविता सुर और अग्निमुख है ।
विश्वामित्र ऋषि इसके यह जापक को देता सुख है ॥
त्रिताप मिटै इसके जप से ना शेष रहै जग का दुख है ।
ज्ञानवन्त लेते हैं लाभ गुरशरण ज्ञान के बिन खुख है ॥
हर मन्त्र सचेतन ब्रह्मरूप ऐसा विद्वान बताते हैं ॥४॥

सूक्ति– अकर्मशीलं च महाशनं च लोकद्विष्ठं वहु नृशंसम् ।
अदेश कालज्ञम् निष्टवेष मेतान् ग्रहे न प्रतिवासयेतं ॥

अर्थात– अकर्मण्य आलसी निठल्ला बहु भोजी सबसे बैर रखने वाला मायावी ढोंगी क्रूर निर्दय देश काल का ज्ञान न रखने वाला और निन्दित वेष धारण करने वाले मनुष्य को अपने घर पर कभी भी नहीं ठहरने देना चाहिये ।

गायत्री का चार्ट– वेदों के सभी छन्द वर्णात्मक होते हैं । अर्थात छन्दों की मात्राएँ नहीं गिनी जाती तथा अर्धस्वर और अर्थ व्यञ्जन भी नहीं गिना जाता । वेद का गायत्री छन्द इस प्रकार है– तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः– छन्द के वर्ण गिनने पर आधे वर्ण की कमी रह जाती है । विद्वानों का मत है कि प्रचोदयात् पद की पूर्ति के लिये वरेण्यं को वरेणयं बोलना चाहिए ।

भूः भुवः स्वः – ये तीन व्याहृति कहलाती हैं । गायत्री छन्द से पहले व्याहृतियाँ लगाने से यह विशिष्ट मन्त्र बन जाता है ।

सर्व मन्त्रों के लिये निश्चित विधान है कि प्रत्येक बार मन्त्र से पहले ॐ का उच्चारण अवश्य होना चाहिए ।

ॐ के सहित व्याहृति लगने पर जैसा मन्त्र बनता है वह सर्प को ज्ञात है । अब हम गायत्री मन्त्र के पाँच अवसान विराम बतलाते हैं । प्रत्येक विराम पर जप कर्ता को कुछ क्षण रुकना चाहिये । तभी मन्त्र में चेतना जग सकती है ।

ॐ भू र्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

गायत्री मन्त्र में भगवान की स्तुति अर्थात भगवान के नाम गुणों का वर्णन तथा भगवान का ध्यान अर्थात उन्हीं नामों की मानसिक मूरती का ध्यान एवं भगवान से प्रार्थना अर्थात आत्मिक कल्याणार्थ भगवान से कुछ माँगना । ये तीनों बात अन्य किसी एक ही मन्त्र में वैदिक में उपलब्ध नहीं है ।

ॐ से लेकर देवस्य तक नौ नाम गुणों से भगवान की स्तुति की गई है ।

ॐ भू भुवः स्वः तत् सवितु वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि से भगवान के स्वरूप का ध्यान किया जाता है । धियो योनः प्रचोदयात् से शुद्ध बुद्धि हेतु भगवान से प्रार्थना की जाती है ।

यह सब गुरुमुख से सुनकर विक्रमादित्य ने पुनः प्रश्न किया, भगवन उपरोक्त नौ नामों से किस नामाकृति का ध्यान करना चाहिए?

उत्तर– जिस मन्त्र का जो देवता होता है उसी का ध्यान किया जाता है, और उसी से माँग की प्रार्थना की जाती है । गायत्री मन्त्र का देवता सविता अर्थात सूर्य नारायण है । इसलिए सूर्य देवता का ध्यान करना चाहिए । नौ विशेषणों का संक्षेप में अर्थ इस प्रकार है ।

ॐ– सर्वव्यापक अनन्त का बोधक, भू– सर्व स्वयं, भुवः– सच्चिदानन्द, स्वः– अजन्मा, तत्– अकर्ता निर्विकार निर्लेप, सवितु– सबको उत्पन्न करने वाला, वरेण्यं– सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ

वरण करने और वर्णन करने योग्य । भर्गो– सर्व पापों का भर्जन अर्थात नाश करने वाला, देवस्य– देवों का देव सबको सब कुछ देने वाला ।

वार्ता– महात्मा निर्बोध जी ने विक्रम को सुयोग्य शिष्य जानकर उसे गायत्री मन्त्र दीक्षा में प्रदान कर दिया तथा मन्त्र जप की सर्व विधियों से परिचित एवं पारङ्गत कराकर एकान्त स्थान पर मन्त्र सिद्धि हेतु भेज दिया ।

इसके उपरान्त महात्मा निर्बोध जी ने राष्ट्रहित पर विचार करने के लिये विद्वान सिद्ध सन्तों की सभा का आयोजन किया । भर्तृहरि राजा की कुरीतियों की चर्चा करके साधुओं को बताया कि सन्तों का पहला कर्त्तव्य राष्ट्र की सेवा करना है । वे कहने लगे कि–

सन्त निर्बाध उवाच

तर्जः

सन्तों का कर्त्तव्य राष्ट्र का ध्यान किया करते ।
किस राह चला महिपाल सन्त पहचान किया करते ॥टेक॥
राज की मदिरा पीकर राजा होश भूल जाते ।
यश का अमृत स्वाद छोड़ अपयश की धूल खाते ॥
बदहोशी में कल्पतरु का काट मूल ढहाते ।
चन्दन गन्ध वमन करती आके के फूल भाते ॥
खोकर नेक विवेक धर्म की हानि किया करते ॥१॥
नृप के नीच आचरण का जग होड़ करन लगता है ।
राजा के पग चिन्हों का अनुसरण करण लगता है ॥
अधरम हो बलवान देश की शक्ति हरण लगता है ।
निज कुल गौरव भूल सिँह भी घास चरण लगता है ॥
दूध दही घृत त्याग लोग विषपान किया करते ॥२॥
आज भर्तृहरि भूप कण्ठ तक डूबा आलस में ।
सत रज गुण का त्याग किया मन रम गया तामस में ॥
कठपुतली की तरह रहा हुआ नारी के बस में ।
पाप अणु कर पान रक्त अब घूम रहा नस में ॥
ऐसे समय सन्त शक्ति का दान किया करते ॥३॥
उचित सलाह सुन विक्रम को नृप ने वनवास दिया ।
कठिन उपेक्षा करी धर्म का अति उपहास किया ॥
प्रजा दुखित रही बिलख न्याय का विहद हिरास किया ।
विक्रम ने सन्तों की शरण में आकर वास किया ॥
गुरशरण सन्त बल देवों का आह्वान किया करते ॥४॥

सूक्ति– जगद्‌गुरु श्री आदि शङ्कराचार्य जी से उनके शिष्यों ने पूछा–
प्रश्न– मुमुक्षणा किं त्वरितं विधेयम् ।
अर्थात– ब्रह्मानन्द जिज्ञासु को तुरन्त क्या करना चाहिये?
उत्तर– सतसङ्गति निर्मम तेरा भक्तिः।
अर्थात– सतसङ्ग तथा संसार से ममता त्यागकर भगवान की भक्ति करनी चाहिये ।
प्रश्न– किं कर्म कृत्वा नहि शोचनीयम्
अर्थात– ऐसा कौन सा कर्म है जिसे करने वाला व्यक्ति कभी नहीं पछताता?
उत्तर– कामारि संसार समर्चनाख्यम् ।
अर्थात– भगवान कृष्ण की भक्ति करने वाला सदा निश्चिन्त रहता है ।

वार्ता– साधु समाज में सर्वश्रेष्ठ निर्बोधाचार्य जी का भाषण सुनकर सभी साधु लोग भर्तृहरि के व्यवहार से क्षुब्ध हो गये । यद्यपि उज्जैन के निकटवर्ती साधु समाज पहले से ही राजा की नीतियों का विरोध कर रहा था । भर्तृहरि भूप मानते भी कैसे उनके भाग्य में तो कुछ और ही था । सन्तों का बल देव होता है, उन्होंने देव को प्रसन्न करने के लिये एक महान यज्ञानुष्ठान करने का निश्चय किया ।–

कवि उवाच

तर्जः

सन्त क्षुब्ध हो गये भूप व्यवहार के लिए ।
सजग हुए सङ्कल्प किया उपचार के लिए ॥टेक॥
एक महायज्ञ करो वैदिक ऋषियों का परामर्श था ।
हो गये संलग्न यज्ञहित सन्तों को परम हर्ष था ॥
लिए बुला ऋचक छन्द ज्ञाता जिनका स्वर मधुर सरस था ।
विक्रम यजमान बनाया प्रयोजन देव दरश था ॥
यज्ञ कर्म शुभ सफल सदा भव पार के लिए ॥१॥
यजवेदी और देवासन रच रहे निर्माणक ज्ञाता ।
गऊ गोबर पावन मिट्टी का विस्तृत लेप सुहाता ॥
सित वस्त्र वितान मनोहर भिन्नासन पर उद्गाथा ।
महकी महि पुष्प बिछावन शोभा लखि चकित विधाता ॥
देव यज्ञ शुभ फलित सकल संसार के लिए ॥२॥
देह और नवग्रहों का पूजन पारित कर ऋषिवर ।
गौ घृत भावित सामग्री शुभ काठ पलाशी रखकर ॥
पढ़ मन्त्र किया आवाहन् हुआ प्रकट अग्नि वैश्वानर ।
प्रारम्भ दिव्य आहूती रहे बोल स्वहा मुनि एक स्वर ॥
ऋषिवर सात सुयोग्य मन्त्र उच्चार के लिए ॥३॥
शत लक्ष हुई आहूती सुर वैद्य प्रकट थल आये ।
कीरति अमर करने को एक अद्भुत सा फल लाये ॥
फल देओ भूप को जाकर सब गुप्त रहस्य समझाये ।
लय हुए वैद्य दे आशिष सब सन्त मुनि हरषाये ॥
गुरशरण सन्त तत्पर रहते उपकार के लिए ॥४॥

सूक्ति– लोभ प्रमाद विश्वासैः पुरुषो नश्यति त्रिभिः ।
तस्माल्लोभो न कर्त्तव्यौ न प्रमादो न विश्वसेत ॥

अर्थात– लोभ प्रमाद और विश्वास इन्हीं तीन दोषों से प्रत्येक प्राणी बँधता है और मारा जाता है । इसलिए लोभ लालच न करे प्रमाद से बचना चाहिए अति विश्वास न करे, विश्वास केवल ईश्वर के लिए है अन्य के लिए है सावधान ।

वार्ता– ऋषियों ने वेद मन्त्रों की मधुर ध्वनि से समस्त आरण्य को मन्त्रमय बना दिया । सौ लाख आहूतियों से वनवृक्षों का पत्ता पत्ता महक उठा ।

यह महायज्ञ दिन रात अविराम चलता रहा, ऋषियों की मनोवाञ्छा को जानकर सुर पति इन्द्र ने सुर वैद्य अश्विनि कुमारों को भर्तृहरि महिप की कामाघात व्याधि की चिकित्सा हेतु आदेश किया ।

वैद्यगण एक दिव्य फलाकृति की वस्तु लेकर यज्ञस्थल में प्रकट होकर वह दिव्य वस्तु ऋषियों को अर्पित करके उसका सारा गुप्त रहस्य समझा दिया ।

उस वस्तु का काल्पनिक नाम अमरफल रखकर उसे बतला दिया कि यह फल भर्तृहरि के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति के पास नहीं ठहर सकता । यह घूम घामकर उन्हीं के पास चला जायेगा । निर्बोधाचार्य का आदेश पाकर सौम्येश्वर नाम के साधु जी उस फलनुमा वस्तु को लेकर भर्तृहरि जी के राजदरबार में पहुँचे । महाराज भर्तृहरि जी ने सौम्येश्वर जी का भारी स्वागत किया एवं आतिथ्य सत्कार भी किया ।–

तर्जः

किया सन्त दरश, हुआ अमित हरष, लिए चरण परश,
सत्कार किया नृप ने ॥टेक॥
धोये चरण लिया चरणोदक बिठा दिया सिँहासन पै ।
ऋषि आगमन पावन होता प्रेम झलकता था मन में ॥
मन्त्र मुग्ध हो गया भूप ज्यों चातक मुग्ध हुआ घन पै ।
उज्जैन भूप का शासन स्थिर सन्तों के आलम्बन पै ॥
तन मन से मगन, सेवा में लगन, अति मूल्य रतन बलिहार किये नृप ने ॥१॥
दिव्य सुगन्धित मधुर पेय बहु भाँति पिलाये राजा ने ।
शीतल शुचि आमलक नीर से सन्त सन्त न्हिलाये राजा ने ॥
वल्कल वस्त्र नवीन प्रेम से आप पिन्हाये राजा ने ।
भोजन चतुर विशेष शिल्पिकर पास बुलाये राजा ने ॥
राजा का चाव, बढ़ा प्रेम भाव, सेवा की नाव भव पार किया नृप ने ॥२॥
चवण लेह पेय और चौसल विधिवत व्यञ्जन विविध प्रकार ।
छः रस मिश्रित अनुपम भोजन शाक सब्जियाँ कई अचार ॥
समुचित सिके प्रफुल्लित फुलका मक्खन दही मलाईदार ।
मेवा चटनी भरी कचौरी देव लोक पहुँची महकार ॥
मन बार बार, छलकै था प्यार, सेवा का भार विस्तार किया नृप ने ॥३॥
गुरशरण प्रेम ही अमृत है हरि भक्त इसी को पिया करैं ।
देह विसर्जित हो जाती कल्पान्त लोक में जिया करैं ॥
सद्ग्रन्थों के माध्यम से उपदेश विश्व को दिया करैं ।
छोड सुगन्धि अमृत की कैवल्य मोक्ष में ठिया करैं ॥
करो ईश ध्यान, तज अभिमान, जैसा सन्त मान निज द्वार किया नृप ने ॥४॥

सूक्ति– कार्यमण्वपि काले तु कृत्य मेत्युपकारतम् ।
महानत्युपकारोपि रिक्तामेत्य कालतः ॥

अर्थात– ठीक समय पर किया हुआ थोड़ा सा भी कार्य बहुत उपकारी होता है । और समय बीतने पर महान उपकारी कार्य भी व्यर्थ हो जाता है ।

वार्ता– भर्तृहरि जी के आतिथ्य सत्कार से सोमेश्वर महात्मा जी अति प्रसन्न हुए । अति मधुर वाणी से राजा की भूरि भूरि प्रशंसा करके उनको वह फल दे दिया । फल के गुणों का यथावत व्याख्यान किया । साधु ने फल के गुणों की ऐसे गूढ़ शब्दों में व्याख्या की कि जिसका अर्थ यह भी होता था कि तू इसे खाकर अमर हो जायेगा और वास्तविक भावार्थ यह था कि तू जन्म मरण के बन्धन से छूटकर मोक्ष को प्राप्त कर सकेगा ।

तर्जः

अमर होण के लिए अमर फल पिँगला को देना चहिए ।
मृग नैनी पिकबैनी का लावण्य अमर रहना चहिए ॥टेक॥
मैं अमर बणूँ फल खाकर तो एक और मुसीबत आयेगी ।
मैं यों ही युवा बणा रहुँगा पिँगला वृद्ध हो जायेगी ॥
मैं वृद्ध रहूँ वह युवा रहे तो भी मेरी सेवा ठायेगी ।
किया भूप निर्णय निश्चय यो भली बात बन पायेगी ॥
नारी में आनन्द कला वह किला नहीं ढहना चहिए ॥१॥
जिस समय अमर फल देउँगा वह बहुत खुशी हो जायेगी ।
ब्रह्मानन्द मिले मुझको जब मन्द मन्द मुस्कायेगी ॥
तुमखाकर फल अमर बनो मुझे कई बार समझायेगी ।
होगा जीवन धन्य वह जब मगन अमर फल खायेगी ॥
प्रेम पियूष युगल तट से लहरों के सहित बहना चहिए ॥२॥
छोड़ दिया दरबार भूप मन मगन महल की ओर चला ।
मानो की मोरनी को मोहने निज पैंच फला के मोर चला ॥
आप भले हि कल वृद्ध होय नारी को करण किशोर चला ।
अबला को प्रबला बना रहा ले वशीकरण चित चोर चला ॥
पुरुष सदा विकलाङ्ग नार बिन जीवन का गहना चहिए ॥३॥
गुरशरणदास विपदा का बीज स्त्रेण पुरुष खुद बोते हैं ।
मार कुल्हाड़ा हाथ आप फिर दर्द लगे पर रोते हैं ॥
कुछ लोग मनुष की देही में अति भार धरनिया होते हैं ।
उनकी पीड़ा कौण हरे जो खुद काँटो पर सोते हैं ॥
ऐसे मूरख लोगों को कोई कहो कि क्या कहना चहिए ॥४॥

तर्जः फूल है कली है या तू

पिङ्गला सी सुन्दरी जहान में कहाँ, उपमा के जोग उपमान है कहाँ ।
सूरज कहूँ तो आग है, चन्दा कहूँ तो दाग है ॥टेक॥
गज गामिनि पिक बैन नयन अभिराम ।
दन्त मनोहर हास्य मन्द सुखधाम ॥
पुट पङ्कज छवि पुञ्ज लजावैं काम ।
कामुक जन के लिए सुखद विश्राम ॥
वह कामिनी, नभ दामिनी, तन दूध कैसा झाग है ॥१॥
शुभ कन्धर शुभ कबूतर ढाल ।
दमके दिव्य ललाट लहरते बाल ॥
मेरा मन है हंस ये पिँगला ताल ।
हो सकती है वृद्ध ग्रसै जब काल ॥
ऐसी नार को, सुख सार को, पावे कोई बड़ भाग है ॥२॥
दिया अमरफल सन्त किया उपकार ।
यौवन स्थिर रहै यही उपचार ॥
खा लेगी इसे जो पिँगला नार ।
सदा एक सा चले प्रेम व्यवहार ॥
निश्चय किया, फिर चल दिया, कातिल के घर को छाग है ॥३॥
गुरशरणदास कामन्ध पुरुष गति घोर ।
पर्वत दिखना बन्द सुनै नहीं शोर ॥
चले आप बिन घाट मौत की ओर ।
आपहि बन जा धनी आप ही चोर ॥
तू चल तो चल, पर चल सँभल, बिन सुर के कैसा राग है ॥४॥

तर्जः रेशमी सलवार कुरता जाली का

पिँगला हो गई मगन अमरफल पा कर के ।
खाउँगी महाराज इसे मैं न्हा कर के ॥टेक॥
चल दिये सभा को राजा फिरी पीठ नार मुस्काई ।
जीभ काढ़ मुख पिचका मानो कि विजय बड़ि पाई ॥
उन्हें गुमराह कर के ॥१॥
फल स्वच्छ वस्त्र में बाँधा तब जैसे ही अवसर पाया ।
घुड़साधक को फल देकर बहुत भाँति समझाया ॥
अमर बन खा कर के ॥२॥
हुई शाम भूप घर आये बिन पूछे प्रेम फरमाया ।
फल तुम को खाना शुभ था अफसोस कि मैंने खाया ॥
आपकी चाह कर के ॥३॥
गुरशरण नारि गुण अवगुण कहै सन्त नेति नेति हैं ।
ऋषि मुनि असुर सुर नृप को बिन डोर बाँध लेती है ॥
पता ना काह कर के ॥४॥

तर्जः तुझे सूरज कहूँ या चन्दा

जो सचमुच गुण इस फल में मृत्यु को हटा देने का ।
अधिकार कहाँ है मुझको चिरञ्जीव रहने का ॥टेक॥
अघ पुञ्ज गहन अति गहरा मल पङ्क से भरी हुई हूँ ।
बेहया निलज दुष्कर्मा जीवित ही मरी हुई है ॥
पशुवों से भी गिरी हुई हूँ बस नाम नारि कहने का ॥१॥
मेरा कलुष कलङ्कित यौवन नरकों का भवन जीवन है ।
मनसिज दाहक अगनी से यह फुका हुआ उपवन है ॥
मरना ही चाहता मन है अब साहस नहीं सहने का ॥२॥
सोचा कि भूप भर्तृहरि जो इस फल को खा लेंगे ।
जनता के प्रिय वर पोषक लम्बी आयू पा लेंगे ॥
किन्तु वो दोष समझेंगे मेरे हाथ से फल लेने का ॥३॥
गुरशरण सोच रही गणिका में सद्गुण से खाली हूँ ।
दिन रात पाप के धन से निज उदर भरने वाली हूँ ॥
नाली हूँ काम नित मेरा मल मूत्र लिए बहने का ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः मोहब्बत की झूँठी कहानी

गणिका के हाथों में अमरफल को देखा ।
मनोभव की लीला में महा छल को देखा ॥टेक॥
समझने में राजा को लगी थी ना देरी ।
पिँगला की महिमा पै निगाह जो गेरी ॥
सोने के गागर में हलाहल को देखा ॥१॥
भर्थरी से राजा की पिँगला है राणी ।
प्रेम अश्वसाधक से अनोखी कहाणी ॥
हिमालय की चोटी पर रसातल को देखा ॥२॥
मधुरतम सी वाणी मधुर मुस्काना ।
जानती है सुन्दरी तू जाल में फँसाना ॥
कर्मनाशा नदिया में सड़े जल को देखा ॥३॥
गुरशरण नारी को प्रभुता दिये ते ।
सुखी ना रहे चाहे सुखी विष पिये ते ॥
महिला के हिरदे में मरूथल को देखा ॥४॥

तर्ज़ः

भर्तृहरि ने फल खाना चाह्या ।
हटा आवरण देखा भीतर पत्र लिखा पाया ॥टेक॥
खोल पत्र पढा भूप लिखे इश्लोक पाये ।
ऋषियों की वांणी अर्थ भूपति विलोक पाये ॥
आँसुवों की धार बही हिड़किया ना रोक पाये ॥
गुप्त कोठरी में गये धैर्य सँभाल लिया ।
बारबार पढ़ते भूप सारा काम टाल दिया ॥
ऋषियों की वाणी ने तो ज्ञान दीप बाल दिया ॥
राव करनी पर पछताया, छुटा पसीना गात कम्प सिर चक्कर सा आया ॥१॥
ज्ञानवन्त होकर फँसा कामनी के जाल में ।
हाड़ माँस थूक लार भरी हुई खाल में ॥
खों दिया अमूल्य वक्त बेहूदे खयाल में ॥
अनेक कल्प नर्क भोग मानुष की मिली है देह ।
राजधर्म ज्ञाता तेरी बुद्धि में लगी क्यूँ रेह ॥
ब्रह्मानन्द त्याग नरकानन्द में लगाया नेह ॥
चढ़ा क्या प्रेतों का साया, कामधेनु रस त्याग दूध क्यों आके का भाया ॥२॥
कामना की आग क्यूँ जीवन उड़ेल दिया ।
मानवी का चर्म लक्ष दूर क्यूँ बगेल दिया ॥
धर्म ध्येय धैर्य क्यूँ खड्डे में धकेल दिया ॥
अनेक भूप कामियों का खोल इतिहास देख ।
सुन्दरी के हास्य में तू मौत का निवास देख ॥
भोग से है तृप्त कौन करके तलाश देख ॥
नारी की खतरनाक छाया, खसे स्वर्ग से नहुष करी ना दशरथ पै दाया ॥३॥
आज ही प्रमाद छोड़ जागजा हरि के हेत ।
सावधान विज्ञ जन थोड़े में समझ लेत ॥
सप्त ऋषियों तुम्हे उपकार का उपदेश देत ॥
ऋषियों के पत्र का यों भूप ने दुलार किया ।
छाती से लगाया चूमा नमः बार बार किया ॥
धन्य हो दयालू भव सिन्धु से मैं पार किया ॥
नष्ट हुई तमोगुणी माया, गुरशरणदास उपदेश अमरफल अवनिप ने खाया ॥४॥

कवि उवाच

कवित्त

ज्यों हि सुनी पिँगला ने नरेश से,
आग धरो तन होय परीछा ।
जोड़ के हाथ पड़ी नृप पायन,
नाथ देओ मोहि जीवन भिक्षा ॥
मैं न सकी फल खाय दिया तुम,
आज कहूँ सुनो सत्य समीक्षा ।
नीति भली यह वेद कही,
गुरशरण खलों को दण्ड ही शिक्षा ॥

तर्जः

बोली हाथ जोड़ महाराणी गङ्गा शपथ कहूँ सच वाणी, अमरफल मुझसे खो गया।
ले गया कोई चाण्डाल उसे वह चोरी हो गया ॥टेक॥
बोला तुमसे झूँठ मैंने फल खा लिया बतयलाया ।
होनी की करतूत गहन है परमेश्वरि माया ॥
अमरफल जब खाना चाहा रखा जिस ठौर नहीं पाया, तो मेरा हृदय घबराया ॥१॥
चोर करै प्रवेश महल में ना कोई रस्ता है ।
लगता है महाराज प्रेत कोई घर में बसता है ॥
चसता दीप बुझै बिन वायु, हलता भवन बहुत घबराउँ, कर्म दुख बिरवा बो गया ॥२॥
भूत प्रेत का साया मैं रही देख वर्ष भर से ।
पति को होगा कष्ट कही ना मैंने इस डर से ॥
घर से दूर नहीं वह पापी, छिप रहा यहाँ भूत सन्तापी, फल को लेकर जो गया ॥३॥
गुरशरणदास कहते कहते अवरुद्ध हुई वाणी ।
क्षमा करो पतिदेव हुई यह अनहोनी हाणी ॥
राणी हिड़की देकर रोई, मानो बिच्छू डस गया कोई, मुख आँसुन सै धो गया ॥४॥

तर्जः

चार वेद छः शास्त्र सकल उपनिषद का सार सुनो विक्रम ।
जीवन पथ पर नित्य गमन करता भव पार सुनो विक्रम ॥टेक॥
बिना परिश्रम किये सम्पदा विष का काम किया करती ।
आलस बैठे पुरुष की किस्मत भी विश्राम किया करती ॥
सोने वाले पुरुष की बुद्धि दुख परिणाम किया करती ।
कर्मारूढी स्वेद सम्पदा स्वर्ग मुकाम किया करती ॥
जगा जंवानी धन्यवाद आलस धिक्कार सुनो विक्रम ॥१॥
दोष दूसरा यौवन का मद बरबस अन्धा करता है ।
कर्ण पटल स्थूल सुनै ना दर्प दम्भ मल भरता है ॥
जल में थल, थल में जल दीखै कर्कट राह विचरता है ।
वेद पन्थ मर्याद तोड़ दुख सुख परिणाम बिसरता है ॥
नाश का कारण गुणियों का करना तृष्कार सुनो विक्रम ॥२॥
सब दुर्गुण का मूल लक्ष्मी प्रकटी नीर बिलोवन से ।
हंस चञ्चला अगुण प्रिया भावित मदिरा विष धोवन से ॥
मानव को दानव बना देत भटकाती सत्य प्रयोजन से ।
तृष्णा का सागर उफनाती यह अपनी तरँग विमोहन से ॥
घटे बढ़े दुइ भाँति हान तलवार दुधार सुनो विक्रम ॥३॥
आलस यौवन असित लक्ष्मी कोपित सन्नीपात बनै ।
नारी में आसक्त कुसेवन प्राण हनन् उत्पात बनै ॥
ये चार शत्रु इनको जीते जो विश्व विजयी विख्यात बनै ।
अन्त स्वर्ग स्थान सिँहासन इन्द्र देव के साथ बनै ॥
गुरशरणदास सुख दुख रचना नर का अधिकार सुनो विक्रम ॥४॥

तर्जः उधर को चले हैं रघुवीर

पूछो ना मुझसे सवाल बाबा,
जान का बवाल अपने आप रच लिया ॥टेक॥
बोलती ना वाणी, कहाणी है दुर्दुख उससे लजिया रही है ।
असङ्गत है हाणी, कलुषता को मेटे कोई औषध नहीं है ॥
दुखद दशा का हाल बाबा, कैसे सुनाउँ मन में पाप रच लिया ॥१॥
कैसे कहूँ मैं कहते में हृदय मेरा मुझे कोसता ।
कामनी के विष को जाण के पियूष पिया नहीं होश था ॥
हो गया हूँ बर्बाद बाबा, पशुवों सा पिञ्जर तन बस शेष बच लिया ॥२॥
नारी के चहरे पै बैठा मनोज पापी मुझे ठग गया ।
अपने अनुज का अमृत इसारा मुझ को विष लग गया ॥
सूखा सुयश का ताल बाबा, महिप है निकम्मा निर्लज शोर मच लिया ॥३॥
अपनी नादानी की भरथरी महिप ने घटना सारी कह दई ।
अचम्भा है मुझको ऐसी कुसङ्गति मैंने कैसे सह लई ॥
गुरशरण है हीन विवेक बाबा, परीक्षा से सारे जग का हाल जच लिया ॥४॥

महाभारत

तर्जः

महाभारत है रक्त गोत इतिहास फेर भी प्यारा ।
लेखक हैं भगवान व्यास कुल पर्व बणा दिये ठारा ॥टेक॥
आदि पर्व में जन्म कथा सृष्टि की अमित कहानी ।
धनुविद्या लाखा की अगन और ब्याही द्रौपदी रानी ॥
सभापर्व शिशुपाल मरण और जुवा की बेईमानी ।
और वन पर्व तीसरा वन वन डोले पाण्डव ज्ञानी ॥
चौथा है वैराट पर्व जहाँ छुप के किया गुजारा ॥१॥
उद्योग पर्व में युगल पक्ष की कट्ठी होगी सेना ।
गये दूत बण कै कृष्ण ना कौरव माने कहना ॥
भीष्म पर्व ज्ञान गीता का सभी कथा का गहना ।
दश दिन जङ्ग किया भीष्म ने शर शैया पै रहना ॥
द्रोण पर्व में चक्रव्यूह अभिमन्यु मरा दुख भारा ॥२॥
कर्ण पर्व है पर्व आठवाँ जङ्ग कर्ण अर्जुन का ।
इसीपर्व में भीमसेन तै रण है दुःशासन का ॥
शल्य पर्व फिर गदा पर्व दिन अन्तिम दुर्योधन का ।
सौप्तिक पर्व में कथन मिलेगा द्रोपदी पुत्र निधन का ॥
स्त्री पर्व में रुदन भयङ्कर भारत हाहाकारा ॥३॥
शान्ति पर्व उपदेश घने अश्वमेध में सब जग जीत लिया ।
अनुशासन में राजतिलक और पर्व आश्रम वास किया ॥
मूसल पर्व में यादव मरगे श्री कृष्ण जग छोड़ दिया ।
स्वर्गारोहण गले पाण्डव स्वर्ग जय राम सिया ॥
गुरशरणदास छत्री के बिन सूना देश हमारा ॥४॥

तर्जः

पाँच गन्धरव अन्तरिक्ष में रखवाले राणी ।
करना तुम विश्वास मेरा मैं सच बोलूँ वाणी ॥टेक॥
कोई पुरुष नै मेरी तरफ जो बुरी नजर लावैगा ।
आठ पहर ना लगे वह यमराज पुरी जावेगा ॥
ताकत का यहाँ चलै ना चारा काल तुरत आवैगा ।
साफ बात कहने वाला धोखा ना खावैगा॥
आई सूँ मैं करण गुजारा बन ना जाऊँ कहानी ॥१॥
एक साल की विपत लगूँगी पार थारे बेड़े तै ।
अन पानी खाना होगा इस धर्म धनी डेरें तै ॥
कदै कदै नर होश भूल जा दारू पट भेड़े तै ।
जान कब्ज हो जाती है सोती सिँहणी छेड़ें तै ॥
अग्नी वर्द्धक योग पाये तै..........॥२॥
मैं निर्धन दासी की जात सूँ डर लागै झगडे तै ।
हाथ गात फुक जाया करता जली ओड़ पकड़ें तै ॥
पवन के झोके ढह जाते हैं जबर वृक्ष अकड़े तै ।
चन्दन में भी आग जाग जा घणी देर रगड़ें तै ॥
मानवता का नाश करण को ये दारू बनी भवानी ॥३॥
झूठे बर्तन ना माजूँगी झूठ नहीं खाऊँगी ।
काम करण को मैं थारे महल ते बाहर ना जाऊँगी ॥
मर्दो के ना चरण दबाऊँ सब सेवा ठाऊँगी ।
राम बनाये काम थारा आशीर्वाद पाऊँगी ॥
गुरशरणदास वा मर्द थाम ले चढ़ती बाढ़ जवानी ॥४॥

तर्ज़ः

हुई श्यौरत श्यामा रँग औरत नगरी में आई रे, नग नूर नया चेहरा, शबनम सुथरा हिया।
मन खाये जो हिलोरे चन्दा चाँदनी के धोरे, हाय मेरे रामा लचके जिया ॥टेक॥
जब धीरे मुस्काती है कलियाँ भी धोखा खाती हैं ।
ना उसका कोई साथी है सबका राम हिमाती है ॥
मन भाये वाकी वाणी, किसी देवता की राणी, हाय मेरे रामा लचके जिया ॥१॥
सुन्दरी सोलह राशी है मन मुक्ता सन्यासी है ।
एक बोदी बात जरा सी है कहते हैं दासी है ॥
सुनते हि दिल लागा मिला सोने पै सुहागा, हाय मेरे रामा लचके जिया ॥२॥
कीचक सुन के वो कहानी दासी बे वारिस जानी ।
रानी तै बोला वाणी दासी पै भिजवा पानी ॥
जल छल से मँगाया भेद बात का छुपाया, हाय मेरे रामा लचके जिया ॥३॥
शैलेन्द्री पानी लाई जान सकी ना गहराई ।
गुरशरणदास कह घबराई देख नशे की गुरमाई ॥
दिल दुख मेरा माने आजा होश में दिवाने, हाय मेरे रामा लचके जिया ॥४॥

तर्जः

फूल है कली है या तू शबनम है, दासी क्यूँ बनाई क्या किसी से कम है,
वार देंगे जान हम जान पै तेरी कसम ॥टेक॥

तर्जः

धर्मराज गिन दाव जुए के हिजड़ा बणगा थारा धवल ।
पेट भरण की लगन लगी तुझे भीम भूलगा अपना बल ॥टेक॥
मीन मारते हि मोहित होगी गलत रहा मेरा अन्दाज ।
न्यूँ ना सोची कायर भी कोई हो सकता निशानेबाज ॥
थारा बदन विशाल देख कै मैने वीर बहु का नाज ।
सोची कोन्या अङ्कुश के बल नाचे बड़े बड़े गजराज ॥
आज लिहाज भूल अपनी में काम ना करतीं मेरी अकल ॥१॥
शेर जान पति पाँच मान लिए घणी भूल में लागा दाग ।
फिरुँ गले में घाले पाँचों दन्तहीन बिन विष के नाग ॥
वरना वन में भेज दिये जब धधकी लाखा में आग ।
कायर थे तुम भेष बदल के डर के गये नगर ते भाग ॥
वरना निकल आग ते बाहर देते उनका तखत बदल ॥२॥
सर सर चीर सभा में खिँच रा तुम बैठे कर नीची नाड़ ।
तुम्हें शरम आई कोन्या जब दुर्योधन रहा जाँघ उघाड़ ॥
तुम तो मजे जुए के लेरे मुझ पै पड़े विपत के पहाड़ ।
शेर बनो कदै स्यार बनो तुम ये होतीं कायर की आड़ ॥
बने जनाने दल में कूदो गाओ दादरा प्रेम गजल ॥३॥
कीचक ने मेरा हाथ पकड़ लिया सुन के ना शरमाओगे ।
घनी बढ़ी हुई बात देख तुम नगर छोड़ भग जाओगे ॥
जो ना सुनी पुकार मेरी तो मूड पकड़ पछताओगे ।
कीचक मेरा हरण करै तुम न्युँ ही ठोट रह जाओगे ॥
गुरशरणदास कह भेद खोल दिया तुम छलिया करते हो छल ॥४॥

तर्ज़ः

करके भेष जनाना बड़गा उतरा की चटशाला में ।
आँखों में रहा बरस तमोगुण गात क्रोध की ज्वाला में ॥टेक॥
सतियों का अपमान होय वो देश छोड़ देना चहिए ।
नींबूँ नमक निचौड़ नैन में छेद फोड़ देना चहिए ॥
लुटता देख सती का दामन कर्म फोड़ देना चहिए ।
लाज की खातिर तन और धन का मोह छोड़ देना चहिए ॥
पैरों तले दबाओ हो जो फूल लगा किसी माला में ॥१॥
एक दिना ब्राह्मण के भेश में मीन मार कै ब्याही थी ।
पाँच पति की नारी हो सब जग की सुनी बुराई थी ॥
हमने कितना जुल्म करा निज नार दाव पै ल्याई थी ।
बैठे रहे देखते पाँचों जब साड़ी खिँचवाई थी ॥
पीके बैठ सबर का रहगे लड्डा काढ दिवाला में ॥२॥
वनोवास हो गया म्हारे सङ्ग खुले हुए केश लिए डोले ।
निज पतियों के धर्म की खातिर तन का क्षार किये डोले ॥
चित चिन्ता में डुबो दिया सब तन..............................।
रतन जवानी हवा आबरो सब बरबाद किये डोले ॥
कीचक बे औकात लात का घात करा मधुबाला में ॥३॥
गुरशरणदास रहा सोच केसरी न्यूँ ही भुजा फड़कन लागी ।
क्षत्रापन के जोश की नदिया सहज सहज रड़कन लागी ॥
सभा तलक की बात याद कर अगनी सी भड़कन लागी ।
मुख मण्डल हो गया लाल दाढ़ों से दाढ कड़कण लागी ॥
किस हिम्मत से किया अनादर रजपूतों के आला में ॥४॥

तर्ज़ः

आसन जमा बैठगी होनी कीचक पापी हठ करगा ।
तेज मिजाज छेड़ दी सिँहणी बनी बात का मठ करगा ॥टेक॥
होगा समय जांन कीचक ने पी दारू का घूँट लिया ।
बढ़ी हुई बाजी यौवन की मौत के घर को ओट लिया ॥
मनं की ताकत दबी हुस्न पै दिल दारू ने लूट लिया ।
खाके चोट जरा सी उल्टी घड़ा पाप का फूट लिया ॥
के बेरा वहाँ नाग बसा जहाँ पहले चूहा भट करगा ॥१॥
भीमसैन बन काल बैठगा उतरा के स्कूल में था ।
वहाँ मिलेगा चमन खिला वो कीचक पापी भूल में था ॥
मद में अन्धा होय निकम्मा खोगा तौर धूल में था ।
ताखी नाग जहर में भरके बैठा हुआ फूल में था ॥
समझाये तै भी ना माना जैसे पाप हिए नै घट करगा ॥२॥
भीतर बड़कै वा पापी शैलेन्द्री ने टोहन लागा ।
होनहार बलवान स्यार भी सिँहनी पै मोहन लागा ॥
मूरख था बारूद शिकञ्जा अगनी में धोवन लागा ।
भीमसैन ने भुजा थाम ली अजब जङ्ग होवन लाग्या ॥
हाथ पिछान भगा उल्टा जैसे कला खिलारी नट करग्या ॥३॥
भीमसैन ने कहा नीच तू अब जिन्दा जा सकता ना ।
चोट प्रेम की लगी तुझे अब घर का राह पा सकता ना ॥
इतनी कह के पटक दिया मोती कागा खा सकता ना ।
सुधि कवियों की कविता नै कोई नुगरा गा सकता ना ॥
गुरशरणदास जँग देखन लागा न्यूँ ही कलम नै डट करग्या ॥४॥

कीचक वध

तर्जः दिल कहे रुक जा रे रुक जा

धर जान हथेली पै दोनों गजराज लड़ रहे ।
आखीर की है बाजी दो बाज लड़ रहे ॥टेक॥
अपने अपने दाव चला रहे मल्ल युद्ध हुआ घोर, बड़ा अजब जङ्ग था ।
दो शेरों में पैज पड़ी है लगा रहे बड़ा जोर, बज्जर का अङ्ग था ॥
हुई दङ्ग दिशा टकराये नशा, भरपूर अँधेरे में करके अन्दाज लड़ रहे ॥१॥
हो जाये वह देश गरक जहाँ सतियों का अपमान, धरती फट जाये ।
शैतानों का सर्वनाश हो झड़ झड़ गिरे जवान, अम्बर हट जाये ॥
ये पुण्य पाप से, नेवला साँप से, इन्साफ पाप का है जौहर जो आज लड़ रहे ॥२॥
भीमसैन ने कीचक पटका झटका बाजू थाम, धरती पै गिराया ।
उतर गया बैरी का अन्तिम दिल दारू का जाम, बेहोश बनाया ॥
पट गया नशा जो स्वर्ग बसा, बैरी के साँस से सरगम बे साज लड़ रहे ॥३॥
भीम ने करके खतम दुष्ट की गुफा छिपाई ल्हाश, घर लौट के आया ।
आज गया फिर जाग जहर ते मरा हुआ इतिहास, ईश्वर तेरी माया ॥
गाने की कला, दिल को दे हिला, गुरशरणदास महफिल में अलफाज लड़ रहे ॥४॥

तर्जः

चले थे योद्धा लड़ने को,
हे बली भीमसैन से बलवान ॥टेक॥
नन्दीघोष रथ को जुड़वाया, अर्जुन अपने हाथ सजाया,
लड़ने का साहस आया, रे बोलो हरे ॥
जब कृष्ण ने शङ्ख बजाया, सूखे सबके प्राण, चले थे योद्धा लड़ने को ॥१॥
रण का उमँग हिये में ज्यादा, सपने पूरण करण इरादा,
खडे हुए जैसे होर्वे कादा, रे बोलो हरे ॥
आगे आगे भीष्म दादा, दुर्योधन बेईमान, चले थे योद्धा लड़ने को ॥२॥
चले योद्धा गरज गरज कै, अपने बल को बरज बरज कै,
कायर गिरते लरज लरज कै, रे बोलो हरे ॥
अपने मुख तै आप बड़ाई नहीं करेगा विद्वान, चले थे योद्धा लड़ने को ॥३॥
गुरशरणदास कह कृष्ण कन्हाई, आगे बढ़ गे यदुराई,
दल अपने में टेर लगाई, रे बोलो हरे ॥
भीमसैन न्युँ कहता गरज कै, आज करुँ समाधान, चले थे योद्धा लड़ने को ॥४॥

पाण्डव वनवास यात्रा

तर्जः

पाँच पाण्डव छटी द्रौपदी रटते राधेश्याम गये ।
बियावान की घोर यात्रा ले ईश्वर का नाम गये ॥टेक॥
हिन्दू कुश पर्वत को देखा, देखा फेर बिलोचिस्तान ।
झेलम नदी चैनाव देख कर पहुँच गये थे फिर भूटान ॥
रावी नदी से पार हुए सतलज में करके स्नान ।
तीन दिना लाहौर में घूमे छोड़ दिया वा भी स्थान ॥
श्री नगर रङ्गून देखकर चले फेर आसाम गये ॥१॥
गये काठियावाड़ में पाण्डव तकते तकते पहाड़ चले ।
जो जो देश कदै ना देखे उन देशों को दहाड़ चले ॥
कलकत्ता बम्बई अम्बाला होते हुए बिहार चले ।
जितने दुष्ट मिले रस्ते में भीमसेन उन्हें मार चले ॥
ग्यारह साल हो गये घूमते सूज सभी के पाँव गये ॥२॥
देख आगरा और घाघरा फेर हैदराबाद गये ।
इल्हाबाद त्रिवेणी न्हाणे कर कृष्ण को याद गये ॥
गोदावरी स्नान किया फिर काजीपुर आजाद गये ।
मैहसूर और मद्रास को भइयो खाणा पीणा लाद गये ॥
अमेरिका से गये बिलायत तिब्बत और जापान गये ॥३॥
ग्यारह साल जब खतम हुई और साल बारवीं आगी थी ।
धर्मराज ने कठिन यात्रा फौरन सारी त्यागी थी ॥
भूल गये दिन देश सफर ने फिर छुपने की लागी थी ।
दुर्योधन के डर की चिन्ता भून भून कै खा गी थी ॥
गुरशरणदास जब लगी तेरवीं तभी विराट के धाम गये ॥४॥

॥दोहा॥

पुनः सुमर गुरुदेव को शारद को सिर नाय ।
कथा लिखूँ वैराट की, सन्तन से बल पाय ॥

तर्जः ये दुनिया है शौकीन बड़ी

कर दुर्योधन ध्यान भला, कीचक सा बलवान भला ।
है और कौन, कह रहे द्रोण, तुम हो जाओ सावधान भला ॥टेक॥
हाथिन के बल कीचक राखे वो कभी हार सकेगा ना ।
भीमसैन के बिना दूसरा, उसको मार सकेगा ना ॥
गया भाँड़ा फूट, मत जानो झूँठ, तू बात ठीक पहचान भला ॥१॥
बारह साल बनों में रह के काटे बेचारों ने ।
पूरी कर दी शर्त बहुत दुख ठाके दुखियारों ने ॥
ठा–ठा के कष्ट, किये दुख नष्ट, वो कितने हुए हैरान भला ॥२॥
उनका राज उन्हें दे दो थारी इसमें घणी भलाई ।
अबकै अर्जुन ना मानेगा, होगी विकट लड़ाई ॥
लौटा दो राज, कुछ कर लो लाज थारा के किया नुकसान भला ॥३॥
श्री कृष्ण से जिनके साथी, उसकी चोट झिले ना ।
घमासान हो जाय युद्ध, थारे ढूँढे माँस मिले ना ॥
गुरशरणदास तड़फेंगी ल्हाश, जब चलैं अर्जुन के बाण भला ॥४॥

तर्जः भरा मर्द का वेष

सुने गुरु के वचन, कर्ण लगे हँसन, बदन में फूल गये, ।
हो गुरू जी भूल गये ॥टेक॥
थारी होगी उमर जईफ तुम्हें डर उनके बाणों का ।
हम छत्री के अंश लोभ ना अपने प्राणों का ॥
थारी न्यौते खाणी जात, जरा सी बात, हो आग बबूल गये ॥१॥
दुर्योधन बहकाने में गुरु आने का नहीं ।
पञ्ज पर्ण का पक्का धोखा खाने का नहीं ॥
ना उनका अधिकार, वचन की मार, पार हो शूल गये ॥२॥
वैराट भूप की गाय घेरने सब दल जायेगा ।
अगर पाण्डवे हुए तो अर्जुन फौरन आयेगा ॥
ना हुई तेरह साल, करो जन ख्याल, जाल में क्यूँ भूल गये ॥३॥
दुर्योधन की गैल चलो सब खोज लगावेंगे ।
तेरह साल हुई ना पूरी बहस लड़ावेंगे ॥
गुरशरणदास तुम द्रोण पास, यूँ करके आस फिंजूल गये ॥४॥

तर्जः रिमझिम बरसता सावन होगा

अर्जुन का रथवान सै, बलवान सै, इसे सारथी बना ले ।
कौरवों से लड़कै अपनी गऊवें बचा ले ॥टेक॥
रथ हाँकै और लड़ेगा लड़ाई, जगत करै हिजड़े की बड़ाई ॥
अजमाई मेरी बात सै, करामात सै, तू फौज सजा ले ॥१॥
इसके दहशत कोन्या रण की, मदद करै सै हारे जन की ॥
दुर्योधन बेपीर की, खिँचे चीर की, उसे याद दिवा ले ॥२॥
शैलेन्द्री ने बात बताई, रानी ने उत्तरा बुलवाई ॥
समझाई हर वार सै, घणे प्यार सै, तू गुरू नैं मना ले ॥३॥
कैरों कर रहे गऊ हरण सै, फट जागी म्हारी राजधरण सै ॥
गुरशरण द्रोण विद्वान की, बेईमान की, माला मँगा ले ॥४॥

जबाब सवाल उत्तरा व अर्जुन

तर्जः म्हारे देश की इस फैशन ने

उ०– श्री गुरु महाराज, बचा लो मेरे पिता की लाज, शरण में मैं आगी ।
अ०– और मेरे लायक काज, बता दे उसे करुँगा आज, बात तेरे मुँह माँगी ॥टेक॥
उ०– पड़ी विपत जबर, आता ना सबर, एक बुरी खबर अभी आई,
सबकी तबियत मुरझाई ।
अ०– राजदुलारी, हमें बता री, के भारी विपदा छाई,
मेटुँगा मैं तेरी तभाई ॥
उ०– आई सेना अमित अपार, रही सीमा पै ललकार, विप्त सोती जागी ॥१॥
अ०– कहूँ खुलासा, करूँ तमाशा, ना रण रासा मेरे बसकी,
मुझे नहीं चाहना यश की ।
उ०– गई लिकड़ जान सी, हुई हान सी, ये बात बाण सी चसकी,
गुरू झूँठ माँठ की धसकी ॥
अ०– जो बसकी मेरे कार, उसे मैं करने को तैयार, नाच रँग के रागी ॥२॥
उ०– जाओ गुरु जन, करने को रण में है दुर्योधन बैरी,
जाने गाय सीम पै घेरी ॥
अ०– जा लिकड़ जान, तू सही मान, जब बाण चलेंगे जहरी,
तेरी अकल किधर नै बहरी
उ०– तेरी मर्जी का काम, थामना घोड़ों की लगाम, नाटे मत निर्भागी ॥३॥
अ०– ना लगे मिशल, जा बिगड़ शकल, जहाँ दल घोर अँधेरी,
वहाँ पेश चले क्या मेरी ।
उ०– ना झूँठ बात, अर्जुन के साथ, दिन रात लड़ाई गहरी,
तुम लड़े शैलेन्द्री कहरी ॥
अ०–गऊ सहरी दुख महान, अरे गुरशरणदास अज्ञान, क्यूँ सूरत मुरझागी ॥४॥

तर्जः साधु की झोली में

अर्जुन की राणी ने मन्त्र से कान शेर के खोल दिये ।
सूखे घाव हरे होगे और बोल चभो कै छोल दिये ॥टेक॥
खाक पड़ो उन पैरों पै जो रण से घर की ओर भगे ।
वो मर्द नहीं मुर्दे जाणों जो ठोकर खाके नहीं जगे ॥
दुश्मन होते नहीं सगे न्यूँ बजा वेद में ढोल दिये ॥१॥
खुले हुए बाल लहर रहे साजन, माँग रहे अपना कर्जा ।
हिजड़ा बनकर इकरार भूलगा सहम गया हृदय लरजा ॥
धनुष बाण का नरजा लेके ल्हाश द्रोण की तोल दिये ॥२॥
अर्जुन ने रानी की आँख से जब देखा पानी बहता ।
न्यूँ बोला धीरज धर प्यारी पिया तेरा तेगा गहता ॥
हीरा मुख से कब कहता तू लाख टके मेरा मोल दिये ॥३॥
सभा का बदला ना ले लूँ तो खाक पड़ो मेरे जीने में ।
गुरशरणदास जुए का नक्शा फेर चसक गया सीने में ॥
गुरू के गिरे पसीने में तू खून शिष्य का घोल दिये ॥४॥

तर्ज: देहाती चौकलिया

पीठ ठोक पुचकारे घोड़े माजुम दवा खवाई ।
वेद मन्त्र पढ़ दिया कान में घोड़े बने हवाई ॥टेक॥
चञ्चल चित के चोर बछेरे अदक पैर जब धरते ।
हींसैं खिँची लगाम जाण जण कला कबूतर करते ॥
ऊपर उठ नीचे उतरे जणैं बाज गिरा अम्बर ते ।
लगी तमाशा देखण उनका नार लिकड़ कै घर ते ॥
रथ को देख पड़े लम्बे जण सिँह तोड़ै अँगड़ाई ॥१॥
करै अचम्भा सखी बछेरे, हिज कैसे जोड़ैगा ।
रङ्ग मञ्च पै नाचणिया ये कुण से गढ़ तोड़ैगा ॥
हँसकै बोली एक सखी जब कर्ण बाण छोड़ैगा ।
साड़ी झीरम-झीर कूद के रथ से हिज दौड़ैगा ॥
ये घोडे रहे माँग सखी रजपूत सपूत सिपाही ॥२॥
शैलेन्द्री सुन रही खड़ी पड़ा बोझ पहाड़ सा गम पै ।
गई दलक पड़ गया नमक आज दिल के जले जखम पै ॥
अरे विधाता कौन सी स्याही धर कै तनै कलम पै ।
लिखी म्हारी तकदीर सदा से जुलम पड़े जो हम पै ॥
सूरज में अँधियारा कर जुगनू पै जोत जगाई ॥३॥
फिर देखा अर्जुन को मन में खुशी द्रौपदी राणी ।
पिया भुजा पै भैरों देखा कन्धे खड़ी भवानी ॥
आँखन में तस्वीर खींच रहे चीर नीचं अभिमानी ।
प्रलय तक भी दे देता जिसकी मजबूत जवानी ॥
गुरशरणदास कह जान गई पति बेहद लड़ैगा लड़ाई ॥४॥

तर्जः

लिया रण का बाणा पहर तुरत रथ जोड़ दिया ।
खैंची कस के डोर शोर घनघोर हुआ रथ छोड़ दिया ॥टेक॥
ना देखा औघट घाट चला, रथ बाट का ख्याल नहीं ।
उत्तर भी घबरागा इतनी पवन में चाल नहीं ॥
चढ़ी गगन में धूल, चला जण फूल, हवा ने जो तोड़ दिया ॥१॥
तब देखा उत्तर ने दल, जण बादल चढ़ा गगन में ।
रथ को फेर हीजड़े उल्टा जँग ना बसकी रण में ॥
ना अर्जुन किया विराम, तों उत्तर पकड़ी अश्व लगाम, वो हाथ मरोड़ दिया ॥२॥
अर्जुन बोला रथ मेरा कदैं छूटे पाछे रुकता नां ।
चाहे सन्मुख यमराज मिले पर कदै हीजड़ा झुकता ना ॥
जब ना सुनी पुकार, तो रथ से कूदा विराट कँवार, वो घर को दौड़ दिया ॥३॥
गुरशरणदास अर्जुन ने कूद के घेर लिया जाके पथ में ।
मुश्क बाँध के उठा लिया और गेर दिया ल्या के रथ में ॥
अर्जुन दे एलान, धरे जहाँ शमी वृक्ष पै बाण, उधर रथ मोड़ दिया ॥४॥

तर्जः मैं ढूँढता हूँ तुझको

कह दो तो इसको तारूँ मेरा हाथ है जिस बाण पै ।
मेरी खैंच ना झिलैगी सहदेव की कमान पै ॥टेक॥
देख लो फिर इससे आगे खिँचे जामें सोने के धागे ।
नकुल के ये सौदे पागे, बाण मैंने अर्जुन के माँगे ॥
दो तार जिसमें लागे वो ही धनुष अब थान पै ॥१॥
अनोखी दुनिया तै न्यारी धर्म की सामग्री सारी ।
गदा एक पर्वत ते भारी हिलै ना सब ताकत हारी ॥
ये भी की पियारी जैसी थी कभी हनुमान पै ॥२॥
खिँचा जामें बज्जर का धागा धनुष अब वो सामी आगा ।
धनुष गाण्डीव तुझे पागा, यही है जो मैंने माँगा ॥
फुङ्कारते हैं नागा खतरा है मेरी जान पै ॥३॥
नाम दस अर्जुन के ले ले फेर रवि मन्त्र को कह ले ।
गुरशरणदास चेले लगा दे नहले पै दहले ॥
तू तारने से कुछ ध्यान दे गुरु ज्ञान पै ॥४॥

तर्जः छोड़ के मैं सारी दुनिया

कुन्ती का सुत अर्जुन हूँ मैं तू बेशक रथ पै चढ़ जा, गदर मचाउँगा मैं,
आज बहाउँगा मैं खूनों के दरिया ॥टेक॥
एक साल थारे नगर में बस कै हमने किया गुजारा ।
तन, मन, धन अर्पण हो जा फिर भी एहसान तुम्हारा ॥
काँप उठे रण मण्डल सारा, कवच कड़क दे फट जा, वो बाण चलाउँगा मैं,
आज बहाउँगा मैं खूनों के दरिया ॥१॥
कौवे, गिद्ध, सियार, पखेर, माँस चखेंगे ताजी ।
उतरा की गुड़िया सजवा के उसे करुँगा राजी ॥
शकुनी छलिया बाजी बद के, पौ की गोट सटकजा, वो दाव सिखाउँगा मैं,
आज बहाउँगा मैं खूनों के दरिया ॥२॥
आज दिखाई देंगे रण में खून के नाले बहते ।
एक शेर की गर्ज सुने ते स्यार लाख ना रहते ॥
भीषम दादा न्याव की कहते अधभर जीभ अटकजा, वो हलक हलाउँगा मैं,
आज बहाउँगा मैं खूनों के दरिया ॥३॥
आज नशे उतरेंगे रण में मद से मतवालों के ।
रण में लङ्गर बिछैं भागमल, बाणों से जालों के ॥
गुरशरणदास सुनने वालों के दिल में बोल खटक जा, वो हरफ बनाउँगा मैं,
आज बहाउँगा मैं खूनों के दरिया ॥४॥

तर्जः हाय शरमाऊँ

सुन ध्यान से सुनाऊँ, आज खोल के बताऊँ,
दस नाम समझाउँ तुझको, करुँ सूँ तुझसे प्यार मैं ।
अर्जुन हूँ जनम से, नाम सब मिले करम से, नामी संसार में ॥टेक॥
नाम है पारथ भी मेरा, और है भारत का बेरा ।
दिलाया इन्दर को सेहरा, किरीटी नाम तभी गेरा ॥
मेरा नाम धनञ्जय, पा लिया करम से, कुबेर जी की हार में ॥१॥
बाण ले दोनों हाथ में, मारूँ बैरी के गात में ।
सत्य साँची इस बात में, लड़ूँ एक सा दिन रात में ॥
साथ में हनुमान है, कपिध्वज न्यूँ ही नाम है, रथ पै सवार में ॥२॥
गुरू का पर्ण पूर्ण किया, नाम वीभत्स न्यूँ ही लिया ।
साथ श्री कृष्ण ने दीया, गुड़ाकेशी शुद्ध हिया ॥
श्वेतबाजी है दशवाँ, श्वेत रण चङ्क कसवाँ, घोड़े रखूँ चार मैं ॥३॥
नाम दस जाणे जग सारा, बतावें नाम कोई बारा ।
है फाल्गुनी ग्यारा, बारहवाँ वनखण्डी न्यारा ॥
म्हारा फर्ज यही है गुरशरण सही है जो व्यास के विचार में ॥४॥
नाम और दिव्य अस्त्र प्यारे, मिलें हैं देवों से सारे ।
आज गुरशरणदास गारे नाम के लोभी बिचारे ॥
चाह रे काग भी पिस्ते, अङ्क पर बदल ना सकते, लिखे जो लिलार में ॥५॥

तर्जः हमने गाँव के पनघट पै

एक रोज जुए का दाव सजाया, हमने अपनी नार से ।
उसी दाग को मैं धोऊँगा, आज खून की धार से ॥टेक॥
वहाँ बन्धन था यहाँ पर बण है । वहाँ पर धन था यहाँ तन मन है ॥
वहाँ धर्मज था यहाँ अर्जुन है । वहाँ सेवक था यहाँ दुश्मन है ॥
वहाँ हँसी का शोर हुआ, यहाँ कान फटे ललकारों से ॥१॥
वहाँ मण्डप था यहाँ रणथल है । वहाँ महफिल थी यहाँ पर दल है ॥
वहाँ गोटें थी यहाँ भुजबल है । वहाँ स्थिर थे यहाँ चञ्चल है ॥
वहाँ सभा में चीर खिँचे यहाँ माँस कटे तलवार से ॥२॥
वहाँ मूढ़े थे यहाँ पर रथ हैं । वहाँ छलिया थे यहाँ पर सत है ॥
वहाँ अनरथ था यहाँ शुभ पथ है । वहाँ दुर्गत थी यहाँ शुभ गत है ॥
वहाँ फैसला पञ्च करैं यहाँ न्याय जीत और हार से ॥३॥
वहाँ खेले थे यहाँ लड़ते हैं । वहाँ डरते थे यहाँ अड़ते हैं ॥
वहाँ बैठे थे यहाँ करंते हैं । वहाँ हारे थे यहाँ मरंते हैं ॥
गुरशरणदास कलङ्कित छत्री होता इस जीवन के प्यार से ॥४॥

तर्जः जब चले ठण्डी हवा

शेर गफलत में पड़ा आज वो होगा खड़ा,
दुर्योधन के सीने का खून पीउँगा ॥टेक॥
तू हिम्मत से काम ले, मत भगणे का नाम ले ।
रण में लड़ूँगा मैं तू रास थाम ले ॥
भीषम की बहकी हवा, उसकी है मुझ पै दवा, अपनी लाज खोके मैं कैसे जीउँगा ॥१॥
मेरे याद सभा का चीर है, साथी अर्जुन वीर है ।
लाखा मन्दिर की मेरे हिरदय में तस्वीर है ॥
उनके जुल्मों की घटा, उन्हीं को देगी मिटा, मैं तो अपने घाव आज रण में सीउँगा ॥२॥
ध्यान धरा भगवान पै, और धर लिया तीर कमान पै ।
सन्देश मेरा कह दे तू गुरू द्रोण के कान पै ॥
सर सर करता साँप सा, बाण चला मग नापता, सावधान हो जाओ आज मैं बदला लेउँगा ॥३॥
सुनो सभी बलवान ये, अर्जुन का ऐलान ये ।
तुम आज नहीं बचते न्यूँ कहके गिरग्या बाण ये ॥
गुरशरणदास अर्जुन चला, द्रोण का हिरदा हला, करो कर्ण को सम्मुख आगे मैं ना रहुँगा ॥४॥

तर्जः लँहगा मँगा दे मेरे बाबू

आज तो लजाते मेरे दादा, शरमाते बैरी गन्दे ख्याल से ।
याद नहीं है क्या वो वादा, जो शर्तें ठहरी पूछो भूपाल से ॥टेक॥
मरगे पिताजी थारी गोदी में डाल के ।
आपने पटक दिये नीचे ऊपर उछाल के ॥
डाल के पपीते कच्चे, फूल जैसे सुथरे लच्छे, बच्चे सभी थे
माँ थी सादा तू चूका पहरी अपनी सँभाल से ॥१॥
थोड़ा राज अंश दिया सुधरी ना उनकी मति ।
जुएं में हराये छल से, जुल्मों की होली अति ॥
द्रौपदी पै कर दी तङ्गी, जणै कौल भीम भङ्गी, नङ्गी किये का रादा,
सब दुनिया कह रही भारी मलाल से ॥२॥
जहर दिया बैर बढ़ा लाखा की आग से ।
द्रौपदी स्वयंवर जीता हमने अपने भाग से ॥
आपने बुलाया आजा, न्यूँ ही बोला अन्धा राजा, साजा बटेगा थारा आधा,
मिटे चिन्ता गहरी रोज के बवाल से ॥३॥
गुरशरणदास कह आज फुकोगे अपराधों की माँग में ।
जितना पिलाया दूध जहर बढ़ा नाग में ॥
भागमल तू है मर्दाना, एकला भी गा ले गाना, गाना जचेगा तेरा ज्यादा
बढ़े रङ्गत लहरी चेला शीशपाल से ॥४॥

तर्जः दुनिया में तेरा है बड़ा नाम

आज सुनो सब धर के ध्यान, कुन्ती के सुत का ऐलान,
मेरी छाँह छुए तो जानूँ, मानूँ उसे बलवान ।
बाण लगे तो भगवान शपथ धर फूकूँ तीर कमान ॥टेक॥
शोला बणगे अपराधों के, हरप निमट लिये फरियादों के ।
अब गज टूटे थारे वादों के, डगमग पग हुए बुनियादों के ॥
थारे रादे ना होंगे पूरे, पड़े रण में दाव अधूरे, आज खेत बणे श्मसान,
ज्वान करेंगे कला गगन में, कटी पतङ्ग समान ॥१॥
एक तरफ वो विष हए रण में, दिया जो भीम को बालेपन में ।
तरफ दूसरी आग गगन में, लगा दई तुम लाखा भवन में ॥
थारे तन पै मारगी चोटें, छल भरी जुवा की गोटें, ये बनके तेज कृपाण,
गल घोटे थारा चीर सती का, पग तोड़े अपमान ॥२॥
खुले हुए बाल सती के सर के, कह रहे न्यूँ गुस्से में भर के ।
आज रूप हम भय का करके, बैरी के दिल पार उतर के ॥
जो डरके भगै समर में, वाकी झूलै ल्हाश अधर में, और काँप उठे असमान,
एक तरफ कुन्ती के आँसू, फिर पारथ के बाण ॥३॥
चारों दिशा मौत ने घेरी, देख लई थारी बाट भतेरी ।
जितनी तुमने आग बखेरी, फूँक करे तुम्हें राख की ढ़ेरी ॥
मेरी फेर नमस्ते ले लो, होशियार फाग रण खेलो, गुरशरणदास जय ज्वान,
मएदान देख कवि ज्ञान भूलगे, कविता हुई हैरान ॥४॥

तर्जः तेरे मन की जमुना और मेरे मन की गङ्गा

जब कोपा अर्जुन रण में, जण शेर भभक रहा बण में,
केहरी छुटा जो अब तक जेल में रहा ॥टेक॥
रथ को हाँक अगाड़ी कर दे, जहाँ दुर्योधन बैरी ।
कुन्ती का सुत जाग गया, लगी घाव पै गहरी ॥
चले जहरी बाण गगन में, जण बिजली चमके घन में,
हिजड़े के तन में जोश जाग रा नया ॥१॥
हाहाकार मची रण में जब द्रोण कर्ण से घिरगे ।
भीषम दादा घायल होगे, पीठ दिखा के फिरगे ॥
गिरगे मुरछा खाके, कुछ भागे मुँह दुबकाके,
चौदहवें वरष में तेगा कोप के गया ॥२॥
कर सबको बेहोश सुभट ने करी सलामी रण की ।
दुर्योधन का ताज उतारा माला द्रोण करण की ॥
दई भेंट धरन की प्यासा, कर रण के बीच तमाशा,
वीरतापणे का नक्शा जाता ना कह्या ॥३॥
गऊवों की खातिर पारथ ने मेहनत जबर करी थी ।
जीत हुई उत्तर की रण में ऐसी खबर करी थी ॥
गुरशरण काम किया बढ़ के, सब देखैं कोठे चढ़ कै,
कौरवों से जींत होगी राम की दया ॥४॥

तर्जः पैसा फेंको तमाशा देखो

सभासद बोलो, मुशाहिद बोलो ॥
मेरे कँवर की जय आज बोलो, खुशियाँ हैं सारा संसार बोलो, ।
होगा हमारा मनोरथ सफल, मेरा बेटा है वीरों का ताज बोलो ॥टेक॥
महलों में सजवाई आरते की थालियाँ ।
सबने खुशी मनाई गावैं बाजैं तालियाँ ॥
डाली पै कोयल का राज बोलो, शेरों का करके मिजाज बोलो,
मेरे बेटे ने रण में पछाड़ा धवल, खोला है दिल का मिजाज बोलो ॥१॥
रङ्ग इतर खुशबोई घर-घर में महकाई ।
राजमहल के आगे इन्द्रपुरी शरमाई ॥
काही पै सोने का ताज बोलो, था न कभी अन्दाज बोलो,
हैरत में लोगों की होगी अकल, जीता है मेंढक ने बाज बोलो ॥२॥
चौक के चबूतरे चौपड़ें बिछवाई ।
खेल के खिलारियाँ बाजियाँ लगवाई ॥
कहीं लुटता है मुफ्ती अनाज बोलो, बटते हैं कपड़े बजाज बोलो,
बैठे हैं पाण्डव की सुस्ती शकल, मिला पिया ना मेहनत का ब्याज बोलो ॥३॥
शहर के निकास पै सैकड़ों की टोलियाँ ।
गूँजती गगन में जय जय जय की बोलियाँ ॥
डोली में नखरा जहाज बोलो, गाने में क्या है लिहाज बोलो,
गुरशरणदास देवै ना दखल, मिलके जो एक ही आवाज बोलो ॥४॥

जबाब द्रोपदी का युधिष्ठिर से

तर्जः नफरत की दुनिया को

शरमाये क्यूँ बैठे हो, शेर जेरों के साये में,
हो लिए तेरह साल ॥टेक॥
जब दर्द पड़े हल्का सा, फिर घाव रगड़ खाते हैं ।
जब समय जागने का, थारे दाव बिगड़ जाते हैं ॥
बाग उजड़ जाते हैं पवन के झोके झाये में, रहते हैं रङ्ग मलाल ॥१॥
एहसान विराट का मानूँ, अन खाते पीते हैं ।
गई फूट हिये की क्यूँ, ये गीदड़ कब रण जीते हैं ॥
शर्त के सब दिन बीते हैं, धरा के बात छुपाणे में, खोल दो शेर विपत के हाल ॥२॥
थारे भुजबल टूटे कोन्या, ना डोर गली धनुषन की ।
ऐसी दिल पै छाप पड़ी क्यूँ, तुम्हें दहशत दुर्योधन की ॥
याद नहीं चीर हरण की, शर्म से मुँह दुबकाये में, सर्प का हार रहे गल घाल ॥३॥
गुरशरणदास तुम कह दो, ये करतब है अर्जुन का ।
तेरा पूत पीठ देग्या, जँग छोड़ सुशर्मा रण का ॥
जहाँ जालिम बाण कर्ण का, हरण गऊ धरन हलाये में, वहाँ क्या करता तेरा लाल ॥४॥

तर्जः मेरा रँग दे बसन्ती चोला

माँ कर दे आरता हीज का ॥टेक॥
इस हिजड़े ने जेर जाम की, शेर बनाया खेत में ।
बल के आगे दल ना ठहरे, सबै बताया खेत में ॥
आज खेत में मान बढ़ाया उत्तर बेतमीज का ॥१॥
जिस दम शङ्ख बजा के हिजं ने, देखी अर्णा मैदान की ।
कैरों के तरकस टूटे और उतरी आब कमान की ॥
आसमान की रुकी रोशनी वेग रुका हर चीज का ॥२॥
ये हिजड़ा मरवा दे मुझको था मैं इस अन्दाज में ।
रथ से कूद भगा उल्टा था, इतना बेलिहाज मैं ॥
दुर्योधन के आज ताज पै नाचा बाण अजीज का ॥३॥
गुरशरणदास कहे साँच कहूँ माँ है अर्जुन बलवान ।
इनके हरदम ऋणी रहेंगे कर आये कल्याण ॥
दे आये ऐलान ना छोड़ै नाम कलह के बीज का ॥४॥

महाभारत अभिमन्यु विवाह ६

उद्योग पर्व – अभिमन्यु विवाह

॥ दोहा ॥

अलख, अजन्मा, अजित, वर, अतनु, अमल, अखिलेश ।
सञ्चित, सनित, सत, सजग धर संसत सर्ग सशेष ॥
सलख, सजन्मा, सजित, नर, सतनु, समल, सखिलेश ।
जनक, जन्म अति भिन्न यों गुरशरण जगत निःशेष ॥
बिल विचार गज सुण्ड में घुसन लगे जब साँप ।
भ्रम भयो काली ऊख का उठा लिया गज आप ॥
नाग दबाया दाढ में सर्प जीभ डसि दन्त ।
दोनों को भ्रम हो गया शीघ्र हुआ तिन अन्त ॥
सत्य सोऽहं मिथ्या जगत यह जाकी परतीत ।
सो पावत जगदीश को अन्य बात अनरीत ॥
बन्दौं प्रथम गुरु चरण औषधी नेत्र सुधार ।
दिव्य दृष्टि लगि धूल ते सत्यासत्य विचार ॥
शिव विष्णु ब्रह्मा तथा गणपति शक्ति दिनेश ।
पञ्च देव बन्दौं सदा कृपा करत महेश ॥

॥ कवित्त ॥

सत्य क्या असत्य क्या है, ज्ञानवान जाने कोई,
मैं हूँ अनजान तेरे नाम का पुजारी हूँ ।
वेदन के भेद को जानें कोई पण्डितान,
मूर्ख महान हूँ अमित पापधारी हूँ ॥
जग परपञ्च का ना नेक दुख रञ्ज मुझे,
अन्धन के मञ्च पै मैं पञ्च बड़ा भारी हूँ ।
कह गुरशरण चरण में अखण्ड नेह,
ये ही है घमण्ड कि मैं शरण तुम्हारी हूँ ॥

तर्जः

बड़े खुशी की बात पिया जी अभिमन्यु का ब्याह कर ले ।
रथं ते उतर बहू चालैगी घर बैठन का राह कर ले ॥टेक॥
मीन मार कै मैं ब्याही थारा कोई धूणे में कण्डा था ।
अब मौसम बड़ा गर्म पिया जी जब मौसम कुछ ठण्डा था ॥
समझावनिये व्यास मुनि और धौम्य पुरोहित पण्डा था ।
माने ना दिया गाड़ सभा जुवा खेल का झण्डा था ॥
पड़ा बन्दरों में डण्डा सब बैरी बसे निगाह कर ले ॥१॥
बेटे का ब्याह सुन के कोई माँ होती है नहीं खफा ।
मानस ही पै हुया करै सै दुख सुख टोटे और नफा ॥
एक बात से बुरी लगूँ मैं खरी बात नै कहूँ सफा ।
धर्मराज ते बूझ लिये हाथी के पाँव में सबका पाँ ॥
कदै बहू नै दा पै धर कै फिर शुकनी ते हाँ कर ले ॥२॥
सच पूछो तो बेटे का ब्याह देखन को मेरा मन भटकै ।
बेरा ना कुण मरै जिवै कल कैरों बीच खड़ग खटकै ॥
रोज खून का करें तकाजा सूखे बाल खवा लटकैं ।
एक दिन होगा भीमसैन बैरी की पकड़ भुजा झटकै ॥
मैं ब्याह में असगुन करूँ ना नटके धौला कर चा स्याह कर ले ॥३॥
गुरशरणदास वो पतँग चढ़े ना जिसकी डोरी खिँची हुई ।
भले बुरे नै के जाने जांकी आँख नशे तै मिची हुई ॥
नहीं बचेगी जान फाख्ता बाज के पन्जे भिची हुई ।
बेल अमरफल ना देवेगी जो लौहू ते सिँची हुई ॥
होवेगी जो रची हुई तू किरषण गैल सलाह कर ले ॥४॥

तर्जः

आ गये श्याम सुना राणी ने शिथिल अङ्ग दिल डोल गया ।
बाँके बिरज सुखद अभिनन्दन आँखों में जल बोल गया ॥टेक॥
तेरह वर्ष बाद दिये दर्शन, तेरी जय जय हो श्री कृष्ण ॥
भगतों का तन मन धन अर्पण धर्म डोर पै तोल गया ॥१॥
तुम बैठे सुख दूर देश में, मैं बैठी दासी के भेष में ॥
खुश्की छा रही खुले केश में पाप हमारा खोल गया ॥२॥
दूखे जखम घणे दिन होगे, अब मेरे ते जाय ना भोगे ॥
अब हम रहे ना जीवन जोगे घावों में विष घोल गया ॥३॥
गुरशरणदास सुनो शरणागत की, टूटन लगी डोर अब सत की ॥
हद होगी मानव दुर्गत की पिट दुनिया में ढ़ोल गया ॥४॥

तर्जः

धीरज धर दुख में ।
होय दर्द का अन्त पवन अब सरक जागी रुख में ॥टेक॥
देउँगा जबाब थोड़े दिन में सवालों का ।
मजमाँ लगा है मेरे दिल में खयालों का ॥
तेरे रोवते मलालों को अब बदलना है सुख में ॥१॥
ब्याह बेटे का कर ले जल्दी जमेगी लड़ाई ।
आ गया है मौसम होगी रोग की दवाई ॥
होगी मन की चाही कौरव काल के हैं मुख में ॥२॥
एक दिन था जब तू उनके मञ्च का खिलौना थी ।
तुमको दर्द था उनको आफिया सलौना थी ॥
पीना भी पड़ेगा पीड़ा आँगुरी के नुख में ॥३॥
गुरशरणदास कह मानो मेरी सल्हा है ।
बदला चुकायें तुमको जुवे में छला है ॥
कवि की कला है उसकी कविता के तुक में ॥४॥

सुभद्रा उवाच

तर्ज़ः

वो दासी मैं पीहर में उड़ै माँ टुकड़े खाकर पलती ।
कड़ै ठिकाना ब्याहली का जांने लेकर जनम करी गलती ॥टेक॥
ब्याह में भाट बखानेंगे ये हैं भट बहू नचावनिये ।
जुए के दाव पै धर कै नारी अपनी लाज बचावनिये ॥
स्यार तै डर कै छिपे शेर बण शून्य में रौब जचावनिये ।
बड़े बहादुर छत्री हैं बैरी की बात पचावनिये ॥
हवा में महल रचावनिये नित बैर की आग हिये जलती ॥१॥
यहाँ तेल में उबटन हो वहाँ लटकै बाल खुले प्यासे ।
मम हृदय में चोट लगे जब बाजे खुशियों के ताशे ॥
एक लाज लुटवा बैठी कुछ मौज करैं चङ्ग खासे ।
बहू भरम में मर जागी जो जुड़ैं जुए के फिर पासे ॥
जनवासे में चौपड़ होगी पावें तुम्हें गोट चलती ॥२॥
वो बेटे का ब्यांह करै वहाँ कैरों सज रहे रण को ।
पाण्डव पङ्गु हुवे लड़ै ना वो भाग गये फिर कै वण को ॥
फेरे पड़ैं दुल्हा के द्रोपदी याद करेगी उस छण को ।
साड़ी खिँची केश झटके और नगन करण लागे तन को ॥
दुःशासन को भूल गये दिन बीते आब रोज ढ़लती ॥३॥
सुत का ब्याह रचन लागे सर दुबकावन को घर ना है ।
मैं पूछूँ वो कहाँ बसंगे जब धरती तिल भर ना है ॥
सुनो कन्हैया टूटी नाव में पाँव हमें ना धरना है ।
डूबैगी जब भरे धार में बिन आई ना मरना है ॥
गुरशरणदास ब्याह करना है तो होणी उन्हें फेर छलती ॥४॥

कृष्ण उवाच

तर्जः

पागल हुई बावली कैसी प्यार में ए जी हो ।
हार बणै गल हार विजय छिपी हार में जी हो ॥टेक॥
एक दिना यहाँ जङ्ग होगा, आहूति में अङ्ग होगा ॥
इसा ढङ्ग होगा, लाल धरण का रङ्ग होगा,
लहू की भार में जी हो ॥१॥
डोल रहे बाहर घर ते, जनमत को हक में करते ॥
वो ना डरते, फूल खिला करते,
हैं तीखे खार में जी हो ॥२॥
चिन्ता सुभद्रा क्यूँ करती, मौत सबै एक दिन चरती ॥
दुख भरती धरती दबी कर्हा,
रही दुख के भार में जी हो ॥३॥
तू बेटे का ब्याह करले नाम चलन का राह कर ले ॥
हाँ भर ले गुरशरणदास कौरव मर लें,
दिन चार में जी हो ॥४॥

तर्जः बाढ़ी आरे की तेज बना दे धार

ब्याह की सुन के बात कुन्ती मगन सी हो ली ॥टेक॥
खुले केश निर्भाग भेष मुख खाल सुकड़ जीरण होगी ।
अभिमन्यु का ब्याह सुन के एक नई उमँग उस क्षण होगी ॥
बिसर गई सुध देह मात सुत ममता में अर्पण होगी ॥
काँप गया एक साथ गात जब बात पुरानी याद हुई ।
चन्द्रवंश की महारानी मैं अब कितनी बरबाद हुई ॥
लाज गई जयदाद लुटी घर सभी भङ्ग मर्याद हुई ॥
ब्याहली का डोला कित उतरै ज्यूँ माँ मन में बोली ॥१॥
कौरव अपने दुश्मन बणगे मुझे सदा ते कहर दिया ।
अङ्ग देश पर झगड़ा कर दिया भीमसेन को जहर दिया ॥
पता नहीं अपराध कौन सा जिस पर इतना बैर किया ॥
फिर भी रही खुशामद करती सभी बुराई त्याग दई ।
पाण्डव वंश नष्ट करने को फिर लाखा में आग दई ॥
फिर भी किया फैसला मैंने धर पैरों में पाग दई ॥
जुवा का नक्शा याद हुवा तब फिर धरती सी डोली ॥२॥
फिर सोचा कुन्ती माँ ने इस ब्याह में विघन करेंगे ये ।
शुकनी सौवल करण सुशर्मा नाश की नींव धरेंगे ये ॥
मार्ग में कहीं युद्ध रोप के रही सही लाज हरेंगे ये ॥
हिड़की बँध गई वीराङ्गनी की जहर मिले तो खाऊँ मैं ।
धरती माँ मेरी लाज राख ले फट जा आज समाऊँ मैं ॥
आजा मौत ब्याह से पहले तेरी गोदी में चढ जाऊँ मैं ॥
सङ्कट में फँसगी महारानी तर्क उठे मति मोह ली ॥३॥
एक दिशा में खुशी खड़ी और एक दिशा में मातम था ।
दो पाटों के बीच कहर में भिँचा हुआ उनका दम था ॥

तर्जः

पापियों का घेरा गिरग्या, सूर्य पश्चिम को फिरग्या ।
लोभ का अँगारा गिरग्या बाग में, हो केहरी फुकणा पड़ेगा जलती आग में ॥टेक॥
मैं चाहता तो आग उसी दिन आँचल से बुझ जाती ।
सतउ नगन हो रही बैठगे हम कर घूँघट गाती ॥
हाथी तुरङ्गो कि पावर थमगी, जीभ तालवे में जमगी,
बढ़ता चलागा विष न्युँ नाग में ॥१॥
रोती रहगी लाज एक दिन सुनी ना कोलाहल में ।
सर्वग्रहण हो जाय वंश इस चक्रव्यूह के छल में ॥
तल में तलातल रसातल थल में, अतल में वितल में जल में,
फेर कै लगेगी स्याही दाग में ॥२॥
बाँस की बाढ़ लगा दी मैंने, बाग खून ते सींचा ।
लोभ हवा ते वंश पजर गया, फुँक रह्या आज बगीचा ॥
नीचा देख रह्या निकम्मा माली, गुलों को सटक रही काली,
डाली का पतझड़ होगा फाग में ॥३॥
गुरशरणदास कह न्याय छनेगा, धर्मराज के छनने ।
जा अभिमन्यु तेरी वीरता, पुकारेंगे पन्ने ॥
नन्हें बालकों की आरत शिसकन, नारियों के दिल की धड़कन,
होगा वही जो लिखरा भाग में ॥४॥

तर्जः

लेता जा इतिहास गैल सुत याद आज के सी कहानी है ।
दहला जावे गात बात यो पन्द्रह साल पुरानी है ॥टेक॥
एक दिना हतिनापुर में भूपालों का जमघट था ।
राज बड़ा या लाज बड़ी इन दो बातों में झञ्झट था ॥
चन्दा कुल की नगन सती मर्दों के मुँह पै घूँघट था ।
राज डोर थी कर्ण के कर में सञ्चालक शकुनी शठ था ॥
गाय उसी की जिसपै लठ था पञ्चों को लाभ ना हानी है ॥१॥
हिड़की दे रो रही द्रोपदी बाल सती के लटके थे ।
दुर्योधन रहे जाँघ दिखा दुःशासन साड़ी झटकै थे ॥
गुरु दादा की जीभ टूटगी हरफ हलक में अटकै थे ।
अम्बर तकैं किरौदें धरती और मर्द थूक नै सटकै थे ॥
विदुर खड़े सर पटकै थे इन्साफ मरा हैरानी है ॥२॥
सुनी ना धर्म पुकार किसी ने सती का सत न्यूँ डोल गया ।
अद्भुत शक्ति पैदा होगी काँप सभी भूगोल गया ॥
सर सर चीर खींच रे दुश्मन बदल तुरत माहौल गया ।
चीर शरीर ते अलग हुआ ना करके समय मखौल गया ॥
सती का सत न्यूँ बोल गया लट खून के बीच डुबोनी है ॥३॥
मेरी कोख तै जन्म लिया मेरे शेर चला जा तू छुट के ।
बैठी जेठी बहन आस में बैरी के कर ते लुट के ॥
जो ना हुआ प्रण पूरा वा मर जागी फिर घुट घुट के ।
क्षत्रियों का विश्वास सदा तै चला जाय जग तै उठ के ॥
गुरशरणदास चले बेखटके जगने का नाम जवानी है ॥४॥

महाभारत
सन्धि प्रस्ताव

तर्जः

कुछ मित्र भूप कुछ सम्बन्धी एक सभा जुड़ भारी ।
भाषण दिया युधिष्ठिर ने कही सत्य कथा सारी ॥टेक॥
धृतराष्ट्र अग्रज थे अनुज थे पाण्डू पिता हमारे ।
नेत्रहीन विकलाङ्ग ताऊ जी थे सबको प्यारे ॥
समय हुआ लिए बोल राजनीतिज्ञ बड़े भारे ।
नेत्रहीन राजा ना बनै न्यूँ नाट गयें सारे ॥
किया राज अभिषेक पाण्डू को भीषम की लाचारी ॥१॥
पाण्डू कुन्ती से तीन पुत्र हूँ बड़ा युधिष्ठिर मैं ।
सुनता हूँ कि मेरे जन्म से दुख हुआ घर में ॥
गन्धारी से हुआ सुयोधन कुछ दिन अन्तर में ।
राज लोभ के त्याग की शक्ति नहीं होती नर में ॥
बहुत युद्ध किये विजय पिता प्रसिद्ध धनुषधारी ॥२॥
समझ गये मेरे पिता शोक है भाई के मन को ।
बिना ताज का राज सौंप कर चले गये वन को ॥
वहाँ पिता का मरण हुआ अभिशाप लगा उनको ।
दिया भीम को जहर गये हम बालक खेलन को ॥
आया भीम लौटकर जब थी बरषी की त्यारी ॥३॥
आग लगा दई फूकण को वह लाखा का घर था ।
जान बची हम निकल गये म्हारा साथी ईश्वर था ॥
लई ब्याह द्रोपदी पार्थ भेदकर मीन स्वयंवर था ।
छल किया जुवे में हरा दिये शठ शुकनी बेहतर था ॥
गुरशरण करैं सोई यतन कहो जो होय सल्हा थारी ॥४॥

तर्जः

आपदा युधिष्ठिर की सुन भूपालों में शोर ।
गर्जना थी ऐसी जैसी बादलों में घोर ॥टेक॥
बोल उठे दुर्वाद भूप धृतराष्ट्र के लिए ।
ऐसा ना अन्याय उचित सम्राट के लिए ॥
सब काम किये प्रतिकूल, है अन्धा भूप पाप का मूल,
निरङ्कुश निलज्जा कठोर ॥१॥
कई एक भूपाल धर्म को कायर तक कहते ।
क्षत्री के घर जन्म लिया क्यूँ डोलैं दुख सहते ॥
रहते जब तक अस्त्र हाथ में, चलती वायु प्राण गात में,
खर्चो बाजुओं का जोर ॥२॥
कहता है इतिहास सदा पौरुष से मिले धरती ।
क्षत्रिन का पी रक्त धरा की प्यास बुझा करती ॥
शक्ति झुका नहीं करती है, जैसे रुका नहीं करती है,
उफने सागर में हिलोर ॥३॥
गुरशरणदास इस तरह सभा के बीच कोलाहल था ।
कोई हद्द से कहे किसी के भीतर में छल था ॥
कल को चलो सजाकर दल को, कुचलो चल कैरों के दल को,
कह रहे धैर्य बटोर ॥४॥

द्रुपद उवाच

तर्जः

कहने लगे नरेश द्रुपद बिन विग्रह राज मिलैगा ना ।
बादल में चाहे अमृत हो पर नभ में फूल खिलैगा ना ॥टेक॥
राज-ताज सिँहासन के लिए लोभ त्यागिए प्राणों का ।
रण का प्राङ्गण क्रीडास्थल होता वीर जवानों का ॥
करता है इतिहास हमेशा मूल्याङ्कन बलिदानों का ।
दिखला दो दुश्मन को रण में करतब अपने बाणों का ॥
मिलै ना जब तक राज कि जब तक दुश्मन दर्प हिलैगा ना ॥१॥
खैंच प्रतञ्चा बाण सँभालो रण वेदी के स्वागत में ।
विजय-पराजय, हानि-लाभ की चर्चा नहीं क्षत्री व्रत में ॥
न्याय में जीना न्याय दिलाना यही लक्ष जीवन पथ में ।
हथिनापुर पर करो आक्रमण सफल यतन मेरे मत में ॥
महालक्ष्मी प्रकट ना होगी जो सागर नीर बिलैगा ना ॥२॥
धन्य धन्य कहा विराट भूप ने इसी पक्ष में अर्जुन था ।
बोल उठे सहदेव नकुल विग्रह के लिए उनका मन था ॥
अन्य सभी महिपालों का भी युद्ध के लिए समर्थन था ।
उछल पड़ा था भीमसैन इन्दर के बज्र सम गर्जन था ॥
बहुत दुखी हम धर्मराज की अब अवसाद झिलैगा ना ॥३॥
काँप रहा पाण्डाल नृपों के ओजस्वी भाषण से ।
युद्ध पक्ष में बोल रहे सब उठ उठ कर आसन से ॥
शीघ्र मुक्त कर देओ देश को अन्धे के शासन से ।
पीड़ित सकल समाज है दुर्योधन के सञ्चालन से ॥
गुरशरणदास रस ना छोड़ै गन्ना जब तलक पिलैगा ना ॥४॥

कृष्ण उवाच

तर्जः

तब बोले भगवान कृष्ण कुछ नीती कुछ उपदेश भी था ।
गूढ़ शब्द थे रहस्य युक्त कुछ आगामी सन्देश भी था ॥टेक॥
हे वीरो हम आनन्दित थारे भाषण में रस आने से ।
पर हो सकती है हानि क्रोध के सागर में धँस जाने से ॥
क्रोध किये दुर्दशा नहुष की हुई स्वर्ग खस जाने से ।
निन्दित कर्म दुखद होता है धर्म लीक नश जाने से ॥
किये अनीत मिटा रावण कुल यद्यपि गुरू महेश भी था ॥१॥
सन्धि का प्रस्ताव दिये बिन विरुद्ध आक्रमण भला नहीं ।
पके पै चीरा लाभ करै और अपक चिरा वृण भला नहीं ॥
हंस चुगै जो मीन तो असगुन सिँह चरै तृण भला नहीं ।
मोह और आवेश में आकर करना कोई प्रण भला नहीं ॥
दशरथ का प्रण मौत का कारण जब तक जिए कलेश भी था ॥२॥
सन्धि का प्रस्ताव भेज दो करके तुम निश्छल मन को ।
नीति न्याय धर्म विद् सम्मत समझाओ दुर्योधन को ॥
हर सम्भव यतन शान्ति का जो ना भावे फिर भी उनको ।
करो तुरत आक्रोश घोष हम आ रहे शीघ्र महारण को ॥
शुभ समझ कदाचित लौटा दें म्हारा इन्दरप्रस्थ प्रदेश भी था ॥३॥
होगा अभिषेक युधिष्ठिर का चाहे विग्रह से चाहे सन्धि से ।
होंगे राज्य अनेक मुक्त इस परतान्त्रिक पाबन्दी से ॥
सुख शान्ति के लिए मशवरा कर सकते प्रतिद्वन्दी से ।
यद्यपि बाज नहीं आ सकता असुर भावना गन्दी से ॥
गुरशरणदास भली भाँति कही क्षत्री आचरण विशेष भी था ॥४॥

तर्जः

वासुदेव आ रहे सुलह का प्रयास करेंगे ।
सफल हुआ प्रस्ताव तो ये उपहास करेंगे ॥टेक॥
मायावी हैं कृष्ण राज की नीति जानते ।
झूँठ कपट छल छिद्र की करनी प्रीत जानते ॥
दुश्मन को पराजित करने की हर रीत जानते ।
सामवेद की ऋचा मधुर सङ्गीत जानते ॥
सिद्ध युधिष्ठिर का स्वारथ हरि खास करेंगे ॥१॥
कृष्ण धनुर्वेदज्ञ अस्त्र शस्त्रों का ज्ञान है ।
कौन वीर किस तरह मरै सबकी पहचान है ॥
आज जगत के वीर भटों में उच्च स्थान है ।
अष्ट सिद्धि से युक्त कृष्ण ऐसा अनुमान है ॥
अपने मित्र का सिध कारज बण दास करेंगे ॥२॥
अचल राज चाहो तो सलाह स्वीकार कीजिए ।
परम मित्र के जैसा सद्व्यवहार कीजिए ॥
छल करो छली के साथ सर्व बलिहार कीजिए ।
करते ही सीम प्रवेश बड़ा सत्कार कीजिए ॥
फौरन हृदय उदार तेरा विश्वास करेंगे ॥३॥
गुरशरणदास खल कहा करैं प्रिय लोभ की वाणी ।
अन्ध स्वार्थी नहीं देखता लाभ और हाणी ॥
शठ की सङ्गत सद्गुण नाशै कह्या करैं ज्ञानी ।
सागर में मिल खारा होता गङ्गा का पानी ॥
जो भरे शठों का पेट उसी का नाश करेंगे ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः रेशमी सलवार कुर्ता जाली का

सन्धि का प्रस्ताव लिए भगवान चले ।
जोड़ लिया रथ आप बने रथवान चले ॥टेक॥
परब्रह्म अखिल परमेश्वर मांया से देह नर धरके ।
भक्तों के हेतु जग नायक प्रभु राजदूत बन करके ॥
विश्व मेहमान चले ॥१॥
भूयान गति अती वेगी अम्बर में धूल उडी थी ।
विश्राम बने स्थल पर दर्शन को भीड़ जुड़ी थी ॥
करत सम्मान चले ॥२॥
सर्वज्ञ प्रभु जानै थे होनहार तत्व गहरे को ।
नीती मर्याद निभाने नृप अन्ध और बहरे को ॥
प्रभू समझान चले ॥३॥
गुरशरण निकट गजपुर तब शङ्ख घोष को सुन के ।
दिये भेज भूप ने लाघव गण मान्य पुरुष चुन चुन के ॥
करन अगवान चले ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः कृपा करो गुरुदेव

हथिनापुर का राजमार्ग जो जुड़ा विराट के पथ में ।
किया नया निर्माण देवकी नन्दन के स्वागत में ॥टेक
ऊँचे नीचे थल समतल कर शोभा द्वार बनाये ।
द्वार द्वार पर धवल वस्त्र के शुभ केतु फहराये ॥
सँगमरमर के दिव्य थामले विविध फूल महकाये ।
चौराहों पर दिशा चिन्ह किये लीक भूल ना जाये ॥
हीरे मोती मणि माणिक रहे चमक वितान की छत में ॥१॥
लाखों थे स्तम्भ मार्ग के दोनों ओर सुहाने ।
विविध रङ्ग का लेप था कृत्रिम कदली खम्भ लुभाने ॥
किये इत्र छिड़काव सुगन्धी लगी राह महकाने ।
इस मारग पर करैं यात्रा देव लगे ललचाने ॥
जगह जगह जल कुण्ड नियोजित स्वच्छ स्वाद अमरत में ॥२॥
योजन योजन की दूरी पर विश्राम भवन निर्माये ।
स्वाद व्यञ्जनों युक्त शुद्धतम भोजनालय बनवाये ॥
स्वचालित थे वाद्ययन्त्र शुभ खम्भों पर लटकाये ।
सामवेद की मधुर ऋचाऐं ब्रह्म कीर्तन गाये ॥
धन का अपव्यय कर देती है राजनीति स्वारथ में ॥३॥
मन में था दुर्भाव दुष्ट लग रहे हरि को बहकाने ।
लोभी, क्रूर, मूर्ख, दम्भी की बुद्धि नहीं ठिकाने ॥
गुरशरणदास सूरज को जुगनू चले प्रकाश दिखाने ।
मोह में अन्ध पतङ्ग आग का ताप तेज क्या जाने ॥
अमृत में विष मिला पिलाना नीचों की आदत में ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः तुझे सूरज कहूँ या चन्दा

सन्धि प्रस्ताव दूत बन सतचिदानन्द अखिलेश्वर ।
रथ चला प्रभञ्जन गति से हथिनापुर के मारग पर ॥टेक॥
पट भवन बने जहाँ जहाँ पर विश्राम की सुलभ व्यवस्था ।
जन सघन समूह खड़ा था जय घोष का रङ्ग बरसता ॥
अति प्रेम पियूष सरसता झर रहा गिरि मानो झर झर
प्रभु के मुख वचन सुधा को पी रहे नर अञ्जलि भर भर ॥१॥
अति मुग्ध हुए नर नारी जगदीश्वर के भाषण से ।
सब बोल उठे एक स्वर में करो मुक्त अन्ध शासन से ॥
जग पीड़ित दुर्योधन से प्रभु विनय सुनो अति सादर
सुन विनय विहँस रहे केशव कर उठा हला पीताम्बर ॥२॥
प्रभु जब यान बढ़ाते गुञ्जित जय घोष गगन में ।
सुर मगन पुष्प बरसाते शुभ मारग के प्राङ्गण में ॥
दुति दन्त चमक जैसे घन में सिर केश लहर रहे फर फर
मानो कि पवन पर चढ़कर जा रहा धरण पर जलधर ॥३॥
गुरशरणदास इस भाँति प्रभु चले लाँघते पथ को ।
गये पहुँच द्वार गजपुर के खड़े भीष्म द्रोण स्वागत को ॥
प्रभु रोक दिया निज रथ को कुछ दूर पयादे चलकर
वह वर्णन अगम कवि को जब नर से मिले हरिन्नर ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः

सभा कक्ष तक मारग पर पट रेशम पुष्प बिछौना था ।
पथ के दोनों ओर नृत्तिका नाचैं गात सलौना था ॥टेक॥
ऊपर तना वितान धवल मणि हीरे चमक सितारों की ।
शीतस्थल हो रहा सुहाना मोहक छवि फुहारों की ॥
ठौर ठौर पर द्वार बनाये महिमा शिल्पीकारों की ।
धीमी धीमी ध्वनि वादन थी वीणा और इकतारों की ॥
इत्र चमेली चम्पा सत से महका कोना कोना था ॥१॥
निज सुण्डों में अरविंद माला लिए हुए गर्जे हाथी ।
प्रभु के कण्ठ घाल रहे माला भट दुर्योधन के साथी ॥
स्वागत के लिए मल्ह खड़े थे जोड़े हाथ फुला छाती ।
उठा नहीं दुर्योधन बैठा रहा पुरन्दर की भाँती ॥
परमेश्वर को वश में करना समझा खेल खिलौना था ॥२॥
पहुँच गये प्रभु वहाँ जहाँ पर बना हुआ दूतासन था ।
कुशल पूँछता दुर्योधन अभिमान भरा कलुषित मन था ॥
कहो द्रोपदी कुशल भी है जेहि पाँच पतिवृत पावन था ।
धर्मपुत्र का हाल कहो जाका धर्म ही शोक नशावन था ॥
विदुर चले गये सभा छोड़ समझा शठ वाद घिनौना था ॥३॥
हरि बोले वहाँ कुशल सभी उन्हें चिन्ता बहुत तुम्हारी है ।
काल चक्र की वक्र गति अति किये पै सङ्कट भारी है ॥
गुरशरण अनीति नाश का कारण ऐसी समझ हमारी है ।
उसका अन्त सुनिश्चित है जो लोभ का विरल पुजारी है ॥
शठ क्या जाने यह वही जो बलि के द्वारे पै बौना था ॥४॥

तर्जः कान छेदनी कर्द उठा ली

गरुड़ मँजीरा जचा करै जब आँखों में जाला टिक जा ।
कर्म लेखनी ईश्वर पै कद धौले पै काला लिख जा ॥टेक॥
ये शकुनी घातक शठ साजिश नाश की बाट भली जाने ।
रक्तपात कम जर्फ विपत के सारी घाट गली जाने ॥
औगुणखान वश घुण जैसे छैनी काट कली जाने ।
कुछ पातक और गुनाह शरारत तीन सौ साठ छली जाने ॥
प्रीत की भीत हली जाने में मेरी का आल छिक जा ॥१॥
लाज गई कुछ पतन हुआ थारे अकल के खावे टूट लिये ।
आज करो बहू हरण कल्ल गऊ हरण में बाजू टूट लिये ॥
ताज नये ना बणे थारे कल जो अर्जुन ने लूट लिये ।
लाखों नुक्श किये तुमने कर सबर धर्म ने घूँट लिये ॥
जिस खेत में छक्के छूट लिये उस खेत में फिर छाला सिकजा ॥२॥
दुर्योधन ले बात मान तेरे सलहाकार दे रहे धोका ।
गऊ हरण में पीठ दिखा गये बता करण किसने रोका ॥
भरतवंश शुकनी सौ बल ने द्वेष की अगनी में झोका ।
सदा नहीं झगड़े रहते ये आ गया कोई बुरा मौका ॥
इस जीणे ते मरना चोखा जब इज्जत का पाला बिक जा ॥३॥
अपनी लाज हरण करते तुम जङ्ग जोड़ मैदानों में ।
कुल का होजा नाश आग ऐसी भरी धनञ्जय बाणों में ॥
चुगलखोर घर भाग जाय तुम तड़फोगे शमसानों में ।
दुनिया में माटी पिट जा बुरी चोट अरमानो में ॥
गुरशरणदास शैतानों में थारी पूजा की माला फिकजा ॥४॥

तर्जः

अपने दिल का हाल सँभाल सूखे दिखा खवे पै बाल ।
बोली आरते का थाल भरदे भाती नन्दलाल ॥टेक॥
ये जीवन एक रथ है साथिये शाम रुपैया ।
डगमग होके गिर ना जावे थाम लगाम कन्हैया ॥
पहिया दया धर्म के घाल रथ को सही लीक में डाल ॥१॥
ये दुनिया सरकस की गुड़िया जीवन हलका तार ।
नाशवान को अमर जान के दौड़ रहा संसार ॥
पार वो होता है गोपाल जिस पर तेरी निगाह दयाल ॥२॥
पाप भार ते धरती काँपी न्याय तेरे ते चाहती ।
जिसको समझो उचित थाल में वह भरो मेरे भाती ॥
साथी बीते तेरह साल कोई किया ना बवाल ॥३॥
गुरशरणदास जुवे का नक्शा आज गया फिर जाग ।
दुशासन का खून बहाके तू मेरी सजा दे माँग ॥
जाँघ पै गदा नीच का काल पटके घन अहरन की ढाल ॥४॥

तर्जः

सर हाथ धार कै बोल उठे भगवान ॥टेक॥
द्रोपदी ते बोले श्याम चिन्ता में मचावे शोर ।
भात की हिमायत छोड़ देख लिए मेरी ओर ॥
कौरव अपङ्ग हुए पांण्डवों का देख जोर ॥
प्रेम में विभोर होके श्याम सत्य बोल गये ।
दिखाता विराट रूप भावना टटोल गये ॥
प्यार के निमित्त आज गूढ तत्व खोल गये ॥
जल, थल, अतल, रसातल देखे मुख भीतर असमान ॥१॥
द्रोपदी तू होते हुए पूरे मनसूबे देख ।
कौरवों के पाप देख मानवों को ऊबे देख ॥
बएरियों के खून में तू केशन को डूबे देख ॥
देख ले अपार चीर अङ्ग में समाया हुआ ।
अङ्ग में उमङ्ग रङ्ग खून में डुबाया हुआ ॥
पापियों के पापन का आप ही सफाया हुआ ॥
आज देख तुम जीत चुकी हो भारत का मैदान ॥२॥
पञ्च देवता भी देख अङ्ग में समाये हुए ।
पृथ्वी के वीर सारे जङ्ग में खपाये हुए ॥
प्राणहीन देख, देख मौत से बचाये हुए ॥
सात वीर जीवते हैं सात्यकी समेत रहे ।
अन्य प्राण दान हेतु वीरता में खेत रहे ॥
बैठ के अनन्त गोद सोचते अचेत रहे ॥
घबरा गई द्रोपदी वध का हेतु आप को जान ॥३॥
द्रोपदी का चित्त यहाँ चिन्ताओं ने चूट लिया ।
अभिमन्यु की शादी को भी काल ही ने लूट लिया ॥
वंश का विनाश देख साहस वो छूट लिया ॥
दोपदी के हारे पङ्ख श्याम ने सँभाल दिये ।
माया को समेट दृश्य बुद्धि से निकाल दिये ॥
थाल में को थैला हीरा मोतियों के डाल दिये ॥
गुरशरणदास माया का बन्धन बँधा रहे इन्सान ॥४॥

तर्ज: चिड़िया एक चिड़ा ने ब्याह ली

यदुनन्दन की करके आरती, फिर गई जब भारत की भारती ।
पड़े थे पीठ पै बाल धनञ्जय का उड़ा रे मजाक रहे ॥टेक॥
देख रहे धनञ्जय हाथ बाहुजा में डाल के ।
सूखे बाल ताना दे रहे कह रहे हाल हाल के ॥
हीजड़े नचणिये तेरे, वायदे कमाल के ॥
उस दिन भी तो सर पै हम थे द्रोपदी कँवारी थी ।
अङ्ग को सजाने में नित आबरू हमारी थी ॥
बालो ही के रँग पै झुझी दुनिया सारी थी ॥
न्यारी थी महिमा म्हारी अँग में, रचे हुए भँवरे के रँग में,
माँ करती थी रोज सँभाल, धनञ्जय का उड़ा रे मजाक रहे ॥१॥
हम सोचे थे मीन में जो शेर मारे तीर ताण ।
वही होगा स्वामी म्हारा करेगा निछावर प्राण ॥
सीने ते भिड़ेगा सिँह और होगी ऊँची शान ॥
ये आशा थी हमको कोई केहरी सजायेगा ।
मध्य में सिन्दूर भर के दिल झूम जायेगा ॥
सुगन्धि से अनोखी शोभा तेल से रचायेगा ॥
आयेगा उत्साह गात में, थामेंगे जब स्वामी हाथ में,
होगी अलग मिशाल धनञ्जय का उड़ा रे मजाक रहे ॥२॥
हुया ये कि भाग फूटा निकम्मों ने मारा तीर ।
खाक में मिलाई शोभा गन्दी होगी तस्वीर ॥
जुवे में जिताये गये शौक में लुटाये चीर ॥
सियारों ने खैंचे झटके हवा में उड़ाये गये ।
फर्श पै बखेरे कभी पैरों में बिछाये गये ॥
मजाकों की बौछारों से सभी में घुमाये गये ॥
ल्याये गये दरबार में गलियों में दिये गेर नीच ने,
पतियों के नहीं था मलाल धनञ्जय का उड़ा रे मजाक रहे ॥३॥
पति हो नचावनिया जिनके जुवे के खिलारी हो ।
ढोंगी हो शराबी कायर मजहबी पुजारी हो ॥
डूब मरना चोखा जो बहरूपियों की नारी हो ॥

सोच में पड़ा था पार्थ भूल तन को आप गया ।
हिजकता मिटी थी फौरन दूर हो शराब गया ॥
वीर रस में डूबा छत्री गात सारा काँप गया ॥
पाप गया मिट शेर गात से, पहले रण हो ब्याह भात से,
गुरशरणदास नँदलाल धनञ्जय का उड़ा रे मजाक रहे ॥४॥

तर्ज़ः

श्री कृष्ण की सुनी द्रोपदी ने प्रेम भरी वाणी ।
मृग नैनी के नैन कोर में भर आया पाणी ॥टेक॥
डगमग हुआ शरीर कम्प जण हाल गई धरणी ।
गद्‌गद हो गया कण्ठ व्यथा निज जाती ना बरनी ॥
सदा विधाता बाम भोग घणे पापों की करणी ।
पाँच पति मृगराज सिँहनी को घास पड़ी चरनी ॥
यदुनन्दन तेरी कृपा किसी से जाती ना बरणी ॥१॥
साहस कर धरि धीर वचन कहे सान मलालों से ।
हे प्रभु मेरी कुशल पूँछ मेरे सिर के बालों से ॥
सूखे हैं बिन तेल उलझ रहे तेरह सालों से ।
जाकर पूछो कुशल जुवा के खेलन वालों से ॥
लिख रहे अङ्क ललाट हमें तो न्यूँ ही धूल खाणी ॥२॥
भुजा कन्ध से जुड़ी है जब तक अरि दुःशासन की ।
जाँघ छितर नहीं गई है जब तक शठ दुर्योधन की ॥
करण जीभ नहीं गिरै कण्ठ सँग कटु दुर्वचनन की ।
तब तक केशव कुशल ना पूछो द्रोपदी के मन की ॥
वैराट नगर की दासी हूँ मेरी बदल गई क्हाणी ॥३॥
क्या पूछो मेरी कुशल जानते तुम अन्तर्यामी ।
दुर्योधन खल करण दुःशासन दीख रहे शामी ॥
काम्यक बन जयद्रथ नीच तै कठिन लाज थामी ।
कीचक लात प्रहार किया यमलोक गया कामी ॥
गुरशरणदास हरि तुम जानो क्या शेष विपत ठाणी ॥४॥

गोपीचन्द
भाग–१

॥ दोहा ॥

गुरु गोविन्द की वन्दना करूँ एक ही साथ ।
दोनों का संयोग सम एक गात एक हाथ ॥
गुरु बिन पावे राम ना, भव सर ते उद्धार ।
धार में दोनों चाहिए नाव और पतवार ॥
कवि नहीं कविता करूँ मैं कितना मति अन्ध ।
अक्खे में कैसे मिले इत्र पुष्प की गन्ध ॥
कवि कहो पण्डित कहो धूर्त कहो पाखण्ड ।
हमें नहीं मतलब तुम्हें लाभ मिलो या दण्ड ॥
कविता मैं जानूँ नहीं कहूँ बात सतभाय ।
चिरमिट को सूरज कहो मेरी कहाँ बसाय ॥
अपने को कवि ना कहा जब से मुझको होश ।
कवि मेरी निन्दा करे हैं आवत का दोष ॥

तर्ज़ः

दुर्ग करेगी पूरी भक्त की लगन
दर्शनों की चाहना चित में दिल में मगन ॥टेक॥
सुना है कि जन की पूरी कामना तू करती है ।
धार में जो नैया तेरे भार से उतरती है ॥
आदमी को धरती है तू देव को गगन ॥१॥
शरण में आया हूँ मन मंजिले परिन्दा है ।
भँवर में थमा है दिल ये कामना में अन्धा है ॥
शान्ति है चन्दा में तू रवि में अगन ॥२॥
जानता ना भक्ति पूजा जानता ना मन्तर मैं ।
काटता है चक्कर जीव आत्मा के अन्तर में ॥
व्याहति निरन्तर जीवन मरण की थकन ॥३॥
गुरशरणदास तेरा मन से पुजारी है ।
काट दे जो लग रही आवागमन की बिमारी है ॥
मुसीबत है भारी दुनिया लग रही ठगन ॥४॥

तर्जः

गोपीचन्द ते माँ बोली सुत कहना मान ले ।
आठ सिद्धि और जोग जुगत गोरख ते जाण ले ॥टेक॥
पद्मसैन तेरा पिता कलेउ काल का हुआ ।
घने दिना की बात ना सङ्कट हाल का हुआ ॥
रहे खजाने भरे निधन भूपाल का हुआ ।
उड. गये पङ्ख पखेरू शोषण ताल का हुआ ॥
लाल को लाड़लड़ा बोली गुणियों ते ज्ञान ले ॥१॥
काल ते डर कहूँ सनंत का शिष्य कँवर होजा ।
सन्तों की सेवा करने से पार भँवर होजा ॥
योग साधना कर्म सँजीवन पुत्र अमर होजा ।
योगीराज विजय पाते मृत्यु से अमर होजा ॥
आत्म शक्ति जबर होजा भक्ति की ठान ले ॥२॥
मरण शील जग परिवर्तन धन का काम नहीं ।
सुबह उठे सुख शान्ति पता कुछ शाम का नहीं ॥
बोया पेड़ बबूल लगै फल आम का नहीं ।
जीवन है सङ्घर्षशील आराम का नहीं ॥
चाम का पिंजरा जीव थमा तू समय पिछान ले ॥३॥
तेरे पिता की मौत हुई मुझे उसी वक्त का डर सै ।
रहती हूँ भयभीत काल की चिन्ता जीवन भर से ॥
अमर होने के लिए जिन्दगी भर तपना बेहतर सै ।
पूर्ण होय कामना मेरी यही लगन ईश्वर सै ॥
गुरशरणदास परमेश्वर से ऐसा वरदान माँग ले ॥४॥

तर्जः जोगियों का चेला बण जा

हाथ जोड़ मैना माँ ते बूझ रहे भूपाल ।
राज छोड़ जोगी बण बड़ा पेचीदा सवाल ॥टेक॥
योग भोग में फर्क योग बड़ा करड़ा काम सै ।
सन्त का साथी राम सै, वहाँ आनँद का धाम सै ॥
दाम का पुजारी राजा मोह का बवाल,
काग नै मिलैगा कैसे मानसर सा ताल ॥१॥
सन्त सत्य पै डटे झूँठ पै राजनीति सै ।
साधु को हर ते प्रीत सै भूप को न्यारी रीत सै ॥
जीत होवे सत की ये है वेद का खयाल,
भरमते हैं भोगी मोह में ममता का जाल ॥२॥
हम ठहरे भूपाल रोज चिन्ता में जागते ।
सीम पै गोले दागते, रात दिन धन को भागते ॥
त्यागते हैं योगी व्यञ्जन पहरते हैं छाल,
आई मौज फकीर ऊठ जा पुरानी मिशाल ॥३॥
गुरशरणदास धन धरण धाम राज की चाह में ।
ना भटके जागा राह में उमर कटती है छाँह में ॥
पामाँ में टिकाऊँ सर माँ भरम को निकाल,
भोगियों से देखा जा ना योगियों का हाल ॥४॥

तर्जः देहाती

जोगियों का चेला बण जा रोज की शिकात ।
फायदा के चाहवे कहदे हृदय की बात ॥टेक॥
राजाओं और जोगियों में फर्क जैसे अम्बर और थल में ।
भूप का प्यार भूमण्डल में सन्त का जगत कमण्डल में ॥
साधुओं का जङ्गल में बल शेरों की जमात ॥१॥
राजा बेसन्तोष रोज चित चिन्ता में जागे ।
सीम पै गोले जो दागैं देश को सरकावें आगे ॥
जोगियों ने के से लागे देहली विलात ॥२॥
भूपालों की मौत बिराजे तलवारों की धार ।
उनको अहिंसा से प्यार म्हारा मिले ना विचार ॥
फासला अपार जैसे दिन और रात ॥३॥
गुरशरणदास कह माँ तुमने के सोची सै मन में ।
भेज रही बेटे को बन में जो जाणा चहिए था रण में ॥
पैसे बिन वतन में कोई देता ना साथ ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः भटियारी के घर महाराणी

आज्ञा लेकर महाराणी से गोपीचन्द चले रजधानी से ।
पहुँचा कदली बाग, जहाँ गुरु गोरख का डेरा ॥टेक॥
गोपीचन्द ने जाकर देखा साधुओं का अजबी ढङ्ग ।
शीश है सफाचट तग्गड़ मूँज का खिँचा है तङ्ग ॥
कमण्डल का तकिया बखिया लँगोटा नङ्ग ॥
पीताम्बर पट लट चन्दन का जनेऊ का झोटा पीठ ।
रुद्राक्ष की माला गल में माथे पर तिलक की छींट ॥
मौन साधे बैठे साधू, इशारे में बोलैं नीठ ॥
श्रेष्ठ सिँहासन मृगछाला का, ढङ्ग निराला चटशाला का,
ईश्वर से अनुराग, एक सब ना तेरा ना मेरा ॥१॥
चीमटा में डमरू बँधरा, धूणे में धधकरी आग ।
समाधी में बेसुध साधू काया में टि रे नाग ॥
फूलों में भटक रहे भौरें सुगन्धी में घूमे बाग ॥
खञ्जना क्वारी कोयल तोता मैना बोलैं राम ।
हंस मोर सारस सुरजी डालियों पै चिड़िया शाम ॥
धौलागढ़ के राजा मोहे स्वर्ग से भी सुथरा धाम ॥
नाम गाम और बैर प्रीत ना, राजपाट गढ हार जीत ना,
आतम बल बैराग झूँठ जग माया का घेरा ॥२॥
योग साधने की क्रिया वेद जा पढाये कहीं ।
खैंचरी में बैठे साधू साँस को चढाये कहीं ॥
बगीचे लोटे झोटे लँगोटे लगाये कहीं ॥
शान्त रूप चन्द्रमा से मध्य में समाधी लिये ।
माया का करिश्मा जग में है ब्रह्म अनादी लिये ॥
उच्च आसन पै गोरख बैठे गुरु की उपाधी लिये ॥
किये दर्शन जब योगीराज के, भूल गये सुख राज काज के,
आज खुले मेरे भाग काग सुख हंसों में लेरा ॥३॥
गोपीचन्द की वाणी सुथरी नमस्ते का करके भाव ।
खाक में रचाया माथा गुरू के पकड़ लिये पाँव ॥
आँख खोल बोलो योगी शरण तेरी आग्या राव ।

गुरु गोरख के दर्शन करके नए सुख में लीन हुआ ।
सत्य की सराह में बड़के राज सार हीन हुआ ॥
करके अमर भेज दिया माँ ने राव का यकीन हुआ ।
सीन हुआ रङ्गीन निखर के फूल की शोभा होय बिखर के,
गुरशरणदास बड़ा त्यागी भाग में के लिखरी ना बेरा ॥४॥

जबाब गोपीचन्द का

तर्जः दुखियारी लेकर लड़के नै

जोगीराज मेरी राम राम ले भेंट में चाहे धरण धाम ले ।
शरणागत का हाथ थाम ले मैं पकड़ूँ तेरे पाँ ॥टेक॥
गुरुजी देख आपका डेरा, हो गया दिल का दूर अँधेरा ॥
गोपीचनद मेरा नाम गुरूजी, धौलागढ़ है गाम गुरुजी ॥
मुझ सेवक का काम गुरुजी करो भर लो तुम हाँ ॥१॥
आज लिया मैनें श्वाँस चैन का, फर्क जान लिया दिवस रैन का ॥
पद्मसैन का पुत्र अकेला, घर के बाहर आज धकेला ॥
अमर होय गोरख का चेला बण कह रही मेरी माँ ॥२॥
मैं सेवक थारे दर पै आया, सुख ते शीतल हो गई काया ॥
माया का संसार जाल है, सन्तों के पाबन्द काल है ॥
माँ का सचमुच ठीक ख्याल है वो जानती हानी नफा ॥३॥
गुरशरणदास जग कर्म का रोगी, दुख से दूर रहे सै योगी ॥
भोगी भक्त के भाव छोड़ कै मोह बन्धन की डोर तोड़ कै ॥
आ पहुँचा थारे पास दौड़ के माँ साँची कहूँ सूँ सफा ॥४॥

तर्ज: पानी पी सन्तोष मिला और

जोग भोग में अन्तर राजन हम सेवक नारायण के ।
मृगछाला पर शयन करें हम तुम लोभी सिँहासन के ॥टेक॥
भोगी जीव कर्म करता यहाँ जीव ब्रह्म का ऐका है ।
है सब जीव समान अड़ै उड़ै मैं मेरी का ठेका है ॥
भोग परिश्रम का वादी और योग भाग्य की रेखा है ।
ये संसार सुना माया का रचा सार नहीं देखा है ॥
लोभ नरक का कारण है तुम फनवादी लोभी धन के ॥१॥
भोग में स्वार्थ का बन्धन हम जीते हैं परमारथ में ।
काम क्रोध मद लोभ सन्त को बाधक ना होती पथ में ॥
भोगी भगे भरम के भूले जोगी समता के रथ में ।
जोगी है निश्चिन्त सदा विश्वास विधाता के खग में ॥
सन्तों के मत में जग झूँठा है हम पन्छी निर्जन वन के ॥२॥
भोगिन के भण्डार भरे यहाँ सर्वस्व भरा कमण्डल में ।
हम करते सन्तोष सार में तुम दौड़ो सारे थल में ॥
योगी पुरुष अहिंसावादी तुम झूमो अपने बल में ।
तुम डूबो मदिरा मद में हम विश्वासी गङ्गाजल में ॥
दो रोटी पै सबर करैं थारे कोठे भर रहे राशन के ॥३॥
जा गोपीचँद घर अपने है जोग भोग की समता ना ।
जोगी दर्शन करे ब्रह्म के भोगिन का मन रमता ना ॥
सन्त सत्य का पालन करते भोग सत्य पै थमता ना ।
न्यायाकारी संयम बण नर कदै न्याय पै जमता ना ॥
गुरशरणदास कहे भ्रमता ना जाने पङ्ख कसे अपने मन के ॥४॥

तर्जः हंस ताल पर खड़ा एक दिन

सुत की शान पिया का फोटू ममता प्रीत बिलखती देखी ।
थर थर गात काँप गया माँ का धीरे मौत सरकती देखी ॥टेक॥
मरगे रावण से बलकारी, जिसने धरती भोगी सारी ॥
शक्ति हिरनाकुश की हारी, माया खम्भ कड़कती देखी,
शिव शङ्कर तक अमर रहे ना तीजी आँख फड़कती देखी ॥१॥
अमर कुँअर कैसे हो सकता, ये धरती मृत्यु का तख्ता ॥
जी पाँच तत्व में पकता, होनी पाक परखती देखी,
ब्रह्मा तक फँस रहे जाल में बल और बुद्धि थकती देखी ॥२॥
कोई आज मरा कोई कल मर जागा, जो आया वो उस घर जागा ॥
किये कर्म का घट भर जागा, सबकी कली मसकती देखी,
मोह की चोट जीव कै लग जा बार बार चमकती देखी ॥३॥
गुरशरणदास धर ध्यान भागमल शिशपाल, उमर कम होती पल पल ॥
छोड़ गुमान सँभलकर चल हमने धरती तलक दलकती देखी,
कवि कलम का निब हल जा, और मसी दवात छलकती देखी ॥४॥

तर्जः देहाती

साँझी गई सुबह हई तरसते, आये ना पिया ।
बाँदी आई ढूँढ हमारे पाये ना पिया ॥टेक॥
न्यूँ हाथ जोड़ बूझै थी मैना ते सोलह रानी ।
संसार सून सा लग रहा झलकै था नैन से पानी ॥
राणी चुपचाप सुबक रही रच गई खुद नई कहानी ।
थर थर सब गात काँपगा कोई काम करै ना बाणी ॥
मैं सुतखानी मात बणी थारे भाये ना पिया ॥१॥
चेहरे पै देख उदासी बहू व्याकुल हुई जहन में ।
जननी की बात मान म्हारा चन्दा गया गहन में ॥
देखी तस्वीर पिया की मैना के बसी नयन में ।
हिरदे में उठा कहर सा दुख बणगा सहम चैन में ॥
प्यार प्रीत इसलिये रन में लाये ना पिया ॥२॥
चुप बैठी क्यूँ लिए उदासी माँ तुम एक बार बोल कै ।
हम बिना पिया के मर जाँगे जहर घोल कै ॥
माँ बेसुध गिरी धरण पै एक बेर सब ओर डोल कै ।
जननी को होश कराया बहुओं ने हवा झोल कै ॥
बोली जख्म छोल कै माँ दरशाये ना पिया ॥३॥
माँ बोली धीर धार लो थारा लाऊँ पिया फेर कै ।
मैंने मेटी थारी रोशनी दी ठोकर मार ढ़ेर कै ॥
कैलाश की शिखा चढ़ाया मैंने अपना हंस घेर कै ।
गुरशरणदास ज्ञान की माला पहरा दई गले शेर कै ॥
चली टेर के माला कहाँ समझाये पिया ॥४॥

तर्जः आया मेहमान जान के

बीती चौसठ घड़ी भवन, माँ पिया नहीं पाये ।
चिन्ता चित चैन चुराये, कोई बात समझ नहीं आये ॥टेक॥
चित का चैन काफूर हुआ माँ चिन्ता में सब रात गुजरगी ।
सुपने में कोई देव कहैं थारे जीवन की फुलवारी उजड़गी ॥
म्हारी कोई बड़ी बात बिगड़गी, जिया बिन पिया घबराये ॥१॥
गये हुए किस देश बता दे क्या था उनको काम जरूरी ।
जल बिन जिये ना मीन सर्प बिन मणी हिरन बिन कस्तूरी ॥
थारे दिल पर क्या मजबूरी जो नैनों में जल छाये ॥२॥
और बड़ी मन में घबराहट जब से देखा ढ़ङ्ग तुम्हारा ।
मन हो रहा भयभीत आपका काँप रहा सब अङ्ग तुम्हारा ॥
पड़ फीका रङ्ग तुम्हारा, सङ्कट में गात डुबाये ॥३॥
गुरशरणदास कह घेर लई माँ बूझ रही सब सोलह राणी ।
माँ की जीभ तालुवे चिपकी हिड़की बँधी बन्द हुई वाणी ॥
उठ भाग लई म्हारी, अपने खुद किये पराये ॥४॥

तर्जः पाप के धोरे पुण्य

महारानी बेचैन भगी जण धरती पै पग पड़ता ना ।
पूर्णिमा को छिपा चन्द्रमा पूरा फेर लिकड़ता ना ॥टेक॥
घर में छवि छलकती है बहू सोलह एक कन्त करके ।
बेहूदी को के मिल जागा अपना आप अन्त करके ॥
पद्मसैन का वंश मिटेगा गोरखनाथ पन्थ करके ।
सोलह मिटैं सिँदूर शीश के सुत इकलौते नै सन्त करके ॥
खरल में गेर शान्त करके पर पारे में नग जड़ता ना ॥१॥
हुए आठ पहर बिन मिले पिया बहू डूबी सभी हरारत में ।
खिलते हुए चमन को सचमुच करने लगी नदारद मैं ॥
एक अमर सोलह हत्या कैसी अन्धी हुई स्वारथ में ।
हो गया पूत फकीर नाश हुआ माँ की छद्म शरारत में ॥
जो जानती बात यथारथ में तो घर का रङ्ग बिगड़ता ना ॥२॥
ऊँचे नीचे बीहड़ बणी में भाग रही निरभागी माँ ।
ममता ने पागल सी कर दी भूल में धोखा खागी माँ ॥
पूत गया घर लुटा अचानक बुरे दाग में दागी माँ ।
टेढे मेढे रस्तों में दस मील दौड़ के आगी माँ ॥
माँ के जैसी नरम आत्मा राम किसी की घडता ना ॥३॥
काँटे चुभे लगे कभी ठोकर नगन पैर में बणगें घा ।
ग्यारह मील दौड़ के इकली निकट बाग के आगी माँ ॥
भोजन भर विस्तार बाग का कित जागी ना पावे राह ।
झुके वृक्ष हो रहा अँधेरा पञ्छी भी ना पड़े निगाह ॥
गुरशरणदास जा डूब मल्हा फिर ज्हाज घाट तें भिड़ता ना ॥४॥

तर्जः

कर्ण छेदनी कर्द उठा ली खाती जमी खयालों की ।
गुरु गोरख के हाथ काँप गये लग गई झड़ी सवालों की ॥टेक॥
एक मन बोला गुरु गोरख तुम गोपीचन्द को जोग ना दो ।
शुद्ध सत्य गुण का भोगी नृप सुर साधन का रोग ना दो ॥
इकलौती माँ का सुत है इसे तत्वमसी महायोग ना दो ।
मातम ले बिजली टूटेगा जनता के दिल सोग ना दो ॥
भोग में सन्त वियोग ना दो जिसे व्यञ्जन मिले मसालों की ॥१॥
एक मन बोला जोग लैण क्यूँ भेज दिया माँ ने घर तै ।
फेर आत्मा बोल उठी ये आया है मृत्यु डर तै ॥
के जाणै थी भोली माँ कोई बचा नहीं जग नश्वर तै ।
किस तरह योग नै साधेगा जाने ऐश करी जीवन भर तै ॥
भीख माँगना घर घर तै एक चरचा बनै भूपालों की ॥२॥
चेला करूँ ना गोपीचँद को मन के भाव तुरत फिरगे ।
मोह का जाल सन्त पै पड़ग्या हाथों ते कुण्डल गिरगे ॥
गोपी बोल्या वचन दिये गुरु कह दिया आज शिष्य तिरगे ।
वचन हार का पाप लगै मजबूर गुरु गोरख घिरगे ॥
लगते हि कान कर्द चिरगे लहू शिखन भीज गया बालों की ॥३॥
चली खून की धार बोलगे गोपीचँद मैं मर गया री माँ ।
उत्तर तै आवाज सुनी मेरे लाल लौट कै आ ॥
सुने मर्म के बोल उधर को गुरू गोरख की फिरी निगाह ।
धौलागढ़ की महारानी बेचैन दौड़ रही नङ्गे पाँ ॥
गुरशरणदास उपाय करूँ अब माँ के दर्द मलालों की ॥४॥

तर्जः महाभारत के बाद याद

खड़े हो गये गोरखनाथ हा कुन्दन कर्द उठा के ॥टेक॥
गोपीचँद जब सामी आया जो नग देश भूपालों में ।
मोह का जाल सन्त पै पड़गा डूबन लगा खयालों में ॥
हाथ काँप कै कर्द छूटगी घिरगे गुरु सवालों में ॥
गुरु गोरख का मन बोला ये इकलौता सुत गोपीचन्द ।
शुद्ध सत्य गुण के भोगी और जगत भिन्न है ब्रह्मानन्द ॥
काग बली जा गढ़ में होजा पद्मसैन का द्वारा बन्द ॥
ये बाल सूर्य सा गात बात बिगड़गी योग पढ़ा कै ॥१॥
जनता का प्यारा गोपीचन्द गुरु गोरख का मन बोला ।
देखे कान फटे जब सुत के माँ के दिल बैठे होला ॥
माँगे भीख फकीर बणा नृप दुनिया में पड़जा रौला ॥
गुरु गोरख के मन में फिर से उठने लागा एक सवाल ।
शिष्य बणन में कसर रही के देगी जनेऊ मुँडगे बाल ॥
चरण खड़ाऊ पट पीताम्बर मृगछाला गल कण्ठी माल ॥
गुरु अकल देय नहीं साथ आत्मा बोली फेर कराह कै ॥२॥
माँ बेटे नादान घणे ये समझे नहीं लाभ हाणी ।
घर का दीवा गुल हो जागा विष पीले सोलह राणी ॥
दुश्मन छीने राज जल में मैना खो दे जिँदगानी ॥
सुर साधन का झगड़ा करड़ा गोपीचँद डर जावेगा ।
अधबर छोड़ सन्त समागम भाग दौड़ घर जावेगा ॥
घर और घाट बिगड़जा दोनों जीते जी मर जावेगा ॥
इसे दिन में दीखेगी रात जात क्षत्री मरजा दुख पा कै ॥३॥
गुरू गोरख ने किया फैसला चेला करूँ ना हारा मैं ।
गोपी मन के भाव जाणगा गुरु बहे मोह धारा में ॥
न्यूँ बोले गुरु बचन दिया तुम सबसे चेला प्यारा मैं ॥
गुरशरणदास मजबूर हुए गुरु सोती सुरती फेर जगी ।
गोपीचन्द करहाया माँ कह जब कानों में कर्द लगी ॥
उत्तर दिशा निगाह फिरगी तो मैना माँ आ रही भगी ॥
तने सन्त किया उत्पात माँ कह देगी घबराकै ॥४॥

गोपीचन्द

भाग–२

मङ्गलाचरण

॥ दोहा ॥

पात पात हर डाल में रमे हुए हैं राम ।
ना जानूँ प्रपञ्च मैं नाम रटे ते काम ॥
स्वर्ण यहाँ चाँदी यहाँ यहीं सर्व धन धाम ।
ये सब दुख के मूल हैं सुखद राम का नाम ॥
देता रह जो दे सके चा तन जाय तमाम ।
लेना पडे तो माँग ले एक राम का नाम ॥
लोभी को धन चाहिए और कामी को काम ।
बुद्धि चाहिए कवि को लिक्खै ग्रन्थ ललाम ॥
स्वर पर स्वर ईश्वर कहे स्वर साधे स्वर पाय ।
स्वर तत्वों के ज्ञान बिन शून्य पींजरा जाय ॥
स्वर साधन है मोहनी स्वर से बचा ना कोय ।
धनद दिवाकर लक्ष्मी स्वर ही से वश होय ॥
जन्मेजय की यज्ञ में स्वर ही का बस पाय ।
तक्षक सर्प के कारणों इन्द्र लिए खिँचवाय ॥
स्वर साधन ते होत हैं सिद्ध सिद्धियाँ आठ ।
स्वर सीढ़ी ले जात हैं परम धाम की बाट ॥
गुरशरणदास गम्भीर जन कहे ना अपना भेद ।
बिना भेद कैसे मिले यही चित्त में खेद ॥

कवि उवाच

तर्जः देहाती

आसमान तक गूँज उठा माँ बेटे की वाणी ते ।
जोगी होके अलग खड़े धौलागढ़ की रानी ते ॥टेक॥
जोगी ध्यान मिजान भूलगे प्रेम भरी बोली ते ।
आँखों ते रहा नीर टपक गया ज्ञान बिखर झोली ते ॥
गोपीचँद की ओर चली माँ तेज बणी गोली ते ।
लाल धरोहर लुट गया सै जण निर्धन न्यौली ते ॥
भोली का दिल छेद रही आवाज राजधानी ते ॥१॥
हींग की गन्ध कपूर के सँग में धर लो रमती कोन्या ।
मोती सीप समन्दर में कालर में जमती कोन्या ॥
ईश्वर अलख निरञ्जन सै पर माँ भी कमती कोन्या ।
ममता उड़न विमान शक्ति थामे ते थमती कोन्या ॥
बुद्धि फेर भरमती ना सतसङ्ग मिले ज्ञानी ते ॥२॥
तेज गति से पहुँच गई माँ बेटे के लगभग में ।
होश उडा थम गया तीर हुआ रक्त चाप रग रग में ॥
कान में कुण्डल पीत वस्त्र सर मुँडा खडाउ पग में ।
जान गई मैं ठगी गई हूँ ठगने वाली ठग में ॥
रहा ना जग में कोई मेरा तजूँ प्यार जिन्दगानी ते ॥३॥
माँ की प्रीत जीत गई दिल ना सार रहा अनहद में ।
जोगी जोग जमात भूलगे ज्ञान मोह के मद में ॥
बदनामी से बद चोखा पर बदनामी रह बद में ।
बन्दा खोटे काम करै जब झूमै झूटे मद में ॥
गुरशरणदास रस मिला छन्द में दर्द भरी कहाणी तै ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः आसमान तक गूँज गया

मर्म भेदनी माँ की वाणी लड़ रही आसमान में ।
सन्तों की गई छूट समाधी दुख भर गया ध्यान में ॥टेक॥
माँ बोली सुत, सुत बोला माँ, दिल चिरग्या जल थल का ।
फूल झड़े ओर धूल उड़ी हल सीना फटगा फलका ॥
चिमटा गिरे औ डैरू डमके कूड़े में जल छलका ।
हो गये दुखी पखेरू दुख में गल रुँधगा कोयल का ॥
माँ के आतमबल का भ्रम हो गया ब्रह्मज्ञान में ॥१॥
चली चीरती जाल बाग का गोपीचन्द की ओड़ नै ।
खाई झील कटीर ना देखे औघट घाट मोड़ नै ॥
भूल पै धूल गेरने आई दिया हुआ वचन तोड़ नै ।
भरम की आँधी उतर गई चली फिर से दिया जोड़ नै ॥
गलती चली ओढ़ने अपनी करगी घणी हाण में ॥२॥
भाग दौड़ लबै पहुँच गई सुत देखा पीताम्बर में ।
शीश मुँडा पग पड़ी खड़ाऊ लिया कमण्डल कर में ॥
कानों ते लहू टपक रहा सुत रमा हुआ हरि हर में ।
कल का भूप भिखारी बनगा हाँडैगा घर घर में ॥
किस मुँह ते घर में जाउँगा मैं देके आग छान में ॥३॥
जोग जुगत गये भूल बिखर गई गुरु ज्ञान की झोली ।
सन्तों के घर में घर करगी माँ की ममता बोली ॥
माँ के मन्दिर में भगवन बस परीक्षा होली ।
देख रहे मजबूर खड़े गुरु गोरख की मत मोह ली ॥
गुरशरणदास अनमोली बोली कर गई जगह कान में ॥४॥

गोपीचन्द उवाच

तर्जः देहाती

ममता तुम्हारी है भ्रमता जुगती जोड़ जाओ माँ ।
संसार कर्म का बन्धन हए तुम तोड़ जाओ माँ ॥
माँ मैनावती ॥टेक॥
रङ्ग मञ्च मएदान में जग रोवता हँसता ।
रङ्ग खुशी से न्यारा है गुरु ज्ञान का बस्ता ॥
जिस मोड़ से गुजरे रस्ता उस मोड़ जाओ माँ ॥१॥
गुरु वाणी पाणी ते मेरी आतमा सुधरी ।
परमानन्द सुछन्द मिली गुरु ज्ञान की गुदरी ॥
जग जीत प्रीत की गगरी इसे फोड़ जाओ माँ ॥२॥
भव सागर की खोज में बन्दा लगा हुआ कब का ।
रह जाता मजधार जहर पी पी के मतलब का ॥
गुरु ज्ञान पार की नवका परली पार जाओ माँ ॥३॥
गुरशरणदास चञ्चल बुद्धि भरमेगी भरमनी ।
नाशवान संसार जान क्यूँ रोवे धरमनी ॥
पग नीचे दबी सरपनी डर कै दौड़ जाओ माँ ॥४॥

गोपीचन्द उवाच

तर्जः सन्तोषी माँ

गोपीचन्द फन्द कट ऊपर ऊठ लिया माँ,
नाजुक जाल जगत मकडी का टूट लिया माँ, माँ मैनावती, माँ मैनावती ॥टेक॥
हो गया दूर अँधेर मेर सब झूठा जाल है ।
दो पाटों के बीच जीव जीवन की दाल है ॥
नैनीताल है हंस गुरु के मोती लूट लिया माँ, माँ मैनावती ॥१॥
तुम जाओ घर को लौट सन्त की सेवा करूँ ।
देह बदलती अमर आत्मा मारे ना मरूँ ॥
अब डरू ना गुरू से ज्ञान का अमृत घूँट लिया माँ, माँ मैनावती ॥२॥
ज्ञान का अमृत अमर करे मारे विष मतलब का ।
आया है सो जाय यहाँ फल मिलता करतब का ॥
तेरा बेटा मर गया कब खम्भ ते खूँट लिया माँ, माँ मैनावती ॥३॥
वहाँ नहीं अन्धेर चाहे लग जावे देर भी ।
कभी फँसे मकड़ी के जाल में जिन्दा शेर भी ॥
गुरशरणदास मेर सब झूँठी भाँडा फूट लिया माँ, माँ मैनावती ॥४॥

गोपीचन्द उवाच

तर्जः मैं तेरा हीर हूँ

मैं तेरा लाल हूँ, ख्वाब हूँ, ख्याल हूँ, तू धीर धारिये,
माँ मन मारिये ॥टेक॥
काल के जन्जाल तू प्यार जानती, पाप की आवाज राज सार जानती ॥
ओ जननी......
गम है गरीब की बहार जानती, तू न्यूँ गुजारिये ॥१॥
दीप का पतङ्ग कोई रङ्ग जानता, दौड़ता है अङ्ग का ना भङ्ग जानता ॥
ओ जननी......
फूकता है दीप क्या उमङ्ग जानता, तू ना उभारिये ॥२॥
अङ्क ना बदलते जो तकदीर के, हम हैं पुजारी माँ की तस्वीर के ॥
ओ जननी......
मन में बसी है देखो दिल चीर के, तू होश धारिये ॥३॥
गुरशरणदास कहे सै जग जोर जङ्ग है, देखले दिशाओं में जमाना तङ्ग है ॥
ओ जननी......
पूछते जभी ललो खून लाल रङ्ग है, तू धूल डारिये ॥४॥

मैनावती उवाच

तर्जः सुत का सुन अपराध

धौलागढ़ की महाराणी गुरु गोरख ते बोली ।
करो सन्त जी माफ भूल जो मेरे तै हो ली ॥टेक
मैं दुखिया बेचैन बड़ी सूँ, योगी राज तेरे द्वार पड़ी सूँ ॥
माँग रही खड़ी भीख भिखारिन फैला के झोली ॥१॥
मेरी बगीची आज उजड़गी, भली बुरी मुझे सहनी पड़गी ॥
बिगड़ गई मेरी अकल गुरु जी ममता ने मोह ली ॥२॥
इकलौता सुत गोपीचन्द सै, घर में सब तरियाँ आनन्द सै ॥
पद्मसैन कान द्वार बन्द हो विपता दिन धौली ॥३॥
गुरशरणदास भरी दर्द कहानी, पायाँ में पड़ रोरी सै रानी ॥
है एक अब हैरानी बात गुरु गोरख ने खोली ॥४॥

गोरखनाथ उवाच

तर्जः देहाती

महाराणी, हाँ बाबा, ज्ञान के भवन में तू विष का जाम घोट जा ।
तू अपने गाँव लौट जा ॥टेक॥
यहाँ ब्रह्मज्ञानी बसते भाग्य या नसीब नहीं ।
सत्य की उपासक नगरी भोग के करीब नहीं ॥
झूठे मोह ते दुख नापण की पैमाना जरीब नहीं ॥
आत्मा भरम ते भरनी सुपने के सी माया है ।
अँधेरे में रस्सी मन का सर्प ने डराया है ॥
दुख में ते ही सुख होता जैसे काया ही ते छाया है ॥
सच बानी, हाँ बाबा, प्रेम तै विघ्न का बोझा, बाम ओट जा ॥१॥
योही वो नगरी आलम परन्दे भी उड़ते नहीं ।
ममता के रथ में योगी विकारों में जुड़ते नहीं ॥
काम क्रोध मद के रस्ते दिशाओं में मुड़ते नहीं ॥
शङ्ख ना जन्म पे बजता मरण हो तो रोना नहीं ।
ज्ञान का खजाना है यहाँ चाँदी सिकका सोना नहीं ॥
मैं मेरी का झञ्झट झूँटा योगियों को ढोना है ॥
ब्रह्मज्ञानी, हाँ बाबा, गाँठ खुल बिखरजा ममता, थान ओट जा ॥२॥
गोपीचन्द लिकड़ग्या आगे पीछे तेरा प्यार गया ।
हाथ ना लगेगा मोह के कँडूलों नै तार गया ॥
तूने भेजा अमर करण वो भव सागर ते पार गया ॥
देख ले पिछाण करके तेरा गोपीचन्द नहीं ।
ज्ञान दीप दिल में जल रहा ऊर्जा में अन्ध नहीं ॥
कामना के धन्धे बेहद शिकञ्जों में बन्द नहीं ॥
गम खानी, हाँ बाबा, बाबा के कहे ते कर एक, काम नोट जा ॥३॥
गोपीचन्द की खातिर रानी कतियो मलाल नहीं ।
परमहंस ज्ञानी योगी बदलेंगे चाल नहीं ॥
जोगी है जगत से न्यारे तजुर्बे की ताल नहीं ॥
गुरशरणदास गुरु गोरख की गम्भीर वाणी ।
कानों से सुनी ना जाती सहम दमसी होगी राणी ॥
खजाना चपर गया मुझसे भावना गुरु की जानी ॥
मरजाणी, हाँ बाबा, आरजू, सुणे ते दिल पै, बैठ चोट जा ॥४॥

गोरखनाथ उवाच

तर्ज़ः

महारानी, ओ बाबा, बाबा जो कहेगा ।
हित की बात कहेगा री गोरखनाथ कहैगा ॥टेक॥
समझ ले तू मैना तुझको घेर मोह को घेरा रहा ।
गोपीचन्द छन्द में बदला ना मेरा ना तेरा रहा ॥
सोऽहं सार सत्य का ज्ञाता मिथ्या ना अँधेरा रहा ॥
आत्मा का ज्ञानी नर जिसे अध्यात्म् का चाव लगै ।
ब्रह्ममय बिलोके सबको अभिनता का भाव जगै ॥
कोई है ना शक्ति ऐसी सन्त को दे दाव ठगै ॥
दुख ठाणी, ओ बाबा, मैं मेरी को ज्ञानी आत्मघात कहैगा ॥१॥
यही हैं अनोखी नगरी ना राजा ना रङ्क कही ।
मरण पै ना मातम बजते, जन्म पै भी शङ्ख नहीं ॥
एक के अलावा यहाँ दूसरा ना अङ्क सही ॥
सोना है ना चाँदी कभी हँसते हैं ना रोते यहाँ ।
नाभी थल में प्राण स्थिर जागते है ना सोते यहाँ ॥
माया का प्रतजिक बोझा सनत जन ना ढोते यहाँ ॥
मरजाणी, ओ बाबा, समाधि में साधू ना दिन रात कहैगा ॥२॥
अमर होण भेजा तूने भँवर ते भी पार गया ।
पिंजरे में फँसे ना अब ये शिकञ्जे ते बहार गया ॥
सच पूछे तो गोपीचन्द से गोरखनाथ हार गया ॥
मुझको दबाया मोह ने कुण्डल ना पहराया गया ।
ब्रह्मानन्द भूला योगी प्रेम में लुभाया गया ॥
गोपीचन्द के द्वारा मुझको सोते से जगाया गया ॥
सचवाणी, ओ बाबा, गोपीचन्द ने बाबा शिव का हाथ कहैगा ॥३॥
गोपीचन्द रहा ना गोपी ध्यान ते परख ले राणी ।
समुन्दर को छोड़ उलटा झरने में ना जावे पाणी ॥
नाम अमर तेरे सुत का होगा साधू की अमोघ वाणी ॥
गुरशरणदास इतिहासकार कहीं छनद में लिखेंगे कवि ।
गङ्गा जी की धारा गरजे आसमाँ में घूमे रवि ॥
गोपीचन्द ब्रह्मज्ञानी बोलते रहेंगे सभी ॥
गमखाणी, ओ बाबा, मैनावती नाम सुत के साथ कहैगा ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः देहाती

माँ ने पूत फकीर किया इस उड़ी गरद ने माँ जाने ।
बिन बेटे कैसे बीतेगी दुक्ख दरद ने माँ जाने ॥टेक॥
फूल मिले कलियाँ रोई कैसी अजब नमूने की क्हानी ।
दशा बदल गई आग लगी जग जाम हुई गल में वाणी ॥
कोयल कड़वी लगै बोलती झरने में झीके पाणी ।
आगे धरे हटे पाँ पीछे भूला लाभ हाणी ॥
एक पूत सोलह राणी तन चढ़ी हर्द ने माँ जाने ॥१॥
हमें कण्ठ में कौन सजावे बूझैं चमन फूल माँ ते ।
रजधानी में कहर गूँज रहा कैसे धुवे धूल माँ ते ॥
हाथ पकड़ के बूझेगा जब देश का नियम रूल माँ ते ।
देश निधिं ने कहाँ खो आई बणगे फूल शूल माँ ते ॥
भारी भूल हुई माँ ते इस चुभे करद ने माँ जाने ॥२॥
अधर हवा में महल बनाया सुन्दर किला कोट ढा के ।
परम हंस हो गया पूत माँ लौट पड़ी ठोकर खाके ॥
वहाँ गये ते मरण भला में बोलूँगी किस ढब जा के ।
ठोकर खाके गिरी एकदम सूखे खार चुभे माँ कै ॥
मीठा स्वाद अमरफल खाके हुई छरद ने माँ जाने ॥३॥
महाराणी गिर गई धरण पे बादल गरज उठे गम के ।
दर्द भार भूगोल घूमगा हवा चलन लगी थम थम के ॥
माली चार पालकी लेके राणी धोरै आ धमके ।
धौलागढ़ बणी नरकपुरी जण ले चले वहाँ दूत यम के ॥
गुरशरणदास कहे कलम के निब फटी फरद ने माँ जाने ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः

लौटी पूत फकीर बणा के माथे दर्द लगी माँ कै ।
बहुओं का सिन्दूर मिटाया जहरी कर्द लगी माँ कै ॥टेक॥
कलियों की गोदी बैठे फूल गालियाँ देते थे ।
पञ्छी बैठे पेड बोलै जण बजा तालियाँ देते थे ॥
झुका डालियाँ दींखे ना सत चोट दर्द लगी माँ कै ॥१॥
कभीकभी कदम बढ़ाती थी माँ दिल का खुला जख्म सीँ कै ।
हिरदै होजा फाटंन को बछडे बिना गाय दीखै ॥
अमृत का प्याला पीकै विष कैसी छर्द लगी माँ कै ॥२॥
पूछेगी दीवार राण की कह देगी सोलह बेली ।
पिया हमारे के बदले में तू क्यूँ ना बणगी चेली ॥
उनकी रची हथेली की रोती हुई जर्द लगी माँ कै ॥३॥
गुरशरणदास बेहोश हुई माँ घिरनी खा गिरगी गम ते ।
भरा हुआ इतिहास दर्द का कहा ना जा सकता हमते ॥
भाग्य विधाता की जुल्म कलम ते फटी हुई फर्द लगी माँ कै ॥४॥

रानी उवाच

तर्जः औलाद वालो फूलो

माँ बोल दिल का माली कहाँ है ।
सूखे सिन्दूर की माँ लाली कहाँ है ॥टेक॥
अँखियों में पानी, घबराई हो क्यूँ रानी ॥
कहो दिल क्या दर्द कहानी ।
छूट गई क्या टूट गई क्या रिश्ता डोर पुरानी ॥
मेरी जानी जवानी का पाली कहाँ है ॥१॥
किस रञ्ज में पड़ी हो, गुम सुम सी खड़ी हो ॥
जैसे घड़ा चुप बिना फनर के ।
धूल हुई क्यों भूल रही क्यों सारे दाव हुनर के ॥
मेरे घर में सिजा की दीवाली कहाँ है ॥२॥
सच बोलना पड़ेगा, सही तोलना पड़ेगा ॥
सब खोलना पड़ेगा जो है मन में ।
मौज उड़ाना हमें सुलाना सासू लाल कफन में ॥
खिलते चमन में डाली कहाँ है ॥३॥
गुरशरण लिखेगा, रङ्ग छुप ना सकेगा ॥
तुम्हें अब ना मिलेगा बहाना ।
देश देश में, बुरे भेष में, देखेगा रोज जमाना ॥
गाना गमों से खाली कहाँ है ॥४॥

रानी उवाच

तर्जः दो दिल टूटे दो दिल हारे

जोगिन बनेगी तू महलों में रह ले ।
उजाड़ी क्यों कलियाँ बहारों से पहले ॥टेक॥
राह में बसेंगी ये जोगिन आयेंगे जोगी पिया रास्ते ।
एक पल कलप में गुजरे आज्ञा तू देदे रब के वास्ते ॥
सास ते पुकारी कहना सो कहले ॥१॥
हमारी नमस्ते माता तुमको तुम्हारे सारे गाँव से ।
जिन्दी नहीं तो मरके मिलेंगी अपने श्याम से ॥
नाम तै भरेगी आँसुन के चेहले ॥२॥
एक दिन सजाई माँ ने बजा के शहनाई म्हारी डोलियाँ ।
आज तू परहादे सासू बहुओं के कन्धे पीली झोलियाँ ॥
बोलियाँ लिखेंगे ये महल दुमहले ॥३॥
गुरशरणदास पन्ने बदलते रहेंगे इतिहास में ।
अमरता पे ढलते दिये जलते रहेंगे रनवास में ॥
नाश में मजा है जा कजाओं को सहले ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः देहाती

सुन गोपीचन्द के बोल, गया हृदय मैना का डोल, कौन माँ कह टेरता ।
ममता का सूखा पेड़ कौन पानी सा गेरता ॥टेक॥
तड़फा जरठ शरीर खाट ते उठगी राणी थी ।
सात बरस के बाद सुनी बेटे की सी वाणी थी ॥
पानी बरसे थके नैन ते, चन्दा उभरा फेर गहण ते,
विपत का अब तक ढेर था ॥१॥
झुलसा हुआ शरीर बोल सुणतई उठ गया ।
गिरी फर्श पर रपट चोट तै अङ्ग फूटग्या ॥
घूटग्या जहर खड़ा गोपीचन्द, था वो योग नियम के पाबन्द,
डर गोरख का घेरता ॥२॥
गोपीचन्द ने खून देखा जब माँ का बह गया ।
ब्रह्मज्ञान दिया फैंक दौड पग माँ का रह गया ॥
रह गया योग कर्म खड़ा रोता, गोपीचन्द मार गया गोता,
समन्दर ममता मेर था ॥३॥
गुरशरणदास स्तन ते दूध की धार चल गई ।
गोपीचन्द लगा पीण ज्ञान की नींव हल गई ॥
. . . .
समय का कैसा फेर था ॥४॥

तर्जः मत ना छेड़ो पड़ी रहन दो

गोपीचन्द की झोली में रही गेर प्रेम ते भीख,
सन्त का स्वागत था भारी ॥टेक॥
प्रेम ते बोलीं सोलह रानी, निष्कपट प्यार भरी वाणी,
हे ज्ञानी इस योग पथ में कर लो हमें भी सरीख ॥
साथ में घूमेंगी सारी ॥१॥
सेवा का तुम दे दो अवसर करो मेहरबान प्रभु हम पर,
परमेश्वर को चित धारण की हमें भी बता दो लीक ॥
पार तर जावेंगी नारी ॥२॥
जोर नहीं चलता नारी का, सै बावल आज्ञाकारी का,
थारी मरजी का काम करेंगी जिसको समझो ठीक ॥
धर्म को अबला ना हारी ॥३॥
गुरशरणदास नहीं ध्यान प्यार पै, गोपीचन्द आ गये द्वार पै,
बाहर लिकड़ के चाल दिये रहे जब तक लोगों को दीख ॥
देख के फेर धीर धारी ॥४॥

तर्जः देहाती

चला भीख माँगने ठा गोपीचन्द झोली ॥टेक॥
गोरे अङ्ग में अलफी पहरी कानों में लिये कुण्डल डाल ।
रुद्राक्ष की माला गल में पीछे को छिटका लिये बाल ॥
चरण खड़ाऊँ पहन गुरु की चाल पड़ा मस्तानी चाल ॥
सोटा कमण्डल लिए हाथ में बाबा पै हद हो ली ॥१॥
विघन बँगाले पहुँच गया था सुमरन कर रघुराई का ।
दो रोटी का चून माँगता धन चहिये ना काई का ॥
फिर मन में एक ममता जागी दर्शन हो माँ जाई का ॥
भीख माँगता फिरै शहर में ना बात मरम की खोली ॥२॥
चन्द्रवल के दर पै पहुँचा सोचा अलख जगाऊँगा ।
बाँदी से ना भिक्षा लूँ आज दर्श बहन के पाऊँगा ॥
जल्दी ल्याओ बहन थारे रोज रोज नहीं आऊँगा ॥
बाँदी ल्याई भीख थाल में लो बाबा न्यूँ बोली ॥३॥
रामकला कह भगजा बाँदी उठ काया में हूल रही ।
चन्द्रावल भिक्षा क्यूँ ना ल्याई राज नशे में फूल रही ॥
मैं तनै समझादूँ बाँदी तू लखीराम ने भूल रही ॥
हाथ कोरड़ा ठालिया बाँदी जुल्म करै दिन धौली ॥४॥

तर्जः हरियाणवी

कौली भर चन्द्रावल रोई मेरे सुन गोपीचन्द वीर ।
क्यूँ राज छोड़ के मेरे भाई हुआ फकीर ॥टेक॥
के भाभी ने बोली माड़ी, हुआ जोगी बुरा मान कै ।
क्यूँ ना सोची तनै मेरे भाई बट्टा लगेगा शान कै ॥
जुल्म करे तनै आप जानके म्हारी फोड़ चला तकदीर ॥१॥
किस पै छोडी तने धन माया कि पै छोड़ी रजधानी ।
किस पै छोड़ी माँ दुखियारी तनै किस पै सोलह राणी ॥
सब तरियाँ तू कर चला हाणी म्हारी कौण बँधावे धीर ॥२॥
याणी उमर में बाप छोड़ गया पीहर में तू ही था हिमाती ।
मतलब की यारी असनाई मतलब के गोती नाती ॥
तेरे बिना मेरा ना कोई भाती सर कौन उढावे चीर ॥३॥
रामकला कह गोपीचन्द को लगा रङ्ग भगवाने का ।
लखीराम कह बालक पन सै मनै शौक लगा गाने का ॥
रोज रोज थारे ना आने का होलैन दो अमर शरीर ॥४॥

नर सुल्तान

कवि उवाच

तर्जः

हो गई उमर किशोर भूप सुत नित उत्पात करै था ।
राजपूत अभिमान के वश झगड़े बिन बात करै था ॥टेक॥
नर सुल्तान नारियों के जल कलश फोड़ देता था ।
नाक की नथ से पार जाय ऐसा तीर छोड़ देता था ॥
बाघ हवा से हिलै तो घोड़ा तुरत दौड़ देता था ।
औघट घाट गली कुञ्जों में सुल्तान मोड़ देता था ॥
भेद निशाना सीधे बाँये दोनों हाथ करै था ॥१॥
बाँये कर में बाण और सीधे में धनुष गहै था ।
नगन पीठ घोड़े की चढ़ कै सद कै खड़ा रहै था ॥
चन्द्र कलेवर तै जवान ना कड़वे बोल सहै था ।
कुशल सवार गजब सुथरा जण जल पै फूल बहै था ॥
बाल वृद्ध नर नार उपद्रव सबके साथ करै था ॥२॥
फैल गया आतङ्क शहर में सब घबराण लगे थे ।
यत्र तत्र सर्वत्र उसी का जिकर चलाण लगे थे ॥
दिन में माग शून्य रात में लोग कमाण लगे थे ।
तज के अपना देश बहुत परदेश में जाण लगे थे ॥
भयव्यापी सब ओर दुखी सब कोई शिकायत करै था ॥३॥
गुरशरणदास कह मनुष का दुश्मन सत्ता का मद हो सै ।
करै उपद्रव रोज अचानक जो मानुष बद हो सै ॥
सन्त पलायन कर जाते जब जुल्मों की हद हो सै ।
बिना सन्त किस भाँति भलाई दुनिया में कद हो सै ॥
जन जीवन हो गया दुखी सुल्तान कुघात करै था ॥४॥

तर्जः

सुन सुल्तान भूप के हित में नीती चार कहूँ सूँ ।
वेद शास्त्र और अनुभव अपना सुख का सार कहूँ सूँ ॥टेक॥
बालक, वृद्ध, अपङ्ग, मुसाफिर, ज्ञानी ज्योतिषी स्वामी ।
वैद्य, गुरु, कवि, विप्र, पुरोहित, नार, विरत, जग नामी ॥
ये चौदह अपराधी हों चाहे भ्रष्ट कुमारग गामी ।
शाम नीति से शासन करते चतुर भूप आरामी ॥
सभी समान समझने चहिये सद्व्यवहार कहूँ सूँ ॥१॥
नौकर, लोभी, झूँठ वाणिया, पञ्च ग्वाल मदहोशी ।
द्वारपाल, घर भेद, रसोईया, आलसी और पड़ोसी ॥
दान नीति प्रयोग करै नृप जो ये बारह दोषी ।
मुक्त देश में फिरने चहियें सन्यासी सनतोषी ॥
दान, दया और न्याय वीरता नृप आधार कहूँ सूँ ॥२॥
देश द्रोही, परत्रियागामी, तस्कर शठ हत्यारा ।
चोर, निलज, बटमार, पिसुन, नृप दण्ड इन्हें हो भारा ॥
चतुर, सोनिया, मित्र-शत्रु का दुखी जो रण में हारा ।
भेद नीति से बस में करते पता पाट जा सारा ॥
जिसने लिया जन्म जीने का है हकदार कहूँ सूँ ॥३॥
राजा रङ्क धनी निर्धन सब जीव राम के प्यारे ।
वो ही पालक वो ही नाशक वो ही बनावणहारे ॥
जगत चक्र जञ्जाल काल का गाल खुले मद भारे ।
बेरा ना कब करै कलेऊ धूल क्षणिक सुख सारे ॥
गुरशरणदास जिसे जीत कहै तू मैं तेरी हार कहूँ सूँ ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः

आधी ढली पहर के तड़कै उठ सुल्तान लिया था ।
धर घोड़े पै जीन वीर नै शीघ्र पयान किया था ॥टेक॥
वीहड़ विकट अरण्य निबिड़तम मारग ना सूझै था ।
जब घोड़े की टाप पड़ै तो सारा वन गूँजै था ॥
भाग पड़ै मृग राह तङ्ग जण उन ते मग बूझै था ।
कदै मिलै गजराज और कदै शेरों ते जूझै था ॥
मुख में दाब लगाम हाथ में तीर कमान लिया था ॥१॥
पहुँच गया वन मध्य वहाँ पर ताल एक सुन्दर था ।
चन्दन के वृक्षों से ढका एक शिवजी का मन्दिर था ॥
पेड़ों में छा रही लता कहीं लघु झरना झर झर था ।
मनमोहक था दृष्य स्वर्ग सा इन्दर कैसा घर था ॥
नर सुल्तान उतरग्या नीचे फिर जलपान किया था ॥२॥
शीतल मन्द सुगन्ध पवन का झोंका बड़ा मधुर था ।
होगी रफू थकान उतरग्या मदहोशी का ज्वर था ॥
मन्दिर से आवाज लगी एक कोयल कैसा स्वर था ।
मानो यहाँ मनोज मौज में बसा हुआ ईश्वर था ॥
धीरे धीरे चला उधर को उस राग पै ध्यान दिया था ॥३॥
मन्दिर में एक सुघड़ सुन्दरी शिव के गीत कहै थी ।
रम्भा थी या रति स्वर्ग तज शङ्कर शरण रहै थी ॥
हरि भक्ति में लीन नैन ते अश्रुधार बहै थी ।
श्वेत वस्त्र ते आच्छादित चन्दा सी छवी लहै थी ॥
गुरशरणदास ऐसा लगे शारदा ने गुणगान किया था ॥४॥

तर्ज़ः

देख तेरा हाल मेरा दिल हलग्या ।
दुपहरी ते पहले कैसे दिन ढ़ल ग्या ॥टेक॥
अप्सरा से रम्भा रती सती किन्नरी ।
विश्व मोहनी काया क्यूँ तेरी दुख से भरी ॥
कौन ऐसा पापी जिसने वेदना करी ।
जङ्गल में अकेली कैसे स्वर्ग की परी ॥
हरी के भजन में कैसे मन चलग्या ॥१॥
नैन खञ्जनों से पट बाँधे क्यूँ गये ।
यौवना रुदन के सब स्वर साधे क्यूँ गये ॥
किसी के विरह में दिन घणे जादे क्यूँ गय ।
चिन्ह विधवापन के तन पै लाधे क्यूँ गये ॥
बता दे तू साँची सी कोई छली छलग्या ॥२॥
देखने में लगता तुझपै दुख सै घणे ।
चारों ओर गम के बादल फिरैं सै तणे ॥
सताई किसी ने तन पै जखम सै बणे ।
कमल जैसे पग भी तेरे काँटो से छणे ॥
लगै सै चणे की गैल्या घुण दलग्या ॥३॥
गुरशरणदास जब सुल्तान ने कही ।
हिड़कियाँ दे रोई ना वो होश में रही ॥
कहीं दौड़ के बे बे नर ने बाँह जा गही ।
बता दे जो तन पै बीती कहानी सही ॥
रही ना कसर कुछ झगड़ा गल घलग्या ॥४॥

तर्जः

परमेश्वर ने भेज दिया मुझको बे बे कहने आला ।
कैसे दर्शन करूँ तेरे मेरी ज्यपती का भिड़ ग्या ताला ॥टेक॥
उज्जैन शहर में जन्मी थी है चन्द्रापीड़ पिता मेरा ।
बाल काल में माँ मरगी किस तरह पली मनै ना बेरा ॥
मुझ पै कर सन्तोष पिता जी सुख से भरा श्वाँस लेरा ।
न्यू कहता ऐसा पुत्र मिले मैं जिससे ब्याह करूँ तेरा ॥
के बुझै भरी दर्द कहानी जुल्म जाल ने घर घाला ॥१॥
समझ नहीं पाया जग में नर व्यापक ब्रह्म अनादी को ।
रूप राम ने दिया मुझे बस मेरी ही बरबादी को ॥
बङ्कासुर ने दिया निमन्त्रण मेरे सँग में शादी को ।
मेरे पिताजी छोड़ सकै ना कुल नीति बुनियादी को ॥
मानव और दानव के बीच में बाजी का खिचग्या पाला ॥२॥
चितरञ्जन पाञ्चाल देश के उनके सँग शादी कर दी ।
लगते हि पता एक दिन घर पै आया बेदरदी ॥
सोते हुए पति के सर पै नगन तेग शठ नै धर दी ।
चार खण्ड कर दिये पति के खून ते सेज मेरी भर दी ॥
हे भगवान मनुष भी जग में कर सकता इतना चाला ॥३॥
उठा लई मेरा हरण कर्या मेरी देह मार के तोड़ दई ।
करके बेसुध बियाबान में उस पापी ने छोड़ दई ॥
अपने आप उठा पत्थर मैंने आँख निमाणी फोड़ लई ।
शङ्कर की आ गई शरण भगवान तै यारी जोड़ लई ॥
गुरशरणदास अब मुझे दीख रहा जगत रूप असली काला ॥४॥

तर्जः

हाथ जोड़ कै अरज करूँ मेरे टूटे दिल की चाह करिये ।
तू छत्री का पूत उच्च कुल सोच समझ कै हाँ भरिये ॥टेक॥
मघ राजा की सुघड़ सुन्दरी पुट पङ्कज मुख चन्द्र छवि ।
मृग नैनी मदमस्त यौवना रति से उपमित करैं कवि ॥
तेज पुञ्ज अति गठित कलेवर तपै गगन में मेघ रवि ।
हंस गामनी मुखऽरविन्द सुख सिन्धु फूल सी उमर नवी ॥
शेष यज्ञ की पुञ्ज हवि तू उसकी गैला ब्याह करिये ॥१॥
मेरी बुआ की पहल सुता यो नाता रिश्तेदारी का ।
बङ्कासुर ने दिया निमन्त्रण कर ले हरण कँवारी का ॥
देख चुके मग भूप हाल में दुख दुर्दशा हमारी का ।
इसीलिए बेचैन विषय है सचमुच चिन्ता भारी का ॥
बण भगवान बिचारीका गई आब बचाने की राह करिये ॥२॥
बङ्कासुर भट विरल बाँकुरा हल्का हाथ जाणिये ना ।
बड़े बड़े नरपाल हराये छोटी बात मानिये ना ॥
चन्द्रापीड़ भूप वर भट है छत्री जात बाणिये ना ।
नींद हराम करी उनकी इकला उत्पात ठाणिये ना ॥
बिन छाणे पिये पाणिये ना विष बिखरे की परवाह करिये ॥३॥
बङ्कासुर से युद्ध करण का करड़ा काम घणा भईया ।
सम्भावित किसी क्षत्राणी ने अभी नहीं शेर जणा भईया ॥
कँवर निहाल दे ब्याहण की कोई युक्ति और बणा भईया ।
गुरशरणदास कर हरण उसे लड़ने को करूँ मना भईया ॥
लोहे का कठिन चणा भईया चांबै मत दाँत तबाह करिये ॥४॥

तर्ज़ः

पुरुष सिँह हो गया क्षुब्ध सुन करुणा की कहानी सै ।
रोद्र रूप भुजदण्ड उग्र नभ गूँज गया बाणी सै ॥टेक॥
शङ्कर की सौगन्ध प्रमाणिक वचन कहूँ तेरे ते ।
गया जान बङ्कासुर ने इस जल थल के डेरे ते ॥
बच नहीं सकता क्रूर कठिन अब मृत्यु के घेरे ते ।
रक्षा उसकी हो ना सकेगी विष्णु तक प्रेरे ते ॥
कह दिया बे बे तुझे भ्रात को अब जोखम ठाणी सै ॥१॥
महिला का छुआ हाथ गात कन्धे ते काटना होगा ।
राजकँवर क्षत्री के पुत्र को न्याय छाँटना होगा ॥
बङ्कासुर पापी का माँस गीधों को बाँटना होगा ।
अधम निशाचर का सिर अब तीरों पै डाटना होगा ॥
समझ लिया शायद शठ ने सब जगत भरा पानी सै ॥२॥
शक्ति पूर्ण कमान के ऊपर परतञ्चा जोड़ूँगा ।
जङ्ग बीच वीभत्स कर्म की मर्यादा तोड़ूँगा ॥
बङ्कासुर के सहित वंश को जीव नहीं छोड़ूँगा ।
कर पूरा प्रतिशोध तभी मैं घर घोड़ा मोड़ूँगा ॥
निशाचरों ने सब धरती बिन वीरों की जानी सै ॥३॥
बङ्कासुर रहा देख शेर को आँखों की काली में ।
मन्दिर का थल हाल गया जण पारा कण थाली में ॥
पञ्छी सब धनबाद बोल रहे वृक्षों की डाली में ।
सिँग गर्जना गूँज रही थी बियावान खाली में ॥
गुरशरण धर्म हित देह हमें यो मोल नहीं लानी सै ॥४॥

तर्जः

आशीर्वाद विजय का ले लिया बे बे के पैरों गिर कै ।
रहग्या खड़ा अचम्भित एकदम जब देखा उल्टा फिर कै ॥टेक॥
सिँह पौंर से कूद गया सुल्तान चला आगे थोड़ा ।
चौगरदे नै देख रह्या पर दीखा नहीं उसे घोड़ा ॥
बाजी कर लिया हरण जान सुल्तान तुरत औघट दौड़ा ।
घबरा गया अपार सामने सिँह सिँहनी का जोड़ा ॥
किम्कर्त्तव्य विमूढ हुआ वह हिंसक पशुवों से घिर कै ॥१॥
करड़ी नजर सिँह की होगी और सिँहणी गुर्राण लगी ।
हमला को तैयार शेरनी कड़वे त्यौर लखाण लगी ॥
जब देखा सुल्तान कँवर ने मृत्यु जाल फलान लगी ।
जीवन की तज आस हौसला आतम शक्ति बढान लगी ॥
तरकस में से तीर निकाला लौह मठ बाँध लिया सिर कै ॥२॥
जाण गया सिँह सावधान हो गया मनुष है पशु घाती ।
तीव्र गति कर दिया आक्रमण लम्बी डाक बढा छाती ॥
बदल पैतरा गया कँवर सुल्तान कबूतर की भाँती ।
मारा बाण फाड़ दिया सीना प्राणहीन हुआ उत्पाती ॥
दौड़ पडी तत्काल सिँहनी क्रोध भरी काया घिर कै ॥३॥
सिँह के बाद सिँहनी आवै ये उसको अन्दाज भी था ।
नारी का नथ भेदणिया सुल्तान निशानेबाज भी था ॥
हाथ पड़ी तलवार मार दी अब कुछ गर्म मिजाज भी था ।
सिँहनी के दो खण्ड हुए वह वीरों का सरताज भी था ॥
गुरशरणदास मोती की शोभा होती माला में पिर कै ॥४॥

तर्जः

कच्चे नरियल पके बेर फल तीरों तै तोड़ै था ।
खाण लगा सुल्तान भूख में मुक मारे फोड़ै था ॥टेक॥
उल्लू के घर चमगादड़ ठाड़े मेहमान बणै सै ।
भूख लगे पै लोग कहैं गूलर पकवान बणै सै ॥
छत्री वीर सपूतों का जीवन इम्त्यान बणै सै ।
सरल सादगी कठिन तपस्या से इन्सान बणै सै ॥
धीरज बणै पिछान विपत में वो दूणा दौड़ै था ॥१॥
फल खाये कुछ भूख मिटी और काया भी हारी थी ।
सघन पेड़ के तले घड़ी भर लेटन की त्यारी थी ॥
बेरा ना विपदा देवी की इब कौन सी बारी थी ।
हुई अचानक दुर्घटना जो पहाड़ से भारी थी ॥
सारी बणी बिरान जिधर सुल्तान नजर मोड़ै था ॥२॥
थोडी दूर सिँह-सिँहनी दो शावक लिए साथ में ।
लेटे हुए हीस की जड़ में दोनों किसी घात में ॥
इत्तफाक सुल्तान कँवर ने ले लिया धनुष हाथ में ।
. . . .
पलक झपकते सिँह आग्या नर परतञ्चा ताणै था ॥३॥
गुरशरणदास सिँह क्रुद्ध कूद के झट सीने पै आया ।
कलाबाज रण चतुर कँवर बाँए हट गात बचाया ॥
हमला करा सिँहनी ने नर तेग काट ना पाया ।
पञ्जा पकड़ धकेली पाछे थी फौलादी काया ॥
चक्र सुदर्शन की तरियाँ सुल्तान कँवर दौड़ै था ॥४॥

तर्जः

वीरों कैसा गात शकल कुछ फीकी सी लागै ।
बोल मुसाफिर आँख खोल तू सोवै या जागै ॥टेक॥
देख वीर उठ मेरी ओड़ तनै विप्र जगावै सै ।
मन की कह दे बात बंणी में तू के च्हावै सै ॥
भूल गया तो पूछ विप्र तनै बाट बतावै सै ।
भूखा है तो भोजन खा तू क्यूँ दुख पावै सै ॥
होती आवै समझ तनै जण कित जाणा आगै ॥१॥
कोमल गात उमर ताजा कोई विपदा ज्यादा सै ।
लगता है तू राजपुत्र तेरा कठिन इरादा सै ॥
शायद तूने किया किसी से बेढंङ्ग वादा सै ।
बता ज्वान इस बीहड में तनै कुंणसा फादा सै ॥
आधा हुआ शरीर फिकर तेरे हृदय ने दागै ॥२॥
दुख सुख दोनों साथ मित्रता इनसे कीजिए ।
कहीं अमृत कहीं जहर मिले तो हँस के पीजिए ॥
आशीर्वाद उपदेश आज ब्राह्मण से लीजिए ।
लेके मेरी पाग तू अपनी मुझको दीजिए ॥
उठ जा करके होश वीर क्यूँ हिम्मत नै त्यागै ॥३॥
गुरशरणदास सच्चे पथ को नर छोडते नहीं ।
नाता नीच निकम्मों से कभी जोड़ते नहीं ॥
सतवादी कभी दिये वचन को तोंडते नहीं ।
कुमारग में अपने चित को मोड़ते नहीं ॥
शूरवीर-रणधीर रागनी जङ्ग बीचं रागैं ॥४॥

तर्ज़ः

जानी और सुल्तान, बीच में कर साखी भगवान,
ये दोनों यार हो गये ॥टेक॥
घोड़ों पर असवार युगल भट बाँके वीर थे ।
था उज्जवल परिधान पुरन्दर की तस्वीर थे ॥
तरकस तीर धनुष खिँची डोरी, रण के लिए उतावल होरी,
काल अनुहार हो गये ॥१॥
आपत्ती कर्मठ पुरुषों पर आया करै सै ।
पूरण देख चन्द्रमा राहू छाया करै सै ॥
आया एक अन्धड़ तूफानी, भूले बाट ना जात पिछानी,
बल बेकार हो गये ॥२॥
इतना दम घुट गया दीखना बन्द हो गया ।
दोंनों हो गये अलग रास्ता उनसे खो गया ॥
नया सङ्कट पड़ गया बण में, दोनों भारी चिन्तित मन में,
अब लाचार हो गये ॥३॥
गुरशरणदास नये मित्र बणे पर दूर थे दोनों ।
फँस कर घोर आपदा में मजबूर थे दोनों ॥
गुजरा क्रूर समय अति भय से, मरते गिरते जैसे तैसे,
बण से पार हो गये ॥४॥

तर्ज़ः

सुल्तान चल दिया, प्रण मन में कर लिया ।
अति ऊँची नीची बाट से, कङ्कर औघट घाट से, सुल्तान चल दिया ॥टेक॥
सङ्कट का समाधान भी होगा जो धीरज धारेगा ।
सन्तोष होश में जो कदम बढाये वो यम को भी मारेगा ॥
हारेगा नर घबराट से, लोहा भी तिरता काठ से, सुल्तान चल दिया ॥१॥
तनिक अश्व की बाग हिली तो जण कपोत उड़ जाये ।
मग मोड़ तोड़ पै बिन किये इशारा आप अश्व मुड़ जाये ॥
घबराये सिँह औंचाट से, फिर गर्जते झुंझलाट से, सुल्तान चल दिया ॥२॥
मिल गया आगे बाग, बाग में तला गाथ मुख धोया ।
जलपान किया फिर चिन्ता जागी यार कहाँ पर खोया ॥
सोया छाया में ठाट से, जागा हुआ दिन आठ से, सुल्तान चल दिया ॥३॥
गुरशरणदास यहाँ कथा रोक अब जानी चोर की बारी ।
वन पार किया मेरा मित्र कहाँ है सोच सोच मन भारी ॥
यारी करी सम्राट से, पिसना है घुण दो बाट से, सुल्तान चल दिया ॥४॥

तर्ज़ः

हाथ जोड़ माली बोला एक सो रहा ज्वान बाग में ।
पुरुष सिँह निर्भीक गात जण खिल रहा फूल फाग में ॥टेक॥
चपल अश्व बँध रहा निकट वह सोवै बिना सबर सै ।
तरकस तीर कमान तेरा सँग असला बहुत ज़बर सै ॥
देखण में अनुमान यह वह शायद राजकँवर सै ।
लगता है घणा थका हुआ वह आया दूर सफर सै ॥
लम्बा श्वाँस गूँज भयदायक ज्यों सनकार नाग में ॥१॥
राजोचित परिधान स्वर्ण के जेवर घले गात में ।
तरकस तीर सिरहाने पर और पकड़ा धनुष हाथ में ॥
उज्जवल छवि मनोहर मुख जण चन्दा खिला रात में ।
रहा एकला सो धरती पर साथी नहीं साथ में ॥
भाल विशाल वीर ओजस्वी जैसा तेज आग में ॥२॥
पता नहीं प्रवेश बाग में किया किधर से आया ।
प्रातःकाल जगे हमको वह न्यूँ ही सोवता पाया ॥
वीरों कैसा ढ़ङ्ग देखकर मैं मन में घबराया ।
सच कहता महाराज मैं डरग्या सोता नहीं जगाया ॥
आपत्ति से घिरा लगै वह अट रहा धूल दाग में ॥३॥
गुरशरणदास मघ भूप समझ गया कोई अतिथि आया ।
सेवा और सत्कार करो तुम माली को समझाया ॥
स्वागत की भरपूर व्यवस्था फिर भोजन बनवाया ।
सोने के कई कलश नीर भर न्हाने को भिजवाया ॥
मिलता है हर ठौर वही जो दाना लिखा भाग में ॥४॥

तर्जः

जब भोजन पाने बैठ गया सुल्तान ॥टेक॥
रजत धातु के कलश कटोरे सोने का था सुन्दर थाल ।
चाँदी के सागर में जल था शीतल गङ्गा जल की ढ़ाल ॥
हाथ धुला कर लगी परसने कई तरह की सब्जी दाल ॥
चटनी चाट मगज मावे की रबडी हुई बरफ से शीत ।
ताजा नरम इमरती बर्फी जिनसे करें देवता प्रीत ॥
दूध गऊ का शन्दल शर्बत लेता मुनियों का मन जीत ॥
छत्तिस व्यन्जन खीर सुगन्धित विविध भाँति पकवान ॥१॥
फुलका गोल प्रफुल्लित धोरे भरा कटोरा मक्खन ढेर ।
गऊ घृत में ेक रही जलेबी ऊपर दई मलाई गेंर ॥
क्या खाऊँ क्या छोड़ूँ इनमें देखै था सुल्तान चफेर ॥
आलू बथुआ भरे पराँठे गोल कचौरी खस्तेदार ।
षटरस पेय अमल रस भल्ले सैमी चिकनी लच्छेदार ॥
मुसली का अवलेह बनाया देख गिरी इन्दर की लार ॥
यह चाखो यह चाखो कह रही दासी मधुर बयान ॥२॥
मघ राजा की राजकुमारी आ पहुँची सखियों के साथ ।
मुख जैसा अरविन्द प्रात का कमल नाल सम सुथरा गात ॥
दन्त कतार माल मोतिन की रङ्ग बदामी ....॥
जिधर आगमन गजगामिन का लगा देखने नर सुल्तान ।
मघ राजा की सुता यही है करी कुँवर ने ठीक पहचान ॥
भोजन कर्म समापन करके कुल्ला किया किया जलपान ॥
राजकुमारी का भी कुँवर की ओर खिँचा जब ध्यान ॥३॥
विधि का सुघड़ विधान है कैसा श्रोता सुनना करके गौर ।
पदचिन्हों को परख परख कर चला उधर को जानी चोर ॥
पहुँच गया उस ही उपवन जहाँ पर था सुल्तान किशोर ॥
दोनों मित्र मिले आपस में मन में हो गई खुशी अपार ।
करवाया स्नान मित्र को तब कीन्हा भोजन व्यवहार ॥
जानी सो गया उसी बाग में आँखिन अधिक नींद का भार ॥
गुरशरणदास अब आगे देखो विधि का अमिट विधान ॥४॥

तर्जः

शादी का प्रस्ताव ना मानूँ मौत से बाजी वद राखी ।
बेरा ना मघ भूप मेरा अब जीवन है कितान बाकी ॥टेक॥
महीपाल तुमको नहीं ब्यौरा मेरी जटिल कहानी का ।
बारह वर्ष करूँ ना सेवन गाँव और रजधानी का ॥
मेरे भाग्य में राज लिखा ना लिखा सङ्ग नहीं रानी का ।
आज तलक ही बीत लिया है आधा भाग जवानी का ॥
पता नहीं कब दल दे मुझको घूम रही जम की चाकी ॥१॥
शिव के गा रही गीत बणी में अन्धी बहन मिली मुझको ।
नारी की दुर्दशा दुखद नहीं होवे सहन मिली मुझको ॥
खुला हुआ मुख सुरसा का बस उसमें रहन मिली मुझको ।
बङ्कासुर से युद्ध करन की आपद गहन मिली मुझको ॥
लगा लेओ अन्दाज आप क्या आवश्यकता है ब्याह की ॥२॥
आशीर्वाद देओ मुझको अब बङ्कासुर से जँग होगा ।
हम दो असुर अनेक युद्ध का बड़ा निराला ढँग होगा ॥
पता नहीं सौभाग्य सफलता लेकर किसके सँग होगा ।
कुल को लगे कलङ्क बहन को दिया वचन जो भँग होगा ॥
मेरे बाजू पर बँधी हुई है मेरी बहिना की राखी ॥३॥
कन्या का अपहरण करण का बङ्कासुर को है चसका ।
अभी ना पाया स्वाद उसे इस कामुकता के विष रस का ॥
विजय पराजय हो किसकी ये निर्णय नहीं नर के बस का ।
धर्म के बल पर कहता हूँ सतखण्ड करूँ उस राकस का ॥
गुरशरणदास शङ्कर दे विजय जो लाज बचै भारत माँ की ॥४॥

तर्ज़ः

कर्मठ नर की कर्म करण को शुभ श्रद्धा रहती है ।
उस की बुद्धि गहन विपत को धर धीरज सहती है ॥टेक॥
जानी बिछुड़ गया था वीर मिला सुल्तान से ।
पता बूझता घोर रात में सङ्कट के इम्तान से ॥
किस तरह बचा वह हरि जानै इस दुर्घट घोर तूफान से ।
आपत्ति में लग जाती है मन सुरती भगवान से ॥
राम बचाये बचै जो विपदा बन पर्वत ढहती है ॥१॥
पूरब का प्रकाश हुआ कुछ ऊषा की लाली से ।
भरी उड़ान पक्षियों ने तब पेड़ों की डाली से ॥
मुश्किल जीवन बचा आज जमदूत रात काली से ।
मन ही मन कर रहा प्रार्थना जीवन के माली से ॥
बहकी नाव हरी कृपा से कण्ठे को बहती है ॥२॥
आखिर पण्डित कुशल चोर था लिया लक्ष अनुमान से ।
सीधा मारग पकड़ लिया घोडे के पद पहचान से ॥
डेढ पहर दिन चढा बाग में भेंट हुई सुल्तान से ।
दोनों मित्र मिले ऐसे जैसे भरत मिले भगवान से ॥
इन्तजार विरह की अगनी हिरदय को दहती है ॥३॥
गुरशरणदास हर आपत्ति नर वीरों से डरती है ।
मन के कायर लोगों का वह नित पीछा करती है ॥
सुपन में पाई सम्पत्ति नहीं निर्धनता हरती है ।
निर्दोष काठ की नाव कुशल मल्हा से पार तरती है ॥
धर्म की होती विजय सदा शास्त्र नीति कहती है ॥४॥

अन्तराम
सन्तराम

अन्तराम सन्तराम की इशारों में वार्ता

तर्जः

गोप वस्त्र में ढ़की मनोहर सजी अलङ्कारों से ।
फिर भी क्यूँ रो रही घिरी तू इन पहरेदारों से ॥टेक॥
रञ्ज में चेहरा भेष हाकिमा कैसे धारण होगा ।
स्वर्ण पिटारे में फँसी चातिका कोई तो कारण होगा ॥
हम दे देंगे प्राण तलक जो कष्ट निवारण होगा ।
तू बहन भली हम भाई तेरे कैसा अजब उदाहरण होगा ॥
हृदय विदारण हुया देख दुख रक्षक तलवारों से ॥१॥
करतल मेंहदी बँध्या काँगना दीख रहा गोपट में ।
नैन झुके बेहोश पती के शोक सती मरघट में ॥
दुल्हन सै या विधवा सै म्हारी मती घिरी झञ्झट में ।
दीख रहे हैं स्यार सैकड़ों सिँहनी की करवट में ॥
शिवलट में गङ्गा सी लगैं कुं डर रही लजमारों से ॥२॥
तू कामधेनु सी शुद्ध घेर रहे ये कीडे जहरीले ।
पङ्क कैच कर झूम रहे जण इनके त्यौर नशीले ॥
जो पी राखा जहर तनै तू बन्धु प्रेम नै पी ले ।
तेरे चरणों की शपथ इसी विश्वास में बस कै जी ले ॥
ढ़ीले पड़गे अङ्ग फूल जण जूझा अङ्गारों से ॥३॥
शिला शिखर पै फूल कमल कभी खिला नहीं करते हैं ।
सिँह शावक कभी स्यार शिशु से मिला नहीं करते हैं ॥
गुरशरणदास धर्मद धर्म से हिला नहीं करते हैं ।
सन्त कर्म फल जान किसी से गिला नहीं करते हैं ॥
डरते नहीं शूरवीर नूपुर की झङ्कारों से ॥४॥

तर्जः

राखी ने ज्वानों की तरफ जब सहमी हुई नजर ठाई ।
हृदय में परतीत हुआ तेरे खड़े सहोदर दो भाई ॥टेक॥
सिँह गर्जना कर राखी ने जोश में बुर्खा फाड़ दिया ।
फैंक दिये आभूषण सारे दूर लबादा लाड़ दिया ॥
पहरेदार उठा फुर्ती कर मार तमाचा तांड़ दिया ।
फैज सिकन्दर खान का सारा बना हुआ जाल बिगाड़ दिया ॥
झाड़ पैर मृगनी की तरह झट राखी घोड़े पै आई ॥१॥
बाज विहङ्ग पै चोट करै ऐसी तेज उड़ान भरी राखी ।
अद्‌भुत रूप निःशङ्क ये साहस बेपरवान करा राखी ॥
ज्वान रहे असमञ्जस में जब करतल प्राण धरा राखी ।
मुख में दाब लगाम शीश लिया साफा खैंच हरा राखी ॥
अन्तराम और सन्तराम के बीचों बीच घोड़ा ल्याई ॥२॥
उड़गे होश सिकन्दर के तीनों तलवार खड़ी देखी ।
दो शेरों के बीच सिँहनी जाल ससे बहार खड़ी देखी ॥
पहल मरतबा जङ्ग बीच महिला खुँखार खड़ी देखी ।
अपनी मौत सिकन्दर ने भारत की नार खड़ी देखी ॥
गगन घोष ललकार उठे जब खान की सेना घबराई ॥३॥
बोले फैज यार हम दोनों जङ्ग में ना धोखा देंगे ।
मौत खड़ी मुँह खोले तेरी ना भगने का मौका देंगे ॥
गुरशरणदास जैसा कर्म किया तुझे उसका फल चोखा देंगे ।
हुस्न पै तेरी नियत बही उस धारा में रोका देंगे ॥
पङ्क पाप के टूट लिये इन्साफ ने आज विजय पाई ॥४॥

तर्जः मुगल और रजपूतों में

घमासान सङ्ग्राम था बाजी जान की लगी ।
सेना चारों ओर सिकन्दर खान की लगी ॥टेक॥
हिरणों के झुँड में जैसे मृगराज वार करते हैं ।
तीनों साथी दुश्मन का सर अलग तार धरते हैं ॥
कुछ भाग घाटियाँ जा दुबके जो देख मार डरते हैं ।
कुछ भगे चोट खा खाकै जो मरणहार मरते हैं ॥
करते हाहाकार चोट कृपाण की लगी ॥१॥
एक ओर तेग गूजर की एक ओर जाट के झटके ।
राखी ने ना बाकी छोड़ी सर काट काट कै पटके ॥
बिजली की तरह घूमै थे जैसे कला खिलारी नट के ।
भाले रह गये खेत में बैरी के कण्ठ में अटके ॥
कट कट कै गिरैं शीश घड़ी इम्तान की लगी ॥२॥
परतन्त्र कर्म फल होता जग बन्धक होनहार से ।
अब सन्तराम कारणवश कुछ हो गया दूर यार से ॥
राखी ने देखा भाई नहीं बचता खान वार से ।
दई एड़ लगा घोड़े को टकराई तेग धार से ॥
प्यांर से बोली भ्रात कर्ज भुगतान की लगी ॥३॥
राखी गिर गई घोड़े से यह दृश्य देख दो भाई ।
यमराज बणे थे रणं में बढ़ा क्रोध सुधी बिसराई ॥
गया भाग सिकन्दर जङ्ग से सेना की करी सफाई ।
गुरशरणदास राखी से अन्तिम राखी बँधवाई ॥
अरे ठाई बहन बाजुओं में शमसान की लगी ॥४॥

तर्जः भारती शिशौदिया की ऐसी रशम

चित में चित की अगनी जली जा रही ।
जलते रहेंगे हम तू चली जा रही ॥टेक॥
कौन थी तू कैसी किसके साथ आ गई ।
राह में सिपाही के बे बात आ गई ॥
पा गई तू बे बे फिर क्यूँ रली जा रही ॥१॥
धरण की शपथ है नीले गगन की कसम ।
शोध कर लिये पीछे हटेंगे ना हम ॥
गले में गलानी जबरन गली जा रही ॥२॥
पर्वतों के दिल भी तेरी मौत से हले ।
चली तू सुरग में जा हम जूझते चले ॥
जख्म पै जहर की कङ्कर मली जा रही ॥३॥
होमते रहेंगे ाब हम खून की हवी ।
गुरशरणदास बाधा ज्वान की छवी ॥
कवी की कलम से कविता हली जा रही ॥४॥

तर्जः हिन्द मुकुट

विनयशील वा अदब बन्दगी, नियम सहित आदर से ।
खत के द्वारा इन ज्वानों ने बात करी बाबर से ॥टेक॥
हम देहाती ज्वान आपकी सेना बीच सिपाही ।
अन्तराम ओर सनतराम दो यार धर्म के भाई ॥
आजमगढ़ से कर्णकोट तक हमने लड़ी लड़ाई ।
जङ्ग बंन्द होने के बाद दो मास की छुट्टी पाई ॥
छुट्टी पूरी हुई फौज को चल दिये अपने घर से ॥१॥
फेर लिखी थी दास्तान जो गुजरह्व फैजखान से ।
जिसके कारण बहौत सिपाही मारे गये जान से ॥
राखी विधवा करी सिकन्दर खारिज हुआ ज्ञान से ।
धर्म बचाने के लिए बेचारी हो गई मुक्त प्राण से ॥
बाँध के राखी वचन भरा कै पार गई सागर से ॥२॥
हम लेंगे प्रतिशोध शहँशाह बैरी खान हमारा ।
इसी बात के लिए समर्पित कर दिया जीवन सारा ॥
म्हारा दुश्मन हमें सौंप दो हो एहसान तुम्हारा ।
जीने का अधिकार नहीं जिसने ये जुल्म गुजारा ॥
नम्र निवेदन कर रहे हैं हम रक्त पात के डर से ॥३॥
राखी को जो वचन दिया हम पूरा परण करेंगे ।
फैज सिकन्दर खान खून से रञ्जित धरण करेंगे ॥
हमारा शत्रू नहीं मिला तो बल से हरण करेंगे ।
भले काम की भली प्रशंसा फिर गुरशरण करेंगे ॥
गूजर जाट सफल होंगे ये विनती परमेश्वर से ॥४॥

कवि उवाच

तर्जः जब जङ्ग हार ग्या महाराणा

दिन आठ बीतगे फिर तलवार उठा ली ॥टेक॥
वट के नीचे शिव की प्रतिमा थी उगै दिवाकर पूरव ओर ।
जल मिट्टी मुट्ठी में लेकै फिर ली महाव्रत विभुद कठोर ॥
झुकैं नहीं ना रुकै मौत से जब तक रहे बाजुओं जोर ॥
आलस त्याग लई अँगड़ाई, जैसे सावधान मृगराज ।
दृढ करके सङ्कल्प साथियें, गरजे दोनों उग्र मिजाज ॥
थैली का मुँह खुले विहँग पै, जैसे पड़ै टूट कै बाज ॥
गरज ध्वनी जैसे बज्र विखण्डित लगी धरण सी हाली ॥१॥
शिवजी की अनुकम्पा अद्भुत, भरगी उनमें अकथ उमङ्ग ।
उछल बहादुर जमे पीठ पै मद में हींसे भयद तुरङ्ग ॥
धरकै शीश हथेली अपना कर दिया शुरु गुरिल्ला जङ्ग ॥
खैंची गण्डा एड की ठसकन घोड़ा गले पहर ली मौत ।
तीव्र नृत्य करते भूमि पै जैसे करता कला कपोत ॥
मचा दिया आतङ्क देश में खोज लिए सरकारी श्रोत ॥
जान बचा अधिकारी भागे दफ्तर होगे खाली ॥२॥
ताले तोड़ दिये कमरों के फूँक दिये सब दस्तावेज ।
जो समझा अवरोध जा लिया जन्नत दिया उसी को भेज ॥
जितनी जब सरकार सँभलती उतने हुए उपद्रव तेज ॥
मार मची दरबार तलक अधिकारी दिये हजारों काट ।
दीवारों पर लिख दिया हम हैं प्रतिशोधक दो गूजर जाट ॥
फैज सिकन्दर खान को हम पहुँचाये विश मौत के घाट ॥
इस शठ ने नरमेध यज्ञ कर रक्त माँस हवि डाली ॥३॥
वैधानिक सञ्चालन रुक गया हाहाकार मची सब ओर ।
यहाँ वहाँ नजदीक दूर दरबार बहार भीतर था शोर ॥
कभी बनें नट कला करैं भट कभी बनें बली बाँके चोर ॥
गुरशरणदास इतिहास गवाह है जब जब हुई जहाँ अनरीत ।
हारी है सरकार हमेशा होती रही न्याय की जीत ॥
सबका भला भलाई अपनी कर मानव ऐसी परतीत ॥
मद में छिपकै मौत रहे मत पीयै जहर की प्याली ॥४॥

तर्जः नरसिँह प्रसूजा

दिन का भोजन नींद रात की, मौज में जीना कम हो गया ।
बाबर की सरकार हिली सर दर्द नाक में दम हो गया ॥टेक॥
इधर करें समाधान एक तो उधर योजना त्यार नई ।
मौका पाकै सन्तराम ने अफसर दिये मार कई ॥
एक रास्ता अगम हुआ तो डगर और अख्त्यार लई ।
कौन करे गिरफ्तार इन्हें बड़ी चिन्ता कर सरकार रही ॥
हर गई झक मार पुलिस ये कारण बड़ा विषम हो गया ॥१॥
पढ़ी शिकायत बाबर ने तब तुरत क्रोध आवेश हुआ ।
घेरं लिया कुण्डलपुर सारा कुड़क थली का शेष हुआ ॥
गिरफ्त गाँव के लोग हुए जब और कठिन आदेश हुआ ।
नर नारी भयभीत हुए भारी आतङ्क कलेश हुआ ॥
हिन्द नरेश कुपित सुन कै सब गाँव का सहास खतम हो गया ॥२॥
कुञ्जल खड़ी बगड़ अपने में सुत गोदी के बीच लिया ।
देख लई एक अफसर ने तब करतब भारी नीच किया ॥
अन्तराम का सुत याणा माँ की गोदी से खींच लिया ।
रोती रही फाकता जैसे विहँग बाज ने भींच लिया ॥
सींच रही स्थल अमृत से मिट जाने का गम हो गया ॥३॥
निज स्वार्थ के लिये हमेशा शठ अनरीत किया करते ।
परमेश्वर की महिमा में वो ना परतीत किया करते ॥
गुरशरणदास कह जुल्म थोप शठ अपनी रीत किया करते ।
निर्दय निलज अकारण ही सब को भयभीत किया करते ॥
पीकर वही जिया करते जिन का सब धर्म भस्म हो गया ॥४॥

तर्जः

सुत गया था काल के पास, दुख माँ जाणै ममता का ॥टेक॥
मोरनी सी कूकी दुखी आतमा का खिँच गया तार ।
होश के परगने ढहगे धुन्ध में सिमट गया प्यार ॥
नाव टूट टुकड़े होगे भँवर में भ्रम की धार ॥
पङ्ख हीन तितली जल बिन मीन तड़फड़ाने लगी ।
दौड़ कै चरण में गिर सर टेक गिड़गिड़ाने लगी ॥
चन्द्रमा सा मस्तक शठ के पैर से भिड़ाने लगी ॥
तुम मालिक हो हम दास और बैर प्रीत समता का ॥१॥
दुष्ट को दया ना आई बूट चोट मारी भाल ।
वज्रपात दिल में थल पै बह रहा शोणित लाल ॥
कुफर के कफे में सुत माँ बोलता था कून्दन हाल ॥
पृथ्वी में कम्पन आँखें अँधेरा जो बुझ गया भान ।
गाँव हो गया बीहड़ बण सा पञ्छियों ने साधा मान ॥
सहमदम से रहगे पशु सदमे जैसे छिनगी जान ॥
झुकी नाड़ बन्द थे साँस जणै जी जगत नमता का ॥२॥
मस्तक से टपक रहा शोणित शीश से रपट गया चीर ।
बीथिया बिखरगी खुलगे केश ढोरा धर गया धीर ॥
हंसनी पै सँभली कोन्या आत्मज हरण की पीर ॥
अधिकारी चालन लाग्या बदल करके तेवर ताव ।
चालने ते नटगी घोड़ी हीँस कै उठा लिये पाँव ॥
किसी विध भी चलती कोन्या हार ग्या अखीरा दाव ॥
कर दी घोड़ी की लाश ऐसा कर्म किया कमता का ॥३॥
दूसरे तुरग पै केतू चढ़ गया ज्यूँ प्रातःकाल ।
लालिमा के आते हि शठ ने दबाया दिवाकर लाल ॥
किसी विध कह्या ना जावै माँ की हालतों का हाल ॥
राम के रहीम के रब के करीम के खुदा के नाम ।
आत्मज की भिक्षा माँगी मान्या ना हरामी जाम ॥
चला गया शिशु ने लेकै कहर में डुबोया गाम ॥
गुरशरणदास जग ताश खेल सब गोय भ्रमता का ॥४॥

तर्ज: दरोगा जी चोरी हो गई

मोरनी सी रोती रह गई ।
अफसर के पैरों में गर्दन गोती रह गई ॥टेक॥
गिरगी डाल गुलाब की उड़ गई गन्ध पराग से ।
फँसकर झञ्झावात में फेरं झुलसगी आग से ॥
दीवट दूर चिराग से बिन ज्योती रह गई ॥१॥
फेरी पीठ तुरङ्ग की सर टकराया टाप से ।
रक्त चला लग पैर से लोहा लेने पाप से ॥
काँप गई क्षण एक मूर्छित सोती रह गई ॥२॥
होश हुआ तत्काल ही आग उगलते नैन थे ।
व्यापक शोध स्वभाव से अङ्ग अङ्ग बेचैन थे ॥
वो दानव कडै गया भवानी टोहती रह गई ॥३॥
निगाह उठी तो सामने उड़ रही धूल अकाश में ।
तेरा नाश करीब है दर्द बोल गया साँस में ॥
गुरशरणदास तट पास सीप बिन मोती रह गई ॥४॥

तर्जः

लगी फैज की सभा शिशु को अधिकारी ने ला पटका ।
नौ गिरहों के बीच घिरा जण चन्द्रमा शिव के लट का ॥टेक॥
रो न सका दिल खोल शिशु और विनती आँखों से बरषी ।
चङ्गुल में सुत जान शत्रु वो शठ सभा बहुत हरषी ॥
देख पाप का जोर दया खड़ी द्वार दुलारन को तरसी ।
काँप रहा परवश वो बालक घोर कुफर से सङ्घर्षी ॥
कली से बाहर पुष्प हुआ तब झञ्झावातों का झटका ॥१॥
लगी वकालत होन बताओ आगे क्या करना चहिए ।
कहन लगा एक दुश्मन का सुत इसी वकत मरना चहिए ॥
बोल उठा एक रहम वसर तुम्हें कुदरत से डरना चहिए ।
बिना वजह के जिरह करो दिल जुल्म नहीं भरना चहिए ॥
जीभ जखम हो जाय सोच लो गर्म ग्रास जिसने सटका ॥२॥
कहन सिकन्दर लगा शिशु को नजर बन्द दरम्यान करो ।
अन्तराम और सन्तराम से सुत कब्जा एलान करो ॥
तीस दिनों में हाजिर हो तो माफ शिशु की जान करो ।
वरना तो आखीर वक्त में बालक को कुर्बान करो ॥
सबने दस्तख किये शुकर है मिथ्या बाल वध का खटका ॥३॥
गुरशरणदास कह कहर कहानी पै ध्यान धरो सज्जन श्रोता ।
राखी मरण इधर वह विपता ज्वानों को देगी न्योता ॥
वे डोलें वन ठोकर खाते और सुत यम के मुख में सोता ।
पहचानो गम्भीर भाव को न्याय बड़ा महँगा होता ॥
कण्ठ तलक भरते ही पाप का उदर अवश फट जा घट का ॥४॥

तर्ज़ः

कुञ्जल पड़ी हुई बरबाद, रे सुत भूखा होगा शाद, इतना आते हि चित में याद।
सिँहणी भड़क उठी थी खाट से ॥टेक॥
बादलों में बिजली जैसे समन्दर में बड़वानल ।
पर्वतों में वायु जैसे नदिया में बोलै जल ॥
कुञ्जल के हिये में ममता गर्ज बोली उठके चल ॥
आग की गती से उठगी भूखी बाघणी की ढ़ाल ।
रक्त पट से कसकै बाँध वीर रस में जख्मी भाल ॥
हयादारी वस्त्र नारी फेंक दिये हालो हाल ॥
कर तत्काल पुरुष का, भेष बाँधे साफे के बीच केश,
लेके मृत्यु का सन्देश कुञ्जल लड़ने चली सम्राट से ॥१॥
फेंट में कटारी कर में धारदर गँडासा लिया ।
रात थी अँधेरी चिन्ता शोक ना जरा सा किया ॥
बेटे की अगन में भुनकै भयङ्कर तमाशा किया ॥
बूट सूट सङ्कीरण पट बनकै किशोर चली ।
नङ्गी पीठ चढी घोड़ी पै छत्तरगढ की ओर चली ॥
आत्मज को देखन खातिर बीजली सी घोर चली ॥
गली सङ्कुल, कुञ्ज करील, दरिया जल, थल, झरना, झील,
औघट चलकै बारह मील, बाघिन फेर मिली जन बाट से॥२॥
पहुँचगी छतरगढ़ कुञ्जल गुस्सा नस में गूँज लिया ।
पुत्र का हरणिया हाकिम ठौड़ कुण सी बूझ लिया ॥
पहुँचगी हवेली धोरै जो करना सूझ लिया ॥
क्रोध में भभकती घोड़ी दई जैसे सिँहणी छेड़ ।
कूदगी दिवार पल में उदर पै लगाते हि एड़ ॥
बिस्तरे पै हाकिम सुकड़ा जैसे भेड़िये से भेड़ ॥
किया ढ़ेर बना दी लाश, मारा नाड़ में गँडास,
पहुँची फिर औरत के पास बोली क्रोध भरी हुई डाट से ॥३॥
शोर मत मचाना बैरन बता कित सै लाल मेरा ।
अन्यथा सुतों के सहित आ गया है काल तेरा ॥
नारी के निरादर का मैं गेरती हूँ हाल बेरा ॥

फैज के हवाले सुत है खबर रोकै नार दई ।
दाब कै बतीसी उसके उदर में कटार दई ॥
छोड़ दिये बालक उसके बाल वध से हार गई ॥
गुरशरणदास उसी हाल, घोड़ी कबूतर की ढ़ाल,
पहुँची निज घर प्रातःकाल कुन्जल लेट गई फिर ठाट से॥४॥

तर्जः

कुञ्जल फिर खत लिखन लगी कर कमल लेखनी ठाकै ।
लेख लिखूँ पिया सुर्ख रङ्ग से खून में निब डुबकाके ॥टेक॥
प्रीतम पुष्प पवित्र परम परमेश्वर पुनीत प्रणाम लिखूँ ।
धन्य धुरन्धर धर्म धारणे कर्तब सुघड़ ललाम लिखूँ ॥
राखी के रक्षक वनवासी प्रेम से फेर नमाम लिखूँ ।
तुमको राखे राम कुशल अब यहाँ का हाल तमाम लिखूँ ॥
काम लिखूँ फिर जो करना तुम्हें दुखिया का खत पाके ॥१॥
बाबर के बर्बर हाकिम ने खौफनाक यश कमा लिया ।
लूट लिया इकलौता तेरा नजरबन्द वो शमा किया ॥
पिया तेरी पगली पत्नि ने सरकारी शठ नमा दिया ।
रात सिपहेसालार वह यमराज की गोदी थमा दिया ॥
फेर किया प्रण घोर पिया सुत लाना जिन्दा जाके ॥२॥
तीस दिनों की म्याद हुई है पास फैज के दफ्तर में ।
अन्तराम और सन्तराम खुद हाजिर हो बन्दीघर में ॥
एक ओर पिया सुत बाजी पर एक ओर बँधी राखी कर में ।
करना निर्णय स्वयम् पिया गुण कुण सा हो शेरे नर में ॥
करले पूरा कौल बहन का या झुकजा घबराके ॥३॥
खत को कण्ठ कपोत बाँध कै कर दिया विदा खबर करने ।
कुञ्जल के पग छुए प्यार से भरी उडान कबूतर ने ॥
गुरशरणदास कह हो जागी जो चाह रखी होगी हर ने ।
दिया किसी को भेद नहीं उस परमेश्वर लीलाधर ने ॥
कर सकता कोई हानि नहीं जाकी लाज कन्हैया राखे ॥४॥

तर्जः चमके लागे

फँस गया अब इतिहास कहर के जाल में ।
घिर गया सब परिवार काल के गाल में ॥टेक॥
पिया घिर्या आरण्य सघन घन घोर चपल बिजली कड़कै ।
काल कोठरी में सुत रोवै न्यूँ आते हि याद हिया धड़कै ॥
कुञ्जल पड़ी खाट में बेसुध नैन से नीर रपट रड़कै ।
ममता मोम गुलाम बने कभी दुर्घट आग सहम भड़कै ॥
डरकै काँपे गात ज्यूँ पारा थाल में ॥१॥
खत को लिये कपोत फिरे नप गया आकाश उड़ानों से ।
गहन गुफा बन झील शिखर तल गुजरा सभी ठिकानों से ॥
भेष बदल फिरें ज्वान कबूतर वाकिफ नहीं निशानों से ।
जान बचा कै भगै बिचारा जब घिरता शैतानों से ॥
प्राण बचावैं राम लगन गोपाल में ॥२॥
दिन पै दिन घट रहे मौत का अब नजदीक कहर आया ।
कुञ्जल अब हो गई शून्य सी पीली पड़ी जहर छाया ॥
अकल अचेत हो गई कार्य तज कर गई ठहर काया ।
लिया राम का नाम नार के चित में नई लहर लाया ॥
आया साहस लौट तरँग जन ताल में ॥३॥
हार गई तरकीब सभी तकदीर की पीड़ा झेली थी ।
पच्चीस दिन गये गुजर बिचारी हर जोखिम से खेली थी ॥
गुरशरणदास लई कलम उठा ये इसकी निकट सहेली थी ।
कागज कलम मशी साथी वरना यह निपट अकेली थी ॥
होता वही हमेश लिखा जो भाल में ॥४॥

तर्जः

जब सङ्कट घिरा सुकण्ठ बचाकर जान चला।
भर दई तेज उड़ान राम कैसा बाण चला ॥टेक॥
घबरा गया कपोत शिकारद्ध तलै गगन में बाज था।
कुञ्जल का खत उधर कबूतर इधर में घिरा आज था॥
कभी बादल की ओट बचाता चोट ये गरुड़ समान चला ॥१॥
जठरानल थक गया घूमते हो गया एक महीना।
कुछ सङ्कट कुछ श्रम ज्यादा न्यूँ तर हो गया पसीना॥
होकर उग्र मिजाज गुसे में बाज भी बेपरवान चला ॥२॥
राम भरोसे छोड़ दिया तन जब जाना मैं हार लिया।
अवसर मिला शिकारी को तब तीर तानकर मार दिया॥
सन सन करता शोर सुकण्ठ की ओर वो ठीक निशान चला ॥३॥
गुरशरणदास कट गया कण्ठ पाती रह गई गगन में।
महिमा बड़ी अजीब राम की बन गई भँवर पवन में॥
खत को ले तूफान जिधर को ज्वान स्वयं उस थान चला ॥४॥

तर्ज़ः

पढ़ते हि खत का हाल काँप गया गात, बिगड़ गई बात ।
अचानक पर्वत सा फट गया ॥टेक॥
करी मुहूरत भर चिन्ता धर धीरज होश सँभाल लिया ।
चढ़े अश्व की पीठ हाथ में खञ्जर नगन निकाल लिया ॥
सागर से तूफान चले ज्यूँ अश्व चाल इस ढ़ाल दिया ।
औघट घाट बाट बिन सरपट काल के मुख पग घाल दिया ॥
इकलौते का ख्याल करेंगे मुस्लिम अति उत्पात,
अचानक पर्वत सा फट गया ॥१॥
सन्त अन्त का अन्त आज ये अशगुन देख पिछान गये ।
अति शीघ्र गनतव्य लक्ष्य पर पहुँच हटीले ज्वान गये ॥
फाटक बन्द हुए जब तलक अश्व महल दरम्यान गये ।
अफसर सहित पकड़ ली औरत बनकै काल समान गये ॥
शीघ्र कहो सुत कहाँ छुपाया सच कहना हालात,
अचानक पर्वत सा फट गया ॥२॥
खञ्जर देखा नग्न मियाँ तब तर हो गया पसीने से ।
किया इशारा बता दिया सुत बोल बना न गमगीने से ॥
अन्तराम ने दौड़ उठा लिया पुत्र लगा लिया सीने से ।
मियाँ को जन्नत भेजा तुझको क्या करना अब जीने से ॥
ले बालक नै पहुँच गये जहाँ कुञ्जल सुत की मात,
अचानक पर्वत सा फट गया ॥३॥
सुत लेकर जब चले तभी से पीछे लगे राजचर थे ।
गाँव छोड़कर जल्दी दौड़े राज सैनिकों के डर से ॥
आगे मिल गई नदी मौत का मुँह खुल गया फिर क्या करते ।
गोली मार गिरा दिये दोनों लोग रहे आहें भरते ॥
गुरशरणदास जग नश्वर जैसे चमके उल्कापात,
यह इतिहास यहीं डट गया ॥४॥

सरवर नीर

तर्जः

आ गये हैं द्वारे तेरा नाम सुन के,
दानवीर महिमा चर्चा आम सुन के ॥टेक॥
आपकी सुकीर्ति का दिवा जल रा ।
यहाँ से स्वर्ग तक यश का ध्वज हल रा ॥
विश्व का महीप तेरी लीक चल रा ।
इन्द्र का मिजाज आज तलै ढ़ल रा ॥
म्हारा मन मचलरा दानी धाम सुन के ॥१॥
नीतियों का पालन तुमने ढङ्ग से किया ।
कार्य परिश्रम अपने अङ्ग से किया ॥
राज काज तुमने साधू सङ्ग से किया ।
जब भी जो किया सो वैदिक ढङ्ग से किया ॥
चले हम उमँग से सुथरा काम सुन के ॥२॥
आपके विभव का वर्णन जाता ना कह्या ।
प्रशंसा के समतुल कोई शब्द ना रह्या ॥
आपकी सभा में हमने आनँद लह्या ।
पुण्य फल से तुमने कोई दुख ना सह्या ॥
गह्या धर्म पल्ला परिणाम सुन के ॥३॥
गुरशरणदास जब कोई प्रशंसा करै ।
समझ लो प्रशंसक तस्कर बुद्धि ने हरै ॥
करै जो बड़ाई उससे हैट जा परै ।
डूब जागी नैया उसमें छेद मत करै ॥
धैर्य धरे जा निज गुणगान सुन के ॥४॥

तर्ज़ः

मेज़ों पर तोते बोले और घर बालक सोते बोले ।
माँग लेओ महाराज माँग लो पिंजरों में तोते बोले ॥टेक॥
दान माँगने सन्त खड़े यह खबर व्याप गई घर घर में ।
जाग उठी उत्साह लहर हर बाल वृद्ध नारी नर में ॥
शङ्ख नगाड़े बाज उठे घण्टाल गूँज रहे मन्दिर में ।
झरनों के झरकन बोले और पवन कहे मन्थर स्वर में ॥
पञ्छिन के पर की फरकन थल अश्व मगन होते बोले ॥१॥
चिड़ियों की चह चह में धुनि मुनि माँग लेओ जो भी चहिए ।
झुक झुक कर तरुवर कह रहे मुनि हमसे भी तो कुछ कहिए ॥
हाट पै सेठ पुकार रहे प्रभु म्हारा भी सरवद गहिए ।
गाय उठी हुँकार भरे थन सन्त दूध पीकर जइए ॥
ताल घाट फटकार धुनि जन धोबी पट धोते बोले ॥२॥
सिहर उठी सब दिशा प्रेम से बोलो क्या चहिए ज्ञानी ।
माँगो वही मिलेगा सब कुछ बोल उठी सब रजधानी ॥
भाषण कुशल सभासद सारे मन रञ्जन मीठी वाणी ।
करो आप विश्वास ऋषि हर बसर यहाँ का है दानी ॥
हाथ जोड़कर विनय मधुरतम सलज नाड़ गोते बोले ॥३॥
झूँठ, जुआ, ठग, हिंस कपट बरजोरी का धन यहाँ नहीं ।
दारू, ब्याज, दलाल, मिलावट, चोरी का धन यहाँ नहीं ॥
गुरशरणदास ना सुत बिक्री और छोरी का धन यहाँ नहीं ।
भीख माँग धन जोड़ा ऐसे धोरी का धन यहाँ नहीं ॥
कर्मठ वीर निरालस सारे पीठ भार ढोते बोले ॥४॥

तर्जः

भटियारी के घर महारानी, बर्तन माँजै ढोवै पानी,
जङ्गल में भूपाल अढाया वेग सकेर रहे ॥टेक॥
कहीं कर्म बड़ा कहीं भाग, हितैषी पानी है कहीं आग ॥
नाग लिपटते हैं चन्दन में, शीतलता विष के बन्धन में ॥
कैसा जटिल सवाल, स्यार के नौकर शेर रहे ॥१॥
इतिहास को इम्तहान कहेंगे, कायरता बेईमान कहेंगे ॥
ज्ञान कहेंगे धर्म के ज्ञाता, सच को जाणे एक विधाता ॥
दुख जाने कङ्गाल, कदम जो गिन गिन गेर रहे ॥२॥
राजा रोज पत्ते ढोते थे, और कभी भूखे हि सोते थे ॥
रोते थे जब बालक याणे, बहलाते गा गा के गाणे ॥
गदगद कण्ठ सँभाल, नैन से नीर बखेर रहे ॥३॥
गुरशरणदास अब गुजर चले दिन, दिन बीते बढ़ जाता ऋण ॥
बिन परखे कोई बात कहो ना, मूरख के कदै साथ रहो ना ॥
जगत विषम जञ्जाल, बाज को दाब बटेर रहे ॥४॥

तर्जः

भटियारी को शीश नवा कै चल दी राणी थाल सजा कै, रट घनश्याम की ।
महाराणी से बाँदी कर दी मरजी राम की ॥टेक॥
ईश्वर ने दुखिया पै चाही विपदा गेरनी ।
गीदड़ ने जिमावण भेजी बब्बर शेरनी ॥
फेरनी चंहिए माला हर की, इज्जत लुटगी अमृतसर की,
दुर्गत होगी बाम की, राणी की किस्मत ने कर दी लाम की॥१॥
सरवर नीर खेलते छोड़े घणा कमाल था ।
एक हाथ में जल का लोटा एक में थाल था ॥
जाल था रानी के फँसने का, नाग का दाव लगा डसने का,
अग्नि भडकी काम की, सौदागर ने मोल खरीदी नगद दाम की॥२॥
विनती करके सौदागर न्यूँ बोले था वाणी ।
खिड़की के अन्दर रख दे मेरा खाना और पानी ॥
रानी बंड़ी खोल के दर नै, साँकल दे दी सौदागर नै,
आदत बुरी राम की, धोखे से बन्द कर ली काया माम की ॥३॥
एकदम से बडगी थी रानी दर नै खोल कै ।
महारानी डकरावै थी बेटों नै बोल कै ॥
घोल कै जहर तुरत मानेंगे, सज्जनों मूरख के जानेंगे,
महिमा रब के नाम की, गुरशरणदास अब हुई दुर्गति...... की ॥४॥

तर्जः

राजा ने देखे रोते राजकुमार ॥टेक॥
गठरी तारी अम्ब राजा ने लिखा कर्म आगे अड़ग्या ।
रोते देखे दोनों बच्चे तो चेहरा फीका सा पड़ ग्या ॥
चोरी गई सुनी राणी तो रह्या सह्या नखरा झड़ ग्या ॥
लाखों गाली दे भटियारी राजा को मारण धाई ।
लूट लई मैं कँगला बणकै तनै ओ ठग शर्म नहीं आई ॥
थारे जाल में हिरनी घिरगी देखी नहीं कुँआ खाई ॥
नीच लुँगाडे लजमारे तनै कर दई बोली पार......॥१॥
भला नहीं होगा भटयारी मेरी गैल दगा करकै ।
हम सन्तोषी सबर करेंगे चले जाये धीरज धर कै ॥
इस कँगले का श्राप ओट कई जिन्दी धरती में गर कै ॥
तेरी बहू बदमाश घणी बेशर्म चलन की थी खोटी ।
किस गुण्डे की गैल चलीगी ले गई रकम बहुत मोटी ॥
बिना करे भुगतान रकम के बचै नहीं तेरी बोटी ॥
एक शेर सोना ले गई रुपया चार हजार......॥२॥
थाम जबान अरी भटियारी बोलै मत लगाम लगा ।
पतिव्रता को दोष लगावै मत क्षत्री कै क्रोध जगा ॥
त्रिया जान बकस दई पापण मेरी गैल्या करी गदा ॥
तेरे क्रोध का डर कोन्या भटियारी डरती बोली ।
मेरी सराह से बहार लिकड़जा ये बकवास बहुत होली ॥
लेकै गाँठ चला जा जल्दी फटी पुरानी तू झोली ॥
तैने अभी पुलिस के करूँ हवाले ओ बेईमान लवार......॥३॥
हाथ जोड़ सारी नगरी को राजा ने प्रणाम करी ।
गोदी ठा लिये दोनों बच्चे कसकै छाती जाम करी ॥
समझ बिना के फेर भूप ने सबसै बात मुलाम करी ॥
चलती बरिया भटियारी ने गाली कई करोड़ दई ।
कङ्कर ईंट रेत बरसावै सब मर्यादा तोड़ दई ॥
कङ्गाली तेरा बुरा नतीजा धर्म की गर्दन मोड़ दई ॥
गुरशरणदास क्या पेश चलै जब काँपै कृष्ण मुरार......॥४॥

तर्जः

काम, क्रोध मद लोभ त्याग गम भरे गीत गा रे राजा ।
सरवर नीर बिठा कन्धे लौलीन हुए जा रे राजा ॥टेक॥
कहीं धूप तेज कहीं पवन तेज कहीं दूर दूर तक जल जारी ।
अग्न अचानक लगी बणी में सिँह मार रहे किलकारी ॥
बिच्छू और भुजङ्ग मिलै कहीं लार गज की जारी ।
सर टेक टेक राजा ने सही अजरायल विपत बड़ी भारी ॥
काल दुबक कै बैठ गया उसे खा लैना चाहं रे राजा ॥१॥
बाल बड़े दुष्कर लगते हुआ एक महीना कटे हुए ।
तन पै मैल जमा काफी और कपड़े मैले फटे हुए ॥
धूप ने रूप बिगाड़ दिया था भूप धूल में अटे हुए ।
अम्ब राजा भी नेमं धर्म पै अच्छी तरिया डटा हुआ ॥
रोष जोश का पान किया और गम का ग्रास खा रे राजा ॥२॥
फल फूल बणी में काफी थे पर कर लिया प्रण नहीं खाते ।
मानो जिन्दे बैकुण्ठ चले संसारी खेल नहीं भाते ॥
जङ्गल बीहड़ बियावान में मानस नजर नहीं आते ।
खूनी हाथी सिँह सरीखे कर प्रणाम चले जाते ॥
सुत भूख प्यास में रोवै थे आँखों का नीर प्या रे राजा ॥३॥
वर वक्त बेहुदी विपत देखकर विपदा के दिल हाल गये ।
क्या कवियों में ताकत है जब बदल भूप के ख्याल गये ॥
अम्ब राजा पै कष्ट देख कै इन्दर तक भी हाल गये ।
गुरशरणदास हुआ मिय शाम का नदी तीर भूपाल गये ॥
विपत कान में न्यूँ कहगी कर बेटों को न्यारे राजा ॥४॥

तर्जः मोहब्बत की झूँठी कहानी पै

दरिया के दोनों किनारों पै रोये ।
नैनों से आँसुओं की फुवारों पै रोये ॥टेक॥
जिन्दा ना छोड़ा मर भी ना सकते ।
शिकायत किसी की कर भी ना सकते ॥
शिसकते बिलखते सितारों पै रोये ॥१॥
भरपूर दुनिय में हमारा कहाँ है ।
जुल्मों की नसीयत का दुबारा कहाँ है ॥
जहाँ है जहन्नुम के इशारों पै रोये ॥२॥
जिन्दगी में जीने को दिया हमको रोना ।
जननी जनक और भाई का बिछोहना ॥
खिलौना क्यों तोड़ा है खिलारों पै रोये ॥३॥
गुरशरणदास कह आपदा का साया ।
जैसा था वैसा ही बता मैं ना पाया ॥
लिखना ना आया तो लिखारों पै रोये ॥४॥

तर्ज़ः

जब पड़ग्या ज्हाज भँवर में, तब सरवरनीर कँवर ने,
मान कै ऋषियों का कहना मोल की सौदागर लाया ॥टेक॥
पड़ा भँवर में जहाज बिगड़ग्या इन्जन पुर्जा नहीं हलै ।
तीन दिना हुए नहीं बणां कारीगर बैठे हाथ मलै ॥
लिये ज्योतिषी बुला बताओ कौन ग्रह किस ढाल टलै ।
ऋषियों ने तरकीब बताई भेंट चढ़ै तो जहाज चलै ॥
ये खबर नगर में जा ली, मिटी धोबी की कङ्गाली,
बेच दिया दुखिया का गहना, गजब उस पापी ने ठाया ॥१॥
गजब हंस के सी जोट भान कैसी शान मरण ने जा री ।
बे वारिस के लाल कमाल ख्याल में जनता सारी ॥
पेट फाड़ सुत जणे बता किस ढाल डटै महतारी ।
रो रो कै बतलावै थे सब आपस में नर नारी ॥
इनकी जब शान मिटेगी, धरती दो टूक फटेगी,
कटै चन्दन का टहना, मिटैगी खुशबू की छाया ॥२॥
आन जहाज में कँवर बिठा लिये दे दी खाण मिठाई ।
भोजन समय नशा की खातिर चङ्गी शराब पिलाई ॥
हुए नशे में कँवर पड़े धरती पै निद्रा छाई ।
सौदागर ने खञ्जर लेकै सुमरी देवी माई ॥
गिरा खञ्जर गात दहलग्या, आगे नै जहाज टहलग्या,
देख लो बच्चों का लहणा, अजब उस ईश्वर की माया ॥३॥
चल ग्या जहाज छूट ग्या खञ्जर जय जय हुई लगे नारे ।
दो बच्चों की जान बची न्यूँ मन में मगन हुए सारे ॥
करण लगे पुण्य दान सभी जैसे मिल गङ्गा जी न्हारे ।
गुरशरणदास दीनों पै दया किया करते हैं कृष्ण प्यारे ॥
सौदागर कँवर जगा कै, बोला न्यूँ रौब जमा कै,
द्वार पै रखवाली रहना छन्द भर विपता का गाया ॥४॥

तर्जः

सौदागर का जहाज छूटगा चला चीरता पानी ।
किया नीर पै प्यार करी सरवर नै शुरू कहानी ॥टेक॥
अमृतसर के बीच थी राजधानी कदी म्हारी ।
म्हारे पिता का नाम अम्ब और अमबले थी महतारी ॥
रोज पिता जी दान करै थे शोर फैलगा भारी ।
एक रोज का जिकर द्वार पै आ गया एक भिखारी ॥
तीन वचन भरवा साधू ने माँग लई रजधानी ॥१॥
हम चारों प्राणी चाल पड़े थे बिया बाण की राही ।
नौकर बन के रहे सराय भटियारी के भाई ॥
भटियारी ने म्हारे सङ्ग में मिल कै दगा कमाई ।
म्हारी माता का पता नहीं जण कौण देश पहुँचाई ॥
मार पीट कै ताड़ दिये हम भाई मानस खाणी ॥२॥
दुःख तै भरी कहांनी भाई या कहते में दिल धड़कै ।
तीनों प्राणी चाल पड़े हम सरा तै बाहर लिकड़ कै ॥
स्वर्ग सिधार गये पिंताजी उस काल नदी में बड़ कै ।
हम रहगे कङ्गाल वो भागी दुनिया चले लिकड़ कै ॥
कुछ दिन गुजर करी धोबी कै पड़गी गधी चरानी ॥३॥
दुखियारी बैठी खिड़की पै गम के बोल सुनै थी ।
लिये पहचान कँवर अपने रो रो कै शीश धुनै थी ॥
बेटों तै मिल जाने की रानी तरकीब चुनै थी ।
लाखों ख्याल बदलती थी कदै मेटै कदै बुनै थी ॥
गुरशरणदास दिल धड़क रहा पिंजरे में पड़ी महारानी ॥४॥

तर्जः

सौदागर की रपट लिखा ली अमब राजा दानी ने ।
चरणों में सर टिका करी प्रणाम महारानी ने ॥टेक॥
नमस्कार कर रानी ने ऊपर को नजर फेरी थी ।
अँब राजा ने रानी के चेहरे पै नजर गेरी थी ॥
उठी प्रेम की आल विपद ने आ तबियत घेरी थी ।
इसी शान की पतिव्रता अमबली रानी मेरी थी ॥
ढूँढे तै भी मिली नहीं भख ली मानस खाणी ने ॥१॥
दिल को डाट धीरज धर कै नीती पै ध्यान दिया था ।
जगत विलक्षण माया हर की न्यूँ ही मान लिया था ॥
रानी को गङ्गाजल के बिच मैं भगवान दिया था ।
साँच बता इन लड़कों ने तेरा के नुकसान किया था ॥
सुन राजा की बात झुका ली नाड विपद ठाणी ने ॥२॥
धीरज धर के राजा ने फिर मुलजिम पास बुलाये ।
बड़ी खुशी हुई सौदागर को सरवर नीर बिठाये ॥
सूरत देखी लड़कों की फेर चक्रवर्ती पाये ।
आँखों में आँसू आगे दिन याद विपद के आये ॥
सूरत के दो लाल खुए थे डुबो दिये पानी ने ॥३॥
हँस बोले भूपाल हुई क्यूँ चुप तू सौदागरनी ।
खोल के साफ बता दे नै इन दोनों की करनी ॥
सुन राजा की बात फेर वो बोली विपदा भरनी ।
इन लड़कों ने बात कही मेरी वा थी जिगर कतरनी ॥
गुरशरणदास कह बूझ लियो दो बार कहानी ने ॥४॥

तर्जः

अजी म्हारा कोई अपराध नहीं सै, किया भी हो तो याद नहीं सै,
सुना म्हारी विपद कहानी नै लगा दिया इल्जाम बोल के झूँठ सेठानी ने ॥टेक॥
अमृतसर के बीच वहाँ थी म्हारी रजधानी ।
पिता म्हारे अम्ब राजा दानी मात म्हारी अम्बली रानी ॥
रै रजधानी पै तख्त जमाय म्हारे पिता से वचन भराया था, उस साधू ज्ञानी ने ॥१॥
रहे सरा में भटियारी म्हारी माँ ने गुम करगी ।
शीश पै विपदा धरगी पता ना जिन्दा या मरगी ॥
रै हम धोबी के गधे चराये बिछड़ के म्हारे पिता डुबाये, थे उस बहते पानी ने ॥२॥
हम विपदा के धनी नृप बिन माँ के लाल सै ।
ये सौदागर चण्डाल सैं फलावै झूठे जाल सै ॥
करो ख्याल मैं साफ बता दूँ रात कही उसे फेर सुना दूँ, उस कथा पुरानी ने ॥३॥
गुरशरणदास कह फेर मोल की सौदागर लाया ।
काम पहरे का करवाया रात भी यो किस्सा गाया ॥
करो न्याय या हुकम सुना दो माफ करो या फाँसी चढ़वा दो हम दोनों प्राणी ने ॥४॥

रूप बसन्त

तर्जः

आखर अर्थ अलङ्कृत ज्ञान, सारे छन्द प्रबन्ध विधान,
जैसा वेदों के दरम्यान, दे दे मेरे भगवान ॥टेक॥
ना माँगू मैं हीरा मोती ना माँगू मैं राज,
आज तेरे तै माँग रहा मैं हरपों का अन्दाज ॥
साज पै ताल कण्ठ सुर ज्ञान, भर दे मेरी कलम में जान,
तु ले ले हिरदे की पहचान, दे दे मेरे भगवान ॥१॥
तू ही शारदा सरस्वती तु ही गौरा गुरु गणेश,
जैसी जाकी रही भावना वैसा वाका भेष ॥
शेष सब कहते वेद पुराण, तू ही धरती और असमान,
आपकी अजब निराली शान, दे दे मेरे भगवान ॥२॥
कविता का वर तुमसे लेगे तुलसी सूर कवी,
मुझ जैसे गिधराज काग को कैसे मिले हवी ॥
कभी ना उल्लू देखे भान, कमल के फूलों की मुस्कान,
वो कोई देखे हंस महान, दे दे मेरे भगवान ॥३॥
गुरशरणदास की रचना फीकी रस भी नहीं जबाँ में,
कविता तो कवियों की सुनना मेरी लभा में ॥
सभा में बड़े बड़े विद्वान, दे रहे तुक बे तुक पै ध्यान,
इनका है मुझ पै एहसान, दे दे मेरे भगवान ॥४॥

तर्जः

चिड़िया एक चिड़े नै ब्याहली, वा आगी वाकी बनकै घरवाली,
बिल में बड़ गई आप बैठ ग्या चिड़ा रे मुँडेरे पै ॥टेक॥
पहली माँ के दो बच्चे अपनी माँ के गीत गाते होंगे ।
चुग्गा लेके आवेगी माँ चौगड़दे लखाते होंगे ॥
भूख के सताये मुन्ने मैया ने बुलाते होंगे ॥
आते होंगे पिता रे घूम कै, लाड़ करेंगे मुख चूम चूम कै,
मन्त्र सारे जाप भूख की खुश्की चेहरे पै ॥१॥
मौसी ने जो मारे बच्चे स्वयं झूठी राड़ करकै ।
सारे नीचे गेर दिये बिच तै पेट फाड़ करकै ॥
चिड़ा की बसाई कोन्या रोया नीची नाड़ करकै ॥
धरके शिला रे दरद की धड़ पै, बैठा चिड़ा चिड़ी की जड़ में,
बच्चे करके विलाप पहुँचगे माँ के डेरे पै ॥२॥
रानी थी बीमार पड़ी ये सारे करतूत देखे ।
मौसी बेटे खाणी जीते जागते सबूत देखे ॥
आँख्या के में पाणी भरकै दोनों अपने पूत देखे ॥
देखे जीव सभी दुख पाते, औरत के जो फन्दे फँस जाते,
जैसे नाचे साँप तरज की मार सपेरे पै ॥३॥
रानी ने एक बाँदी भेज महलों में बुलाये राव ।
चिड़ा की कहानी कह के दिल का मिटाया घाव ॥
रानी ने दम तोड़ दिया स्वर्ग में जा टेके पाँव ॥
राव क्रिया लगे करण लाश की, तुकबन्दी गुरशरणदास की,
गलती करना माफ धरा के गुर बिन मेरे पै ॥४॥

तर्जः

रूप कँवर चल दिया उछलता घर समझा मौसी का ।
उस बालक ने के बेरा था ये घर सै फाँसी का ॥टेक॥
रूप राह में न्यूँ सोचे मेरी मौसी लाड़ करेगी ।
मैं मागुँगा गेंद दियो माँ हँस कै गोदं भरेगी ॥
मुख चूमै पुचकारेगी मेरे सर पै हाथ धरैगी ।
माथे तिलक लगावेगी कदै लग जा नजर डरेगी ॥
देवेगी वरदान मेरे सुत राजा बन काशी का ॥१॥
करकै माँ की याद मेरी जब हिड़की बँध जावेगी ।
क्यूँ मेरे चन्दा न्यूँ मेरे बछड़ा गोदी में ठावेगी ॥
आँसू पोंछ के जुल्फ सँवारे छाती तै लावेगी ।
मेरे बेटे ने भूख लगी उठ भोजन को जावेगी ॥
प्यार में भत वो काम करेगी जो काम होय दासी का ॥२॥
दूध मलाई देवेगी और पिस्ते मँगवावेगी ।
कदै देय माजूम मनै हर तरिया बहलावेगी ॥
चिलगोजा अखरोटों से मेरी झोली भर जावेगी ।
इधर उधर की फुलवाड़ी माँ जी भर दिखलावेगी ॥
घणे प्रेम से लावेगी माँ कोई नुस्खा खासी का ॥३॥
राज मिले गज बाज मिले मिले राम साकार कहीं ।
लोक मिले परलोक मिले विद्लोक मिले दुरवार नहीं ॥
गुरशरणदास भगवान मिले कोई काम अपार नहीं ।
माँ मरने के बाद मिलेगा माँ के जैसा प्यार नहीं ॥
बिन माँ के बच्चे पल जा ये यश मथुरावासी का ॥४॥

तर्ज़ः

पाप के धोरे पुण्य पहुँचग्या फूल गया कूड़ी में खिल ।
प्यार की लहर बढी दोनों में मन कहता है जल्दी मिल ॥टेक॥
रूप ने सोचा माँ मिलगी चरणों में सिर टिका दिया ।
रानी सोचे साजन मिलगा जिसके बिन तड़फे था जिया ॥
माँ की ममता दिल में जागी रूप का न्यूँ हिल गया हिया ।
रानी ने भी कौली भर ली जोड़ी का मिल गया पिया ॥
एक मातृ प्रेम एक पति प्रेम दो प्यार रहे मझदार में हिल ॥१॥
रूप ने सोचा मौसी मेरी बूझेगी माँ की कहानी ।
मेरे रङ्ग पै रूप रीझ जागा न्यूँ सोचै थी रानी ॥
रूप ने सोचा स्वर्ग मिले माँ बेटा कह बोले वाणी ।
रानी सोचे हाँ भर ले तो झूम उठै मेरी ज्वानी ॥
एक बालक एक पापण थी कुछ कह ना सके गरिमा में दिल ॥२॥
नागण में विष जाग गया और ऊँचे साँस भरण लागी ।
सेज की ओर चली ले सुत ने भारी जुल्म करण लागी ॥
हँसी नजाकत अदा उमँग में सीने हाथ धरण लागी ।
माँ की देख नशीली आँखें सुत की नजर डरण लागी ॥
उल्टी गङ्गा बही देख के बोला धर छाती पै शिल ॥३॥
मैं बेटा लागूँ सूँ तेरा तू लागे मेरी मौसी ।
रानी बोली पती समझ लिया माँ मत कह सत्यानाशी ॥
हाथ जोड़ न्यूँ कही रूप ने मत कर बेटे ते हाँसी ।
मैं तेरे चरण दबाऊँ रूप तू राजा और मैं दासी ॥
गुरशरणदास जिसे मन्दिर समझा वा बणगा नागण का बिल ॥४॥

तर्जः

भज ले री शिव मौसी तज ले बुरे ख्याल को,
आशीर्वाद दे दे री बिन माँ के लाल को ॥टेक॥
सुर में मिल के सरगम बजता वश में कर ले राम,
धुन से इकतारा ।
स्वारथ में अन्धी होके क्यूँ धर्म करे नीलाम,
ये जग बञ्जारा ॥
बे सुर ना बजा, बेटे ने लजा,
झटको मत मौसी पटको नरम डाल को ॥१॥
क्यूँ कीचड़ में गेरै सै माँ तेरी गोदी का फूल,
जरा गोद में ठा ।
मुझको तो दुनिया कुचलेगी तुझ पै गेरे धूल,
अरी मत ठोकर खा ॥
जरा होश में आ, मेरी स्वर्ग में माँ,
पैरों के तले मत कुचलो खरे माल को ॥२॥
इतनी पी जामे नशा चढ़े ना मुँह में भरे ना खाक,
ये जाम नशीला ।
दुनिया नफरत करै तेरे तै नरक सकोड़ै नाक,
फटा पाप पतीला ॥
बेटे को बुला, पलने में झुला,
बदबू से भरा मत पाड़ो दबे पाल को ॥३॥
गुरशरणदास कह चाल है टेढ़ी सीधा चलता साँप,
जब बिल में जाये ।
नटनी नाचे खड़ी बाँस पै वह भी जाने पाप,
अपनों ते लजाये ॥
अम्बर ना हिला, पानी ना जला,
दया करके मेरा दुःख हर ले हटा जाल को ॥४॥

तर्जः

फँसी एक उलझन में, फिकर मेरे मन में,
जाऊँ कहाँ मैं जाऊँ कहाँ ॥टेक॥
मेरे दिल की मनादी, हलचल सी मचा दी,
मैने हाथ से अगनी अरी पानी में लगा दी ॥
खाक मेरे हसरत पर, कहो कोई समझाकर,
जाऊँ कहाँ मैं जाऊँ कहाँ ॥१॥
वाका चाँद सा चेहरा, किया दिल पै बसेरा,
मन मानता कोन्या, बहन समझाऊँ भतेरा ॥
नजर उसकी बाँकी, मोहब्बत की प्यासी,
जाऊँ कहाँ मैं जाऊँ कहाँ ॥२॥
चढ़ा चाँद गगन में, हो गई थी मगन मैं,
अफसोस यह भारी अरी वा छुपगा कफन में ॥
निकलगा बाँहों से, तड़फती आँहों से,
जाऊँ कहाँ मैं जाऊँ कहाँ ॥३॥
वा चुप ना रहेगा, नफरत में बहेगा,
गुरशरणदास जाके राजा से कहेगा ॥
चढ़ूँ फेर फाँसी पर, मौत अपनी का डर,
जाऊँ कहाँ मैं जाऊँ कहाँ ॥४॥

तर्जः

वा घबराई बड़ी कुफर लुगाई, तोड फोड़ के गिराई, पल में अपनी सुहाग निशानियाँ।
पापनी कीं उस साँपिनी की जीभ है कमानियाँ ॥टेक॥
पट फेंक बदन हुई नङ्गी जन कुचली हुई नारङ्गी ।
हुई ऐसी बेढङ्गी जण भोजन की तङ्गी ॥
सहाबनी की उस गुलाबनी की हाए धूल में जवानियाँ ॥१॥
छुटाया माथे का बिन्दा, छिपा जन भादो का चन्दा ।
महरवा आशिक का बन्दा, क्यूँ सहम हुआ गन्दा ॥
छातियों पर झूमते सर फूलों की दिवालियाँ ॥२॥
मुरझानी रङ्गीली चकरागी छबीली ।
वो जालिम नशीली वा कैसी हठीली ॥
यो जालमा की वो कालमा की कुफर की जवानियाँ ॥३॥
भेज दी बाँदी कचहरी साँस वा दुख भर के लेरी ।
गुरशरणदास गहरी पाप के नाले में बह री ॥
उस नागणी ने इस रागणी ने बढ़ा दी कहानियाँ ॥४॥

तर्जः

राजा का दिल सहम गया वादी की गवाही का ।
बेटा होजा कतल मिटे ना धब्बा स्याही का ॥टेक॥
हाथ जोड़ बोला राजा न्यूँ बात दाब ले ।
रूप कँवर तै सब के शामी मत ना जबाब ले ॥
राजमहल की इज्जत बच जा ऐसा सबाब ले ।
कर्म दण्ड के चणे दाँत दुखती में चाब ले ॥
कदै स्वर्ग में दिल फट जा मेरी पहली ब्याही का ॥१॥
बदनामी से करूँ पार ऐसा पूरा तार ले ।
जो न्हाना तनै खून तै तो मेरी गर्दन तार ले ॥
भरी जहर की शीशी सुत के मुँह में डाट ले ।
घर ते पूँजी घटे ना इतनी भाव डाट ले ॥
जो घट जा मेरी शान तै ये घर कुँआ खाई का ॥२॥
रानी बोली नीच तनै जो इज्जत तार दी ।
जान गई तनै बेटे में खुद गन्दी चाल दी ॥
इसमें तेरी शरारत मुँह ने पाप बखान दी ।
चित्रसेन के माथे में झट ठोकर मार दी ॥
बूढ़े डाँगर बता शौक क्यूँ करा लुगाई का ॥३॥
गुरशरणदास जो मरते छावर गन्दे काम पै ।
ना कर कोई मोची है नारी के गुलाम पै ॥
बिना विचारे मोहित होगे सुथरे चाम पै ।
वो कायर धूल झोकरे मर्दों के नाम पै ॥
वा नर मूरख मुकुट दान बात लुगाई का ॥४॥

तर्जः

छोड़ कै हम थारी नगरी को चल दिये दोनों भैया,
वापस आवेंगे ना शकल दिखावेंगे ना सारी उमरिया ॥टेक॥
प्रेम की दरिया में बह के पिता सुध बुध भूल गये सारी ।
बेटे जैसी चीज जगत में मिलती नहीं उधारी ॥
एक नारी के कहने तै घर से काढ़े दोनों भैया, सराहवेंगे ना.....॥१॥
राम राम लो दुखियारों की जितने हो नर नारी ।
कौन लगा देता फाँसी जो होती आज महतारी ॥
किस्मत म्हारी खेल खिला री, छोड़ कै मरगी मैया, के कोख लजावेंगे ना....॥२॥
धर्मराज घर पड़ै भोंगना जो जैसा बोवेगा ।
देख लियो एक रोज पिता तन पै दुखड़ा होवेगा ॥
हा हा करके रोवेगा, जैसे बिन बछड़े के गैया,.....................॥३॥
गुरशरणदास कह चल दिये दोनों करके ऊजड़ डेरा ।
और किसी का दोष नहीं सब करड़ाई का फेरा ॥
शीशराम कह सतगुरु मेरा गावे ज्ञान सुरैया, के बेसुर गावेंगे ना.....॥४॥

तर्ज़ः

जो भाग्य में लिखा है पहले कोई ना देखता ।
किसी स्यार की गरज से कोई शेर सर ना टेकता ॥टेक॥
चढा जो अम्बर में चन्दा धूल ना कर सकती गन्दा ।
गले में फाँसी का फन्दा बचा कोई ना सकता बन्दा ॥
जो है जनम का अन्धा वो रोशनी ना देखता ॥१॥
रूप का कर देखो चेहरा तेरे को हँस के माँ कहरा ।
उठेगा दुनिया ते बेड़ा पड़ेगा हसमत का बेरा ॥
जिसने कनजंवा पंहरा वा साँसता भी छेकता ॥२॥
मल्हा जब बल्ली ते रुक जा भँवर के बिच नैया रुक जा ।
चाँद जब बादल ते लुक जा जख्म तब चकवी का घट जा ॥
जो रोशनी से फुक जा उसे आग में क्यूँ सेकता ॥३॥
गुरशरण कहानी है जिनकी स्वर्ग में झण्डी है उनकी ।
ना खबर भागमल छिन की जब बही बचे बिन की ॥
शिशपाल रात और दिन की होती नै देखिये कथा ॥४॥

तर्जः

आज रहम करने सै जान थारी फन्दे में घलवा देगी ।
खून की प्यासी म्हारी मौसी तनै कोल्हू में पिलवा देगी ॥टेक॥
रहम की अरज वहाँ होती जहाँ आगे प्रेम बसा होवे ।
कोमल बात नहीं सुनता जाके कान पै नाग बसा होवे ॥
किसी दवा ते ना उतरे जो नैन की चोट नशा होवे ।
किसको दो अरदास वा जो पाप की कीच फँसा होवे ॥
जान की मोती क्यूँ खोवे भुस काया में सिलवा देगी ॥१॥
जहाँ कुफर काफला होता हो वहाँ राज न्याव का लेश नहीं ।
नैनों से तकरार करै और होश में रहना ठीक नहीं ॥
खून के दीपक जला के जहाँ प्यार का सच्चा तेल नहीं ।
नारी का दिल जीत सके वो मसी लिखी सेल नहीं ॥
थारी छोड़ेगी जड़ बेल नहीं तुम्हें माटी में मिलचा देगी ॥२॥
पहले घुण पिस जाता है जब दो पाटों मे दबे चणा ।
वा भले बुरे ने कु जाने जाके आँख पै परदा रहे तणा ॥
और किसी ने क्यूँ छोड़ै जो खुद बेटे नै करै फना ।
दया हया ना रहे वहाँ जो लोहू पीवे बिना छणा ॥
थारी हड्डी के फूल बना भड़बूजों पै भुनवा देगी ॥३॥
थारे बालक टके दिवारों पै ल्लोहे की मेख गड़े नुह में ।
तड़फैगी माँ खड़ी खड़ी जब मौत प्राण सुत के चूमे ॥
गुरुशरणदास झण्डी की तरह म्हारा पिता इशारे पै झूमे ।
नरसंहार करै मौसी जाकी ज्वानी जाम मस्त झूमे ॥
वाके मुँह में बदबू भरी जीभ थारी बेलन तै बिलवा देगी ॥४॥

तर्जः ओ बाबुल प्यारे

छुप गये तारे, आँधी उठी गगन लगी धूल,
बिजली रही बादल में झूल, बींधे फूलों का दिल शूल ॥टेक॥
तूफानी हवा तै गिर रहे अड़ अड़ करके रूख ।
काँप गया भूगर्भ तलक थल फट पहाड़ के टूक ॥
दुख मर्यादा प्रतिकूल, चेतन जड़ सूक्ष्म स्थूल,
सबने जीवन जचे था फिजूल ॥१॥
रूप बसन्त विपत की गोदी रहा हाथ ते टोहवै ।
काँटे चुभजा ठोकर लग जा माँ कह कह कै रोवै ॥
होवे वही जो उस नै कबूल, कर दे जो पहाड़ नै तूल,
उसके अजब निराले रूल ॥२॥
ओलों से पिट गया बदन, मन फुकगा शोलों तै ।
गूँज रहा असमान दर्द में ओ माँ के बोलों तै ॥
गोलों की चोट ने फूल, कैसे झेले गलत वसूल,
फूके आग गुलों की गूल ॥३॥
गुरशरणदास तपने से भागमल सोने में गति होती ।
कुँवरपाल सुन तेज रगड़ तै होय काठ में ज्योती ॥
सुत मोती पिता बबूल, उसको भाग्य कहें या भूल,
सचमुच जगत अमूलामूल ॥४॥

तर्ज़ः

बीहड़ बन जग मग होगा ये फूल चमन तै आये हैं ।
विष की बेल लगा माली ने तोड़ के दूर बगाये हैं ॥टेक॥
वक्त मिजाज बदलने से सब पुण्य और पाप बदल जाते ।
जन्म देणिया लाज करणिया माँ और बाप बदल जाते ॥
कागज के उड़ जाये अङ्क रे हक इन्साफ बदल जाते ।
सब जज के जजबात गात में अपने आप बदल जाते ॥
जो मधू मलाई खाते थे आज बिन पानी घबराये हैं ॥१॥
रूप बसन्त हंस का सा जोड़ा फिरे बनी की राहों में ।
एक तो ठोकर लगे दूसरा शूल सरक जा पावों में ॥
एक गिरे गम खाये दूसरा थामे भर भर आहों में ।
वनचर थे बेचैन कहर का दरद बरस रहा आहों में ॥
छाले पड़गे पावों में काँटों ने जाल बिछाये हैं ॥२॥
कदै संरद से दरद बनै कदै तर हो जाय पसीने तै ।
कदै अचानक गिरै फिसल कै लगे धरण के सीने तै ॥
करै प्रार्थना हे ईश्वर तू मप्त भेज ऐसे जीने तै ।
बिन वक्त मौत भी आती ना बच जाये जहर के पीने तै ॥
जो करती करम करीने तै जब रहे विधाता बाँये है ॥३॥
बड छाया में लेट गया जब चढ़ गई थकन बड़ी गहरी ।
पड़ी विपत में विपत दूसरी चढ़ा शनीचर था बैरी ॥
झांड़ी में तै निकल चला एक नाग भयङ्कर था जहरी ।
दिया रूप कै डङ्क मार छाती पै मौत बनी गहरी ॥
गुरशरणदास दुनिया बहरी जब दिन गरदिश के छाये हैं ॥४॥

तर्ज़ः

ठाके गोदी में ल्हाश चला वन वन में भटक रहा ॥टेक॥
कदै ल्हाश नीचे धरके हिम्मत से उठावे था ।
आया है सो जावेगा कदै मन अपना समझावे था ॥
कदै दिल हिलोरे लेवै फिर ऐसे घबरावे था ॥
जानवर अनोखे देखे मन ही मन डर जावे था ।
गीदड़ों से डर के लाश हिंस में छिपावे था ॥
भूखा था बलहीन घिरनी खा खा के गिर जावे था ॥
कदै लकड़ी करै था तलाश खटका आग का भी खटक रहा ॥१॥
ततैया की बिड़ तै भिड़जा धोखे में रपट जा पाँव ।
कमर में कटेली चुभ जा ओरी मैं तो मरगा माँ ॥
बिन माँ के सुत की बोली स्वर्ग में भी करगी घाव ॥
ल्हाश ले बसन्त घूमे धरती और गगन के बीच ।
ठौर ना ठिकाना अपना मासुमता रही है खींच ॥
बणी में गरजते डोलैं शेर चीते वानर रीछ ॥
रे कदै पवन चले उनचास जीव जीवों का खटक रहा ॥२॥
राजा हो या रङ्क सजनों सभी को ले विपदा घेर ।
धैर्य धरण के धरता देखे नहीं पीठ फेर ॥
इन्ही को कहै सै मुनि नरों में भी होते शेर ॥
बालक था बसन्त फिर भी हिम्मत को बिछोया नहीं ।
भाई को उठाये डोलै मरे पै लौं सोया नहीं ॥
फरज को करेगा अदा धरम को डुबोया नहीं ॥
नर होतर नहीं निराश श्वाँस जब लौं गल अटक रहा ॥३॥
रोवते ही सन्ध्या होगी पश्चिम में दुबकग्या भान ।
पूर्व की दिशा में चन्दा आ गया उसी के थान ॥
एक आवे एक जावे यही है जगत का ज्ञान ॥
गुरशरणदास परखे जाते विपदा के में शूरवीर ।
पहर भर गुजरगी रात चालत रहा धर कै धीर ॥
इत्तफाक पहुँच गया गोमती नदी के तीर ॥
मानो जल हुआ उदास शीश दरिया में पटक रहा ॥४॥

तर्जः

मैं पूँछता हूँ बाबा धोखा ना कोई जनाब दो ।
सोच कै समझ कै मेरी बात का जबाब दो ॥टेक॥
रूप जब फन्दे में फैगा धर्म तेरा कित आगे रहगा ।
पाप जब राजा तै कहगा धर्म क्यूँ अधरम नै सहगा ॥
जो पाप की न्यूँ कहगा उस जान का हिसाब दो ॥१॥
पापी महलों में सोरे बणी में हम धर्मी रो रे ।
धर्म क्यूँ आया ना धोरे भला करके भी दुख ढोरे ॥
क्यूँ लिखे झूँठ कोरे मैं फाड़ दूँ किताब दो ॥२॥
धर्म की ऐसी थी जोती चमका जुगनू बिन मोती ।
मनू की ऐसी इच्छा होती पुण्य करना ही दया होती ॥
हंस को दो मोती हर काग को कबाब दो ॥३॥
डङ्क जब विषधर ने मारा धर्म कित लुक बैठा थारा ।
छन्द तू झूठा बञ्जारा ठगा तनै ठगिया जग सारा ॥
गुरशरण रूप जारा तुम धर्म की किताब दो ॥४॥

तर्ज़ः

मेरा शेर बावला हुआ धर्म क्यूँ तर्क वितर्क करै सै ।
तेरी गोदी पड़ा शहीद आज क्यूँ बेड़ा गरक करै सै ॥टेक॥
धर्म और अधर्म बैठे रहे ना एक साथ में ।
जैसे उगता हुआ ये भान किसी ने देखा ना रात में ॥
जिस दिन रूप महल में पहुँचा था सद्धर्म साथ में ।
तेरी पापन मौसी की दबरी थी गर्दन पाप हाथ में ॥
खुशबू देवे फूल पात में काँटा करक करै सै ॥१॥
पाप सङ्ग ते धर्म रहे ना धर्म सङ्ग ते पाप ।
राजा रहे पापनी गैला कर ना सकै इन्साफ ॥
जल्ल्द पापियों के सँग में तुम सन्त चले दो आप ।
सत्सङ्गत के कारण तुमको पापी करगे माफ ॥
बन के धर्म साँप डसगा स्वर्ग में नरक करै सै ॥२॥
धर्म की सूक्ष्म जाति पुत्र कोई सनत जानता है ।
जान बूझ के लाखों में कोई एक मानता है ॥
काम क्रोध मद लोभ त्याग...................।
मद में अन्धा होय मनुष बुरी बात ठानता है ॥
वेद शास्त्र को नहीं मानता अरथ में फरक करै सै ॥३॥
धर्म का सिंचा बाग एक दिन फूले और फलेगा ।
अम्बर लगे निशान कदै हाले ना हलेगा ॥
गुरशरण नदी में तार लाश जब जल पै रूप चलेगा ।
लग लग नीर हिलोर गात का सारा जहर ढलेगा ॥
हंस मिलेगा ताल धरण में निश दिन जरख करे सै ॥४॥

तर्जः

फैंक दिया ल्हाश को तरङ्ग में मिले, आग में समेट लिया ।
मौत का दूल्ह धार पै करता कला गहन का चन्दा चला ॥टेक॥
जिसको राखे राम सके कौन मार ।
जड़ चेतन सब करन लगै सै प्यार ॥
जब चली लहर से ल्हाश भँवर मझदार ।
झटपट करवट बदल दे....... ॥
मार गोता पार होता ईश्वर हए जिसका मल्हा ॥१॥
आवे सबकी मौत याद न्यूँ राख ।
आज नहीं तो काल मिलेगा खाक ॥
मिश्री का दे लोभ परोसे क्यूँ आख ।
लगे दूर से भले महकते धाक ॥
बड़ी धाक से इत्तफाक से तेरी मौत भीचेगी गला ॥२॥
नदी वेग से कल कल करती शोर ।
चली एक सौ मील दखिन की ओर ॥
उछल उछल जल ल्हाश में लगे हिलोर ।
लहर वेग ते जहर हुआ कमजोर ॥
अब गौर कर सुन ध्यान धर .... ॥३॥
नदी किनारे नाग एक था श्याम ।
आधा बिल में बड़ कर करे आराम ॥
गुरशरणदास जब रूप गया उस धाम ।
दुम से गाथ लपेट लिया..... ॥
ये जान लो पहचान लो कैसा अजब फन्दा घला ॥४॥

तर्ज़ः

एक बन्द कली फूलों से भरी मन्दिर को चली है दिवा धर के थाल पै ।
गौरा के भवन को चाँद जब चला गगन को, हाय रीझते हैं चाल पै ॥टेक॥
महरवा महबूबा बेली साथ में सुघड़ सहेली ।
प्रेम का फन्दा पहेली ॥
मोहनी मौसम ते खेली,.....रौहेली,
निशाना जापे लागै ॥
नैनों से वार तोते की लार तकरार कटे जन नारियल की डाल पै ॥१॥
कामनी कमनियाँ कम ना लहर जू लहरावे जमुना ।
मधुर मद बालों का गमना चाँद भी चेहरे के सम ना ॥
रे थम के त्यौर बदलती दिवे की लौ सी हलती, खाल ढूँढे बाल में ॥
कदमों का मोल धर तोल जन कोयल बोलती बगीचे में तान पै ॥२॥
फिर जल भरने को ठाड़ी कदम जब नदी ओर बाढी ।
ल्हाश एक कैड़े पै आंगी नार बस उसी ओर बाढ़ी ॥
रे साड़ी हाथ बाँध कै खींचा जोर साध कै गेर दिया पाल पै ॥
कैसी अजब रीत दिल हार जीत का....... ॥३॥
रूप का विष हल्का होरा फेर भी ललचाया भौंरा ।
कँवर बेहोशी में सोरा ॥
मैं गौरा पूजन को जाऊँ, या देवता तुम्हें मनाऊँ हाय झूलगी मैं जाल पै ॥
गुरशरण सही कहे ऋषि मुनि गुण बोला ना करते असम्भव सवाल पै ॥४॥

तर्जः

मैं प्यासी मेरे होंठ सूख रे मनै इतनी घणी सतावे क्यूँ ।
खड़ी समन्दर केश री मौसी मेरे खून ते प्यास बुझावे क्यूँ ॥टेक॥
तला पुराना खारा पानी मैं रोक सकूँ ना मदहोशी ।
कीचड़ में भी खुशी रहे सै जीव बिचारे सन्तोषी ॥
दुखियारों का दुखड़ा मेटे वा नर बड़े बेदोषी ।
किस किस का दुख मेटूँ सूँ ये दुनिया दुखी फिरे मौसी ॥
दुख मेटन का दिल कोन्या इसे काम और पाप बतावे क्यूँ,
मनै अपने दुख का डर लागै री पहाड़ के तलै दबावै क्यूँ ॥१॥
क्यूँ नार भोगने को होती और बिन भोगें कोई रही नहीं ।
गङ्गाजल समन्दर को माँ मारवाड़ को बही नहीं ॥
आनन्द की जो सजा करे रे पेश करूँ ये सही नहीं ।
ऐसी लट का सरहा के करते साधू सङ्गत रही नहीं ॥
गङ्गा में गोते लावै के बिगड़े बहकावे क्यूँ,
क्यूँ माता सुत गोदी में जाते हठ से दोष लगावे क्यूँ ॥२॥
राज हंसनी की गैला कदै काग जोट में जँचता ना ।
कर्मों का फल मिला करै भगवान भूल में रचता ना ॥
सारी दुनिया पाप करै कोई बुरे करम ते डरता ना ।
जैसी करे भरेगी तू वैसा यो दूध जहर में पचता ना ॥
ले ले मजे जवानी के अब झाल झूँठ बहकावे क्यूँ,
मेरे खून तै रौनक देख लूटरी छल तै छुरी चलावै क्यूँ ॥३॥
क्यूँ प्यार मेरे नै ठुकरावे मेरा खौफ तेरे पै झिले नहीं ।
धर्म सूझ का खड़ा सुमेरू कदै फूँक तै उडै नहीं ॥
गन्ना रस देता कोन्या जब तक कोल्हू में पिलै नहीं ।
घी निकल दही से न्यारा हो तो फेर मठा में मिले नहीं ॥
गुरशरणदास मिसरी के धोखे रूप कपासी...
जिन को धर्म बचाना है वा मौसी धोरे जावे क्यूँ ॥४॥

तर्जः

नफरत क्यूँ करते हो आज तुम छोटे भाई से,
झूठा था रे तेरा प्यार ॥टेक॥
लगा कोढ़ तेरी काया मेरी ओ मौसी चाण्डाल ।
हम बन में रवा किये तनै बे वारिस के लाल ॥
रे झूठा जाल फला के तने क्यूँ जान गँवाई सै, ये बुरा री कहेगा संसार ॥१॥
ओ सत्यानाशी नाग तनै लगा दिया बैराग ।
जब भाई डसा तनै रे मैं क्यूँ छोड दिया निरभाग ॥
आज दाग लगने को ना पास में पाई है, मैं हूँ सब तरियाँ लाचार ॥२॥
आज तेरे बिना भाई कौन मेरा लाड़ लड़ावेगा ।
ये जङ्गल बियाबान आज मनै उड़ उड़ खावेगा ॥
रे आज कौन बचावेगा मनै दुख की राहों सें, मेरे जीवन के आधार ॥३॥
गुरशरणदास गाले भागमल उमर तेरी गाने की ।
जब रूप कँवर गये स्वर्ग करी क्यूँ जल्दी जाने की ॥
मेरी आदत मुँह बाने की जानता ना कविताई मैं, हूँ सबका तावेदार ॥४॥

तर्जः

मानजा कहे की रूप रे मेरा भी पेटा भर जागा,
लियो मेरी मान ॥टेक॥
झुकी हुई मेवा की डाली, सुआ बन के खाले ।
तेरा रोते के या लाल पड़ा माँ करके दया उठा ले ॥
मन पापी समझा ले तेरा तो बेड़ा पार उतर जागा,
लियो मेरी मान ॥१॥
जो ना माने बात मेरी तो पाछे पछतावेगा ।
बुरे कर्म के धोरे मौसी रूप ना जावेगा ॥
लिखा कर्म पावेगा तेरा तो बना हुआ काम बिगड़ जागा,
लियो मेरी मान ॥२॥
हर सेवा ठाऊँगी तेरी आजा मेरी गैल में ।
कदम नहीं धरने का मौसी विष के भरे महल में ॥
जल जागा जली रहल तेरा तो खिला हुआ चमन उजड़ जागा,
लियो मेरी मान ॥३॥
गुरशरणदास कह शिष्य भागमल बुरे कर्म ते डर ले ।
हो जाँगे सिद्ध काम तेरे तू मन में राम सुमर ले ॥
ध्यान हरी का कर ले मौसी के बिन बेटे के सर जागा,
लियो मेरी मान ॥४॥

तर्जः

ल्हाश देख कै रूप कँवर की भाई रोया जार बेजार,
क्यूँ नहीं बोलता मेरी जिन्दगी के आधार ॥टेक॥
बैठ गया भाई की जड़ में और नब्ज हाथ की ट्होवे ।
लक्ष्मण की तरह बियांबान में क्यूँ नींद कसूती सोवे ॥
सर धुन धुन के इकला रोवे हाम हुआ बे हाल ॥१॥
तेरे चेहरे पै मुरझाई छागी और मुँह में आ रहे झाग ।
मौसी की तरह बियाबाण में मेरा बैरी बन गया नाग ॥
अब तो जाग क्यूँ पड़के सोगा तेरा भाई रहा पुकार ॥२॥

राणा साँगा

तर्ज़ः

भारत की नरसिंह प्रसूजा नमन तुझे मेवाड़ मही ।
सङ्कट लाख उपस्थित थे उन्हें समझे थी खिलवाड़ मही ॥टेक॥
धन्य धन्य हैं वधू मेवाड़िन मार्तण्ड मन चन्द्र विमल ।
वीरभद्र सम तेजस्वी अति पावन जैसा गङ्गाजल ॥
धीरमूर्ती धवल कीर्ती हंसन जैसा शरद कमल ।
सिँह पुरुष जननी जग जाहिर लजें अप्सराओं के थल ॥
सावधान पतिव्रत अति निश्छल अडिग हिमालय पहाड़ मही ॥१॥
हास्य मनोहर दन्त की पङ्गत कदलि पत्र शबनम के कण ।
कोकिल कण्ठ वीर रस गायन काँप उठे दुश्मन का मन ॥
विश्व शिखा महि मारवाड़ वीरों से भरा वह वीराङ्गन ।
घोर निशा उड़गन सी लगें तलवार नाराचों की चमकन ॥
विक्रम बल गजं रिपु सम गर्जन यवनज दम्भ पछाड़ मही ॥२॥
इस भूमि के सिँहासन पै बैठा बप्पा रावल था ।
शीतल चन्द्र अगिन सा ऊषण रण में घोर हलाहल था ॥
निर्मद्य निरामिष सन्त सुसेवक कोप गजेन्द्रों का बल था ।
पोषक धर्म अनीति का शोषक राष्ट्रप्रेम अन्तस्थल था ॥
आतमबल निज कर्म भरोसा स्वाभिमान बेआड़ मही ॥३॥
मेवाड़ की गाथा कथने को कोई कवि बुद्धि प्रखर चहिए ।
रक्त मसी वीभत्स लेखनी वीर अस्थि अक्षर चहिए ॥
ओज कण्ठ स्वर दीर्घ गवैया इष्ट रौद्र शङ्कर चहिए ।
राष्ट्रप्रेमि मर्यादित क्षत्री श्रोता भी बेहतर चहिए ॥
गुरशरणदास झटपट नर घट के देगी खोल किवाड़ मही ॥४॥

तर्जः

स्वार्थी अनर्थी व्यर्थी रास्ता जा भूल,
तरू पत्र सींचण लागे काट देता मूल ॥टेक॥
खोल देखो पन्ने पढ़िये बोले इतिहास ।
जितने वेग से विकास उसके सङ्ग ही विनाश ॥
अनायाास खिलता माली तोड़ लेता फूल ॥१॥
बप्पा रावल बाद सिंहासन कुमभा ने लिया ।
कतल सुत ऊदा का किया कहर का जहर भी पिया ॥
दीवा फोड़ ज्योती बालें कर्म प्रतिकूल ॥२॥
विकसित द्वार बन्द विनाशक आई लहर थी ।
कलह घे आठों पहर थी स्वार्थी इच्छा जहर थी ॥
रात दिन खटकता मन में आपदा का शूल ॥३॥
गुरशरणदास कह हार जीत का जुआ हो गया ।
जो पाया खुवा हो गया घुटन का धुँवा हो गया ॥
नतीजा हुआ ये उड़गी शौर्य पै धूल ॥४॥

तर्जः

जब निगाह समय की कठिन होय तब, धर्म नाव फाटै सै ।
मचै घोर उत्पात भाई का भाई कण्ठ काटै सै ॥टेक॥
लोभ ईर्ष्या बढ़ै द्रोह का बण तूफान उठै सै ।
आपस में ना मेल रहै दुर्गन्धित धुँआ घुटै सै ॥
सुरसा मुख सम विपत भयङ्कर सम्पति सकल लुटै सै ।
भस्मभूत हो मान प्रतिष्ठा फिर नहीं दाग छुटै सै ॥
कुण्ड दही का फोड़ निलज्जा बिखरी नै चाटै सै ॥१॥
पृथीराज और साँगा की नीयत गुमराह हुई थी ।
आगामी भूपाल बनूँ दोंनों की चाह हुई थी ॥
सहज सहज चित चिङ्गारी दहकी और दाह हुई थी ।
निर्णय होगा मन्दिर में यह अनत सलाह हुई थी ॥
कब रूठै कब हँसै भाग का के बेरा पाटै सै ॥२॥
मन्दिर का निर्णय साँगा के हक में खुल कै आया ।
पृथीराज गया भड़क भाई पै अजगर घात चलाया ॥
एक आँख गई फूट भाग कै मुश्किल प्राण बचाया ।
विकट बणी में कर्मचन्द से जाके हाथ मिलाया ॥
दाँतहीन नख झड़े सिँह नै गादड़ भी डाटै सै ॥३॥
पृथीराज घर गया ना फिर वह राज सजा से डर कै ।
साँगा शक्ति लगा बटोरण अद्भुत हिम्मत करके ॥
नाहर भूखा मर सकता ना जिये घास नै चर कै ।
कर्म किया फल पड़ै भोगना छाती पै शिल धर कै ॥
गुरशरणदास तज लोभ बड़ा दुखदाई वेद नाटै सै ॥४॥

तर्जः

गृह कलह का समाचार महिपाल को मिला ।
विकल हुआ सब गात गिरी जन शीश पै शिला ॥टेक॥
इस उज्जवल सूर्य वंश में उभरा यह दाग कहाँ से ।
शिव सदन श्वेत हिमगिरि में चमकी यह आग कहाँ से ॥
हरिवाहन गरुड़ गात पै झपटा यह नाग कहाँ से ।
अमृत से शुद्धं गो रस में टपका विष झाग कहाँ से ॥
मेवाड़ी दुर्भाग कहाँ से शिखर पै खिला ॥१॥
चिन्ता में भूप रायमल हुआ व्याकुल फिरै भवन में ।
ऐसी दुर्घट दुखप्रद घटना देखी ना सुनी जीवन में ॥
किस बिरल पाप ने मुझको दुख दिया है इस वृधपन में ।
पी जहर अभी मर जाऊँ ऐसी जगी गलानी मन में ॥
आँगन में भ्रम हुआ कि सारा आसमाँ हिला ॥२॥
राजा ने धीरज धारा कुछ राणी ने समझाया ।
भेजे चर चार भुप ने सुत पृथ्वीराज बुलाया ॥
राजा के सामी आकै कुछ जिकर सुना नहीं पाया ।
जा निकल देश सीमा से भूपति आदेश सुनाया ॥
मुरझाया इस तरह कि हृदय कर्द से छिला ॥३॥
आ गये दास सैनय सिपाही राजा ने किया इशारा ।
हाथों में हथकड़ी डाली और सफा शीश उतारा ॥
राजाओं के चिन्ह हटा कै अपराधि वेश किया सारा ।
चला अश्वहीन पैदल ही बस उतर गया मद सारा ॥
गुरशरणदास हत्यारा किसी पै करै क्यूँ गिला ॥४॥

तर्जः

था घोर निबिड़तम जङ्गल खतराये जान का ।
यम से मुकाबला था मेवाड़ी ज्वान का ॥टेक॥
घायल गात असह पीड़ा फिर बिना लक्ष्य प्रस्थान, अज्ञात ठिकाना ।
कङ्कड़ कीट कटीलों का वन मारग बे पहचान, सही राह ना पाना ॥
मग भूल भी जाना, फिर लौट के आना,
बार बार पछताना दुख बे परवान का, यम से....॥१॥
होनहार बलवान भाल पर अङ्क लिखे किस हाल, कोई बाँच ना पाया ।
बबर शेर खूँखार अचानक आ पहुँचा तत्काल, साँगा घबराया ॥
सिँह घात चलाया, साँगा ने उकाया,
बाल बाल बच पाया जीवन राणा महान का, यम से....॥२॥
भरा क्रोध में सिँह झपट कै किया दूसरा वार घणी गर्जन करकै ।
हुआ पेड़ की ओट में साँगा फिर मारी तलवार, सिँह गिर गया मर कै ॥
तब धीरज धर कै, कड़ी मेहनत करकै,
चल दिया हरि सुमर कै मारग पयान का, यम से....॥३॥
गुरशरणदास कहीं खड़ा करमचँद देख रहा यह खेल, रण कुशल खिलारी ।
आगे बढ़ कै हाथ मिलाया किया प्रेम से मेल, प्रशंसा भारी ॥
सिर पाग उतारी, दोनों बलिहारी,
हो गई वचन भर यारी जोड़ा समान का, यम से....॥४॥

तर्जः

हिन्द मुकुट मेवाड़ मही का मैं एक राजदुलारा हूँ ।
बीत गये दिन वो ना रहे अब गहता हुआ सितारा हूँ ॥टेक॥
मेरे पिता रायमल को मेरे पौरुष पै कुछ नाज भी था ।
राणा कुल का सूरज यह इस आशा मगन समा भी था ॥
रण विद्या में कुशल बनूँ मेरा गौरव रक्ष मिजाज भी था ।
यवन रहित भारत देखूँगा यही लक्ष्य अन्दाज भी था ॥
टूट गया सब सपन मेरा अब कजलाया अङ्गारा हूँ ॥१॥
मैं नहीं जानता था दुश्मन मेरी माँ की कोख से आये हैं ।
आशा वृक्ष मूल काटन को सङ्ग कुल्हाड़ा लाये हैं ॥
कर्मचन्द सुन मेरे साथिये नाग विषम बौराये हैं ।
दुर्भाग्य रूप मेवाड़ भूमि पै नाश के बादल छाये हैं ॥
कल तक था गण मान्य आज मैं कायर क्लीव आवारा हूँ ॥२॥
आगे भूप कौन होगा यह चर्चा थी हम भ्रातों में ।
मन्दिर का निर्णय मेरे हक में हुआ बात की बातों में ॥
इतना सुम कै निकल पड़ी तलवार दुधारी हाथों में ।
एक आँख गई तन जख्मी सब ना कमी रही उत्पातों में ॥
मेवाड़ पावनी गङ्गा का मैं टूटा हुा किनारा हूँ ॥३॥
गुरशरणदास सङ्ग्राम सिँह ने सब इतिहास सुनाया था ।
वंश बेल दई बता उपद्रव का कारण समझाया था ॥
साँगा की लई देख वीरता कर्मचन्द को भाया था ।
मित्रता का हाथ बढा कै प्रेम से कण्ठ लगाया था ॥
भगवान का भेजा निर्जन वन में अब मैं तेरा सहारा हूँ ॥४॥

तर्जः

छिड़ गया रे जङ्ग, बड़ा अजब ढ़ङ्ग, लगे कटन अङ्ग,
रँग लाल हुई धरती ॥टेक॥
शब्द भयद छन घनन घनन जब म्यान खुलीं तलवारों की ।
एक ओर सिँहवत सैन हिन्द एक ओर मुसल सियारों की ॥
बर्छी भल्ल तेग और साँगी चुपके चोट कटारों की ।
कटकै शीश गिरैं थल पै कुछ लटकैं कन्ध कयारों की ॥
मची मार काट, वीरों के ठाठ, चले यम के घाट, लहु ताल हुई धरती ॥१॥
बख्तर कोट सनाह कवच और सिर ढ़क कटे जवानों के ।
रजपूती सेना के आगे होश उड़े हैवानों के ॥
तितर बितर हो गये मुसलमाँ गिरगे वस्त्र पठानों के ।
भगते देख हौसले बढगे राजपूत बलवानों के ॥
लिये भगते घेर, भिड़ गये रे फेर, ल्हाशों के ढ़ेर, बेहाल हुई धरती ॥२॥
कर्मचन्द सङ्ग्राम सिँह भिड़ गये दिंपहसालारों से ।
गूँज उठा भूखण्ड दूर तक सिँह गर्जन ललकारों से ॥
समझ गये हैं यवन पड़ा है पाला अब भट भारों से ।
जान बचा कै खिसकन लागे सैन्य चीर गलिहारों से ॥
गये छोड़ खेत, रण नाचें प्रेत, यवनों के हेत, महाकाल हुई धरती ॥३॥
यवनों का गया बिगड़ संगठन मौहम्मदी भयभीत हुई ।
थोडी सेना रजपूती साँगा की फिर भी जीत हुई ॥
क्षत्री वंश विजय नहीं देगा यवनों को परतीत हुई ।
गुरशरणदास साहस में बल है ये कीर्ति नवनीत हुई ॥
हुआ जङ्ग बन्द, सँग करमचन्द, आनन्द छन्द, शिव बहाल हुई धरती ॥४॥

तर्ज़ः

मिला करमचन्द से साँगा,जैसे सोना ओर सुहागा, सहारा सीधी बाँह का ॥
सपना हो साकार जलद बदले की चाह का ॥टेक॥
कर्मचन्द को अस्त्र शस्त्र का चलन सिखावै था ।
लक्ष्य साध अभ्यास युद्ध के भेद बतावै था ॥
बचावै जो दाव शत्रु के छल से घिर जा दुश्मन के दल से,
जख्मी कटे सनाह का, सिखा दिया उछलङ्ग दाव जल में जो ग्राह का ॥१॥
भाण, भिण्ड, नाराच कला भाला तलवार की ।
बरछी भल्ल तेग और साँगी गज असवार की ॥
वार से वार काटना होता, दुश्मन गर्ज डाटना होता,
है रण खेल निगाह का, मरण देख ना वेग घटै मन के उत्साह का ॥२॥
कर्मचन्द भी युद्ध कला कर चाव सीख रह्या ।
आदर और सत्कार शिष्य के भाव सीख रह्या ॥
सीख रह्या दाव निशाने बाजी, हो गया सङ्ग्राम सिँह राजी,
आशीष वाहे वाह का, सरा खटका मिटा जो मन में था गुमराह का ॥३॥
गुरशरणदास कह घोर आपदा शोभा वीरों की ।
फूलों जैसी चोट समझते हैं शमशीरों की ॥
रणधीरों का जोश जगै ना, जब तक देखे पता लगै ना,
उसके बल की थाह का, झिला करै ना तेज वीर के अन्तर्दाह का ॥४॥

तर्जः

यारी का पथ तार पातला, चाढे फेर हालिये ना ।
निगाह चुके ढा पड़ै तलै तू, बङ्की चाल चालिये ना ॥टेक॥
सीख लिया हथियार चलन इतने से पूर नहीं पाटै ।
रण रँग लाल लहू नदिया नित रहती मौत खड़ी काठै ॥
धरी हथेली जान ज्वान की मौका लगे काल चाटै ।
तलवारों की झन्कारों में बिरला वीर धीर डाटै ॥
खाटे दाँत देखते हि हो जा पानी दीप बालिये ना ॥१॥
वीर परिक्षा पुर ना होती ठीक निशाना ल्याये तै ।
भस्मक भूख मिटा ना करती भुजी खील के खाये तै ॥
सब हथियार कुण्ठ हो जाते जङ्ग बीच घबराये तै ।
कायर में पौरुष नहीं जगता किसी ढाल समझाये तै ॥
पछताये तै के बनता फिर जिन्दा घराँ आ लिये ना ॥२॥
सिखा दिये सब दाव जङ्ग के कर्मचन्द अब घर नै जा ।
मैं हाँडू परेशान अभागा मेरे सङ्ग मत मरने जा ॥
कह लिया तुझको यार, यार मत जोखिम में पाँ धरने जा ।
कह दे तू मुँह खोल कि साँगा करनी का दँड भरने जा ॥
नर ने चहिये मर्द की सङ्गत गादड़ गाँव पालिये ना ॥३॥
अब भी है एहसान तेरा डूबे ने सहारा पाया सै ।
तेरे कमाये अन पानी से छक कै भोजन खाया सै ॥
गुरशरणदास रहूँ ऋणि तेरा तू मेरे मन को भाया सै ।
मुझ अङ्गहीन अल्पायु को तनै प्रेम का अमृत प्याया सै ॥
आया मुझ पै वक्त कठिन तू फन्दे नाड़ घालिये ना ॥४॥

तर्जः

व्याकुल भरी कहानी मेरी और व्यथा जोड़ै मत ना ।
खतरे की खता खाया खत हूँ तू नई खता जोड़ै मत ना ॥टेक॥
जिस का जग में घर गाँव नहीं उसका के ब्याह हुआ करता ।
दाँतहीन नख झड़े शेर का नहीं निर्वाह हुआ करता ॥
रूई धुनकिया कन्धे धुनकी नहीं शहँशाह हुआ करता ।
अग्नि रङ्ग चिरमिटी का नहीं उसमें दाह हुआ करता ॥
बिना मूल का पेड़ हूँ मैं तू नई लता जोड़ै मत ना ॥१॥
चन्द्र वदन कन्या का तू किसी तेजस्वी से ब्याह करिये ।
प्रेम के विवश अकारण ही मत अपने को गुमराह करिये ॥
ताल भङ्ग स्वर लचर गीत पर मत फरजी वाह वाह करिये ।
बैर प्रीत समता में भले थर बन्धुन बीच सलाह करिये ॥
मैं भटका हुआ बटकिया हूँ तू और पता जोड़ै मत ना ॥२॥
सच मान करमचँद साफ कहूँ मुझे रही ब्याह की चाह नहीं ।
क्या न करूँ क्या करूँ न निर्णय जीवन में उत्साह नहीं ॥
सब मारग अवरुद्ध हुए हैं दर्द मानसिक थाह नहीं ।
लगता है वीरान खलक कोई साथ दूसरी बाँह नहीं ॥
लोग हँसें जिसको सुन कै तू नगन कथा जोड़ै मत ना ॥३॥
धन्यवाद श्रद्धा तेरी को आदर तेरे विचारों का ।
मैं सङ्कट का ग्रास अकाबिल भिक्षुक हूँ गलिहारों का ॥
वही सहायता कर मेरी जो फर्ज काबिले यारों का ।
कर साहस संयोग बना दे दस हजार तलवारों का ॥
गुररणदास बन मेहरबान बेढङ्ग धता जोड़ै मत ना ॥४॥

तर्जः

सिँहासन पै बैठ गया था जब साँगा महाराणा ।
था स्वागत पुरजोर वहाँ की जनता ने सुख माना ॥टेक॥
गुप्तकाल में महाराणा न्यूँ चिन्तित रह्या करै थे ।
तुर्क जीत रहे भारत में ये पीड़ा सह्या करै थे ॥
यवन रहित भारत कब देखूँ मन में कह्या करै थे ।
फेर ापसी फूट याद कर आँसू बह्या करै थे ॥
छिप जङ्गल में रह्या करै थे स्थिर नहीं ठिकाना ॥१॥
बहुत दिना के बाद देश का ध्वजा हाथ में आया ।
भट बाँके वीर भरोसे के रिपुघाती व्यूह बनाया ॥
दिल्ली और गुजरात मालवा से जा जङ्ग मचाया ।
एक साथ करी विजय तीन थल अपना राज बढ़ाया ॥
छोड़ युद्ध मैदान यवन अब होने लगे रवाना ॥२॥
इब्राहिम से किया जङ्ग साँगा ने कहर मचाया ।
हर इच्छा बलवान तेग से दायाँ हाथ कटाया ॥
घुटने में लगा तीर जख्म ने साँगा लङ्ग बनाया ।
पीड़ा की परवाह नहीं लोदी को सबक सिखाया ॥
खिलजी को किया कैद पठाया बाबर को परवाना ॥३॥
साँगा का सुन नाम सहम दिल दुश्मन का धड़कै था ।
भाषण से आसन हिल जाता बिजली सा तड़फै था ॥
गुरशरणदास यवनों को देख हर राजपूत भड़कै था ।
नागों जैसी साँस गूँज दाँतो से दाँत कड़कै था ॥
मड़कै था गात चड़कै था हाथ फड़कै था जङ्ग दिवाना ॥४॥

तर्जः

अपना निश्चय बहुत पुराना, खत में लिखन लगे महाराणा, अपने इष्ट को प्रणाम।
देश वन्दना लिखी लिखा फिर वालेकुम सलाम ॥टेक॥
भूप रायमल का सुत मैं सङ्ग्राम सिँह राणा ।
तू नया विदेशी वीर फर्ज मेरा तुझको समझाना ॥
तू मिसरी जान कपास ना खाना, बाबर आगे ना कदम बढाना,
यहीं पै विराम, अपना भला चाहता हो तो हौसले नै थाम ॥१॥
इतना रखिये याद देश यह हिन्दुस्तान है ।
बहुत दिना गम सहकै जगना इसकी बान है ॥
प्राण जब बलिवेदी पै धर दे, रण में ताल रकत के भर दे,
जग में न्यूँ हे सरनाम, हम सूरज वंशी वीर और तू मस्जिद का इमाम ॥२॥
भारत में पग धरना तेरी भारी भूल है ।
हम देखन में लगे फूल भले दुश्मन को शूल है ॥
मूल में मुल्क तेरा जो अपना, लौट जा दुराग्रह सपना,
कल्पना कायरों का काम, खपै जिन्दगी हाथ लगेगी कौड़ी ना छदाम ॥३॥
गुरशरणदास खत बन्द किया और कासिद ले गया ।
अगले दिन की सुनो मोड़ सङ्ग्राम का नया ॥
किया कटक इकट्ठा सारा, रण का बजा दिया नक्कारा,
अम्बर गूँज गया तमाम, होकै चला निशङ्क चढ़े जैसे लङ्का पै राम ॥४॥

तर्ज़ः

लेकर भारी कटक चला सङ्ग्राम सिँह मेवाड़ी ।
घोड़े और गजराज ऊँट, रथ रण के कुशल खिलाड़ी ॥टेक॥
रण भेरी मृदङ्ग पटहघन चल दिये शङ्ख बजाते ।
गज गरजे हींसे घोड़े रथ के चाके गहराते ॥
हो जाता रवि अस्त जहाँ वहाँ तम्बू छावनी छाते ।
भोजन और शयन कर सैनिक बहुत सुबह उठ जाते ॥
आठ दिना का सफर किया दल बढ़ता चला अगाड़ी ॥१॥
हुई सूचना बाबर पै उसने भी सैन सजाई ।
पल में दोनों दल भिड़गे फिर जमकै हुई लड़ाई ॥
भगे यवन रण छोड़ सभी बाबर सेना घबराई ।
चार हजार यवन मरगे साँगा के सहस सिपाही ॥
तीन बार किया जङ्ग हार गया बाबर निपट अनाड़ी ॥२॥
बाबर बड़ा निशङ्क हठीला साँगा से घबराया ।
फिर धोखे की चाल चली जब और राह नहीं पाया ॥
लिख सन्धी का झूठ पत्र वह साँगा पै पहुँचाया ।
युद्ध शिथिल हो गया वहाँ जा अपना दल भड़काया ॥
न्यूँ बोला मैनें दारू पीकर मारी आप कुल्हाड़ी ॥३॥
करे इकट्ठे यवन सैन मजहबी जुनून चढ़ाया ।
छोड़ दिये मनै सभी नशे अल्लाह को साक्ष्य बनाया ॥
मौका पाकर बाबर ने सैनाबल और बढ़ाया ।
भेज दिया ऐलान खानवा में जा जङ्ग जमाया ॥
गुरशरणदास रजपूती सेना रण उछलङ्ग दहाड़ी ॥४॥

तर्जः

महाराणा जङ्ग में जमे, अङ्ग में उमङ्गित रण में,
रङ्ग लाल था, साँगा महाकाल था ॥टेक॥
घोड़े पै सवार साँगा साँग ने फिराने लगा ।
बज्रं जैसी घातक चोट मार कै गिराने लगा ॥
शेर जैसी गर्जन सुन हर ज्वान थरथराने लगा ॥
राजपूत सैनिक निर्भय बाघ से मचलते चले ।
कन्धों पै लटकते सिर कट भुमि में उछलते चले ॥
ससकती थी लाशें उनको हाथियाँ कुचलते चले ॥
पाँव कटगे तन गिर गया, बीच में से चिर गया, किसी कै छाती साल था ॥१॥
भारतीय सेना भड़की यवनों के उखड़गे पाँव ।
विधर्मी बचा ना ऐसा जिसके ना लगा हो घाव ॥
जङ्ग छोड़ भागण लागे भूलगे खिलाड़ी दाव ॥
साँगा से भिड़ा था बाबर देख लिया दल की ओड़ ।
यवनों की सेना डरकै भागरी थी रण को छोड़ ॥
घोड़े का झटक दिया रस्सा छोड़ दिया अपना जोड़ ॥
साँगा ने भाले को बाबर पै चलाया बच गया बाल बाल था ॥२॥
महाराणा ने आगे बढ़कै बाबर को लिया था घेर ।
सोलह घाव दिये दुश्मन को सैनिकों पै टूटा फेर ॥
सामने जो पड़गे जितने काट सर लगाया ढेर ॥
बाबर ने सँभलं कै अपनी भगती सेना रोक लंई ।
वीर रस के भाषण देकै हारी पीठ ठोक दई ॥
मुसलमाँ इमानी रँग दे फेर जँग में झोंक दई ॥
घमासान था रण थल में कुञ्जरों के पग तल डूबे लहू ताल में, जँग में बुरा हाल था ॥३॥
खोटा वक्त महाराणा के माथे में सरक गया बाण ।
हुा मूर्छित नीचे गिर गया खाली देख अश्व थान ॥
मरा जान कै महाराणा को भगे आर्य लेकै प्राण ॥
गुरशरणदास टाले नहीं टलती जब आ जाती खोटी स्यात ।
हानि लाभ मरण और जीवन यश अपयश ये छैहों बात ॥
कहते आये सन्त महात्मा होती हैं विधना के हाथ ॥
गफलत में महाराणा होश में जो आया उसका झुका भाल था, न उसको ऐसा ख्याल था ॥४॥

तर्जः

वेदना थी भारी घायल साँगा का शरीर था ।
असम्भव को सम्भव कर दे हौंसले का वीर था ॥टेक॥
मूर्छा के हटते ही उसके गात में उचाटन सी ।
भड़क थी भयङ्कर गर्जन बादलों के फाटण सी ॥
स्वाँस मानो नाग फण सी तूफानी समीर था ॥१॥
सिँहनाद करकै बोला यहाँ पै मैं आया क्यूँ ।
दुश्मनों के सङ्कट बल से दूर मैं छिपाया क्यूँ ॥
हार मुख दिखाया क्यूँ आज फैसला अखीर था ॥२॥
जहाँ भी हो बाबर बैरी वहीं पै मैं जाऊँगा ।
मरुँगा या मारे बिन मैं लौट के ना आऊँगा ॥
दाग ना लगाऊँगा मैं तो खानदाँ नजीर था ॥३॥
गुरशरणदास जीवन मोल की बिसाया ना ।
जिन्दगी में आनँद क्या जो देश ऋण चुकाया ना ॥
बैरी खींच पाया ना यहाँ द्रोपदी का चीर था ॥४॥

हकीकतराय

जबाब बच्चों का कोरा से

तर्जः देहाती

आज कुफर की घटा उठी सूनी रहगी राम कुटी,
शेर हकीकत जेल में ॥टेक॥
आज सुबह के वक्त वहाँ पर टीचर नहीं मदरसे में ।
सारे बच्चे कट्ठे होगे ठीक टैम के अरसे में ॥
हिन्दू बालक एक मुट्ठी, यवन सैकड़ों सलाह घुटी,
मगन हुए सब खेल में ॥१॥
वो बोले चल खेल हकीकत चिन्ह मिटा परेशानी की ।
वो बोला मैं खेलूँ कोन्या सौगन्ध मुझे भवानी की ॥
काम अधूरा मेरा पड़ा, समय परीक्षा निकट अड़ी,
हो जाऊँ कदै फेल मैं ॥२॥
गाली दई भवानी को लडकों ने कुफर मचाया था ।
वीर हकीकत ने उनको भी उत्तर वही सुनाया था ॥
पकड़ी बाँह मरोड़ दई, बुदका तख्ती फोड़ दई,
फरक पडन लगा मेल में ॥३॥
गुरशरणदास झगडे के समय टीचर ने दर्शन आन दिये ।
इस्लाम धर्म की तौहीनी यवनों के सिर्फ बयान लिये ॥
कर खबर बुला लई पुलिस वहाँ, वीर हकीकत खड़ा जहाँ,
बाँध लिया उसे बेल में ॥४॥

कवि उवाच

॥ दोहा ॥

वरदान लाई माँ तू सुत को धर्म के प्यार में ।
दिल जालिमों के बहने तेरे लहू की धार में ॥

तर्जः नफरत की दुनिया

आज वरदान तू लाई है ।
....॥टेक॥

सच बात अदालत में हाकिम से कह दूँगा ॥
सहूँगा जो विपदा आयेगी धर्म को सदा निभाउँगा,
जिसके सहारे थमा संसार ॥२॥
माँ मेरी सजा सुन करके, तुम कोई भय मत करना ।
जुर्माना करे अदालत तुम कोई हामी मत भरना ॥
डरना चाहिए ना मर्द दिल केश जब सत्य सुनाउँगा,
छोड़ देयगी सरकार ॥३॥
गुरशरणदास पिता माता, तुम क्यूँ घबराते हो ।
तुम लौट जाओ घर को झूँठी चिन्ता ने दबाये हो ॥
विपता के सताये हो, सत्य है पिता स्वर्ग की राह,
होवेगा बेड़ा पार ॥४॥

॥ शेर ॥

हे ईश्वर तुम दीनबन्धु तो दया कर दीजिए ।
मेरे कुँवर की जान बचे हाकिम रिहा कर दीजिए ॥
सुनती रही इतिहास में तुमने चीर द्रोपदी को दिया ।
जानूँगी तेरा करिश्मा मेरे पूत को कर दे रिहा ॥
रहम कर प्रभु रहम कर मेरे हाल पर तू रहम कर ।
गुल एक है मिट जायेगा इस डाल पै तू रहम कर ॥

जबाब कौरा का काजी से

तर्जः देहाती चौकलिया

खुदा दोस्त कर दर्ज रहम की अरज फला रही झोली ।
मेरे बेटे की जान बख्श चाहे मेरे मार दे गोली ॥टेक॥
दहाड़ मार डकराके माँ ने लिए चरण थाम काजी के ।
महरबान शहनशाह खुदा ऐसे लिए नाम काजी के ॥
ममता के कारण माँ ने लिए चाट पाँव काजी के ।
कदम उठा माथा टेकै थी सरे आम काजी के ॥
चेहरे पै खुश्की मुरझागी माँ की सूरत भोली ॥१॥
बिना हकीकत के रोवेगा सासू के घर सेहरा ।
एक दिये के बढ़ने तै दोनों घर घोर अँधेरा ॥
छाती पै धर हाथ अगर ये बेटा होता तेरा ।
करता गुनाह और भी ज्यादा धर्म फरोस लुटेरा ॥
खुदा कसम सच बता खेलता के पूत खून की होली ॥२॥
याणी उमर बहू की सै बता क्यूँ कर दिल डाटैगी ।
रात चाँदनी शरद ऋतु वाके सीने नै चाटैगी ॥
बेटा होजा कतल मुझे जब ये मालुम फाटेगी ।
प्रलय सी हो जावे काजी धरती सी फाटेगी ॥
ताजी सिन्दूर बहू का सै मत रँगै खून सै चोली ॥३॥
सुन ममता के बोल वहाँ पर पत्थर नीर बहै थे ।
जीवो जीवो का शब्द यहाँ इजलास में लोग कहै थे ॥

दिन में तारे टूट पड़े और पर्वत आप ढहै थे ।
पर दर्द बड़ा बेदर्द यहाँ बन्धन में शेर रहै थे ॥
गुरशरणदास यंश गावेगी तेरी घड़वे वाली टोली ॥४॥

जबाब हकीकत का माँ से

तर्जः सावन का महीना

दे वरदान बावली क्यूँ भूल रही अरमान ।
तू सब हिन्दुन की माँ है तेरा बेटा हिन्दुस्तान ॥टेक॥
दूध की कीमत आज चुकेगी ।
धर्म की नैया जननी पार रुकेगी ॥
ना गर्दन मेरी झुकेगी, जब तक तन में प्राण ॥१॥
मेरी वीरता पै दिवे चसते हैं ।
इनके जुल्मों पै खर हँसते हैं ॥
सस्ते हैं ना धर्म निभाने ये क्या जाने बेईमान ॥२॥
वीर था हकीकत न्यूँ दुनिया कहेगी ।
हिन्दुओं की गर्दन सदा ऊँची रहेगी ॥
यहाँ जब तक गङ्ग बहेगी तेरा नाम महान ॥३॥
गुरशरणदास लिखे छन्द सुमर के ।
गाले भागमल ऊँचा उभर के ॥
तेरा नाम अमर हो मर के तौ के तेरा नुकसान ॥४॥

तर्जः लेजा छल्ला निशानी

हाकिम हुकूमत की मेरी सलामी, तुम हो जनाबे दिल दुनिया के स्वामी ।
करता गुजारिश मैं तो जनता के सामी ॥टेक॥
मुलजिम की दरख्वास्त हाकिमे गौर के काबिल है ।
मजहब सभी के दिल में है बात ये ठोस मुकम्मिल है ॥
गुनाह है दोनों तरफ क्यूँ मुलजिम हिन्दू ठहराया ।
गौर बिल्कुल ना फरमाया हुक्म इकतरफा क्यूँ आया ॥
छाया बचानी चाही जड़की तमानी तुम हो जनाबे दिल............॥१॥
ना मुलजिम की उमंर लिखी और लिखे बयाँ क्यूँ ना ।
वकालत का कालम सुना गैर इनसाफी नमूना ॥
कहाँ लिखा किस जगह शरह में कि बालक कतल करो ।
निर्बल को जग बेदखल करो खून से धर्म को सफल करो ॥
जुल्मों से डरोगेना तो होगी बदनामी तुम हो जनाबे दिल............॥२॥
ये बुढ़िया उसे अलख फातमा से क्या कुछ कम है ।
पुकारे सितमें आलम है, माँ के नैनों में मातम है ॥
धर्म की छाया बैठ निबल के आँसू बहते हैं ।
सिसकते तड़फन सहते हैं तो अधर्म किसको कहते हैं ॥
रहते पनाह में थारी करते गुलामी तुम हो जनाबे दिल...........॥३॥
बच्चों की खिलवाड़ जान का फन्दा बन जाये ।
चला दोजख में वो जाये शिकायत अल्लाह से ठाये ॥
गुरशरणदास अन्याय करे तै दलक उठेगी माँ ।
तख्त पै घबराये अल्लाह वह कर देगा तुम्हें तबाह ॥
फना जो करते निर्मम वो ही हरामी तुम हो जनाबे दिल...........॥४॥

तर्जः हम तुम चोरी से

न० सा०– हकीकत मरदाने कहूँ जो तू माने, अपनी हठ दे त्याग कटा चोटी सिताब ले।
ह०– हुक्म सरकारी सै अनीती थारी सै हंस बनै के काग मेरे हाकिम जबाब दे ॥टेक॥
न०– लाड़ अपनी माँ का इस्लाम बन बचा ले ।
ह०– कहती ना सिँहनी सुत के बेटे तू घास खा ले ॥
न०– कयामत शेर की हाथों नबाब के,
ह०– जुल्म एक बालक पर, कतल करवाते सर,
कहाँ यो लिखा है निर्भाग खोल कागज किताब के ॥१॥
न०– तड़फेंगे दो जईफे इस तेरी भूल से ।
ह०– पड़ता कुफल सहना गिरै हाकिम वसूल से ॥
न०– हिदायत एक है हित में जनाब के,
ह०– सींचता है माली, चमन की हर डाली,
सूँघा करते नाग, खिले जब गुल गुलाब के ॥२॥
न०– शहर के जो काजी सब खिलाफ तेरे ।
ह०– देखो स्वर्ग में चलकर कितने हिमाती मेरे ॥
न०– दिवाने देश में जालिम शराब के,
ह०– वीर कभी झुकते ना, छूट कर रुकते ना,
गज से खेलते फाग, शेर मजनू कबाब के ॥३॥
न०– लिखता हूँ मैं फाँसी जोखिम का जाम ले ले ।
ह०– मिटते धर्म पै हम भी मेरी सलाम ले ले ॥
न०– हमारी मान जा जी कर शबाब ले ।
ह०– चाहे मिट जावेंगे, सभा में गावेंगे,
गुरशरण धर्म का राग चाहे धरती में दाब ले ॥४॥

तर्जः दिल कहे रुक जा रे रुक जा

यमराज फरद पै तू लिख दे चाहे मौत को अभी ।
ये शेर इस तरहा ना झुकेंगे कभी ॥टेक॥
हम उस देश के वासी हैं जहाँ गङ्गा जी का नीर,
नित कल कल लरजे ।
तुम जैसे हैवानों ने लिया खैंच सती का चीर,
जब कृष्ण गरजे ॥
वर्दों के हर्जे, कभी तुले ना नर्जे, जो जीव जगत गुलसर्जे, वा जाँगे सभी ॥१॥
रामचन्द्र मर्याद बाँधते वन में फिरे निशङ्क,
जब सिया चुराई ।
हनुमान दिये भेज अकेले खाक बनाई लङ्क,
जग कीरत छाई ॥
है धर्म दवाई, मरकर भी भलाई, लाख कथा फुलवाई, इसी धरती में दबी ॥२॥
परशुराम से गुरु यहाँ पर जिनका जग में शोर,
चली तेग दुधारी ।
हम तुमसे घबरारे कब तुम नीच धर्म के चोर,
और धर्म के हारी ॥
ये धजा हमारी, वर्षों से बता री, यहाँ दिखा सका ना कोई, करिश्मा नबी ॥३॥
गुरशरणदास कवि लोग लिखेंगे कर कर के चतुराई,
म्हारा यश लहराये ।
यहाँ भागमल से हिन्दू अल्लाह के भी देय गवाही,
चाहे धड कट जाये ॥
हम ना घबराये, कर जो तू चाहे, ये स्वर्ग तलक टकराये, इन छन्दों की छवी ॥४॥

जबाब लक्ष्मी का हकीकत से

तर्जः देहाती

प्राण पति तू मुसलिम बन जा हुक्म मान सरकारी रे ।
मनै भी मौका मिल जा कुछ सेवा कर लूँ थारी रे ॥टेक॥
घणी मणी की कीमत हो चाहे रहे सर्प के माथे में ।
कदर शेर की होती है चाहे बसो सियार के हाते में ॥
के हरजा जो धूप से बच के टिके अरँड के छाते में ॥
महक फूल के छाते में चाहे मुल्ला सूँघ पुजारी रे ॥१॥
हंस पखेरू पै नहीं झिलेगा भार मेरु मन्दर का ।
सूरज के भय फिरै रात में ये चन्दा अम्बर का ॥
एक मोती कौआ खाले के घट जा सीप समन्दर का ॥
हाथ नारियल बन्दर के ना जाणे पीड़ हमारी रे ॥२॥
ये फूल कदै फल देवेगा इस आशा में है दो माली ।
फूल सूख नीचे गिर जा जब टूटेगी कचियल डाली ॥
तड़फ तड़फ माली मरजा और व्यापेगी घर कङ्गाली ॥
ठाली करे धर्म की जिद म्हारी लुटजा केशर क्यारी रे ॥३॥
पिया पिया कह गिरी चरण में सुन्दर पपिहा सी बानी ।
जल्लादों का दिल हाला पड़े झर झर आँखों से पानी ॥
आज कन्हैया चले अमरपुर रोती रही राधा रानी ॥
गुरशरण भागमल ने गानी ये कथा विपत पड़ी भारी रे ॥४॥

तर्जः मैं ढ़ूँढ़ता हूँ तुझको

औलाद वाले रो रहे बेचैन होके राहों में ।
ये चौदहवीं का चन्दा है राहू की बाहों में ॥टेक॥
हथकड़ी हाथों में गेरी ना जञ्जीर से घेरी ।
गुलों की गुल दस्ता केहरी बने ना मिट्टी की ढेरी ॥
झनकारती थी बेड़ी उस केशरी के पाहो में ॥१॥
टपकते आँखो से शबनम रपटते साँसों के सरगम ।
अधम जब करते हैं अधरम दर्द का दिल तै हो सङ्गम ॥
सर फाट जाता गम से मखलूम की सराहों में ॥२॥
हकीकत अब भी हँसता है परख पै सोना कसता है ।
जगत जोखम पै बसता है सभी का ये ही रस्ता है ॥
मैं मेरे का जो रिश्ता ये ही झलकता राहों में ॥३॥
गुरशरणदास नर है शीश जाके सीधा धड़ पर है ।
मौत डर झुकता जो सर है भागमल तूवाँ बहतर है ॥
बाबूराम ये सफर है अनजानी दिशाओं में ॥४॥

जबाब कौरा का

तर्जः

काजी बेईमान मान जा हमसे बाजी मत खेले ।
जब तक सोते हैं तू शासन का आनँद ले ले ॥टेक॥
भारत विधवा शान्त खड़ी उसे खवा मार कै मत अड़सै ।
झुक ना सकेंगे जुल्मों सें हम जब तक नाड़ जुड़ी धड़ सै ॥
देश केशरी जागेंगे बुनियाद हला देंगे जड़ सै ।
नई ज्योति पैदा होजा जब मणी जोड़ खाजा लड़ सै ॥
तू सदा का ठेकेदार नहीं दो चार दिना के रँग मेले ॥१॥
हवा लगे तै धधकैगी तू दबी आग नै मत पाड़ै ।
जख्म पुराने चसक रहे तू नमक घाव पै मत लाड़ै ॥
सोते सिँह ने मरा जानके गीदड़ सामी मत दहाड़ै ।
शर्म का पर्दा आख्याँ में तू मैंठी देके मत फाड़ै ॥
जब तक नाग काँचली में तू दुख देले या सुख देले ॥२॥
माँखी बाल देख के खा तू घणी उबलती मत चाटै ।
खुन खुदा का दिया हुआ परसाद जान कै मत बाँटै ॥
सैंड का बाग लगाने को मत बेल अमरफल को काटै ।
खलक गर्क हो जावेगा बिन धर्म धरण को कुण डाटै ॥
सिँहनी के सुत के पञ्जे तू बता खड़ा ने कब झेले ॥३॥
मस्जिद थारी बनी हुई और बणा हमारा बुत खाना ।
कितना फर्क खुदा ईश्वर में देख भाल के तू आना ॥
सब जीवों को मोह लेता जब सुर में होजा गाना ।
मूर्ख गुरु की सङ्गत पाके हो जीवन भर पछताना ॥
गुरशरणदास वहाँ रँग बरसे जहाँ महरु भागमल से चेले ॥४॥

तर्ज: चला केसरी

मुँह किसका रहा देख खड़ा जल्लाद करे मत देर ।
कर तेगा लेके तू मेरी नाड़ पै फेर ॥टेक॥
हकीकत ने ताने मारे जल्लादों के जागा जोश ।
तेगा को उठाया कर में जब ड्यूटी का आया होश ॥
वार ले चलाया सर पै अपनी आत्मा ने मोश ॥
बीजली सी फाटी जिस दम तेग ने झड़ाका किया ।
घर बैठी डकराई जननी काँप गया माँ का हिया ॥
मौत ने मिटाली भूख जणै जितना फाका किया ॥
कुदरत का भी दिल काँप गया और जग छाया अन्धेर ॥१॥
सारी सृष्टि घबरागी और जीवों की बँद वाणी होगी ।
सबके मन में व्यापगी जण तेरे बेटे की हाणी होगी ॥

सुत की गाय रम्भाई बन में घर की ओर लखावण लागी ।
पन्छी डार चली जङ्गल से नीड़ पै शोर मचावण लागी ॥
काम छोड़ कै जननी घर में सोते पूत जगावण लागी ॥
घोड़े हींसें खड़े थान पै चिङ्घाड़े गज शेर ॥२॥
मिट्टी में मिली जब मिट्टी काँप गया सारा थल ।
पर्वतों के झरने रुक गये गङ्गा जी में कोलाहल ॥
ज्वालामुखी फाटन लागे समुद्र में उफन गया जल ॥
धर्म का धुरन्धर मरग्या मामूली सी बात नहीं ।
भारी बोझ धारती पर झेले उत्पात नहीं ॥
पापों को भी झेले सै पर झेलै उत्पात नहीं ॥
बज्जर के भी दिल फाटे थे हुआ पड़ा शेर का ढ़ेर ॥३॥
नागों में खिलाले चाहे सिंह से लंडा ले राम ।
अम्बर से पटक दे चाहे तेग पै नचा ले राम ॥
गएर की गुलामी बुरी रहम कर बचा ले राम ॥
सङ्खिया से बच जा चाहे ईश्वर का बदल जा नैम ।
चन्दा चाहे अग्नि उगले होनी भूले अपना टैम ॥
नीच का सुभा ना बदले जागता ना उसका प्रेम ॥
गुरशरणदास खल धन के भूखे उन्हें ना ममता मेर ॥४॥

तर्जः देहाती

जोर गरीबी ते घट गया बल भूल गये मृगराज,
समाधी ले गये शिव गौरा ॥टेक॥
तुम्हें तो राजकरन का चाव, दुखाते दुखियारी का घाव ॥
न्याय जुल्म का छटग्या फल देवे पलक निवाज रहे सै,
पल पल का ब्यौरा ॥१॥
मालिक कागा हंस ताल का भाँडा फूटा थारी चाल का ॥
काल का फन्दा बट गया घालै कर अन्दाज समय पै,
मौत करेगी दौरा ॥२॥
तुम जीते मैं हारी बाजी पूत का खून चाट लिया ताजी ॥
काजी का ऋण था सो पट गया कल खून पै ले लिया ब्याज मेरा सुत,
चैन की नींद सोरा ॥३॥
गुरशरणदास कहे बैठ गया गम बिखर गये जीव के शबनम ॥
जखम दुखा झट फट गया दिल छोड़ के जग का साज,
स्वर्ग में जा झूली कौरा ॥४॥

तर्जः देहाती चौकलिया

गङ्गा जी के घाट पहुँचगे एक फूल के दो माली ।
कली फटी गुल खिल जाता पर दुश्मन ने काटी डाली ॥टेक॥
तन का दूध पिला सींचा न्यूँ माँ की आत्मा करहा रही ।
आँखन ते आँसुन की झड़ी जण गम का झण्डा फहरा रही ॥
मेरा पूत धर्म की भेंट चढ़ा खड़ी घाट पै माँ थरथरा रही ।
माँ बेटे की राख सिलावे होनी जामा पहरा रही ॥
ले गङ्गे तू राजी रह तनै सुत की हड्डी मँगवा ली ॥१॥
धर छाती पै शिला फैंक दिये हाड़ मेरा सुत लै गङ्गा ।
मैं रह लूँ निर्भाग जगत में तू हीं मना लें जय गङ्गा ॥

अमरसिँह राठौर

॥ दोहा ॥

सत्य सिन्धु कृपा भवन, जगपति दीनानाथ ।
मुझ गरीब की ओर भी, तनिक बढ़ाओ हाथ ॥
लीला ललित रमेश की, का समझूँ मति पोच ।
काम क्रोध मद लोभ की हिरदे लगी खरोच ॥
मैं वो सब कुछ कर रहा, जो तुम लिखा लिलार ।
बेबस बन्धन कारणे करता गुनाह गरीब ॥
सुनते हैं परमात्मा, रहता बहुत करीब ।
फिर भी तू पाता नहीं, तेरी चाल अजीब ॥
उम्मीदों को जन्म दे, भेज दिया इस ओर ।
फिर दामन रीता पड़ा तुम गरीब के चोर ॥
आज फैसला हो गया समझ प्रभू मन माँहि ।
दामन भर या नाट जा, मैं इस काबिल नाहि ॥
आज द्वार छोड़ूँ नहीं, जब लगि बनै ना बात ।
बहुत दिना देखत रहा, हाथी के ये दाँत ॥
धन माँगे दानव मनुज, बण माँगे दुर्वेष ।
रण माँगे भट बाँकुरे, चाहत भूमि नरेश ॥
गुरशरणदास बस माँगता बुद्धि विशद विशाल ।
सभी सृष्टि में शान्ति हो देओ दीनदयाल ॥

भूमिका

॥ दोहा ॥

गुरु गोविँद दोनों सुमर, लिखूँ अमर राठौर ।
श्रोता गुण को लीजिए, अवगुण मेरी ओर ॥
भारत में होते रहे, बाँके वीर अनेक ।
कवि गाथा वर्णन करैं इतिहासों में देख ॥
शाहजहाँ का राज था, भारत के दरम्यान ।
शहर आगरे में बनी रजधानी सुल्तान ॥
सेना पति अनेक थे भारतीय रजपूत ।
शहँशाह के हाथ ये करते थे मजबूत ॥
अमरसिँह राठौर था जबरे सिपह सलार ।
जहाँपनाह के साथ वो बैठे था दरबार ॥
साला शाहेजहान का शेख सलावत खान ।
ये चाहता राठौर का हो जाना नुकसान ॥
अमरसिँह को मिल गया खितबा शेरे हिन्द ।
इसी वजह से खान की रही बोलती बन्द ॥
पत्नी श्री राठौर की हुई हवाले काल ।
दूजा शादी कर लई बूँदी से तत्काल ॥
गौना करने के लिए दिन आया नजदीक ।
छुट्टी लेने के लिए गये समय पर ठीक ॥
शाहजहाँ कहने लगे सुनो अमर राठौर ।
मैं चाहता था आपसे काम जरूरी और ॥
गौना भी करना पड़े बड़ी जरूरी बात ।
पर तुम केवल खर्चनां गौनें में दिन सात ॥
सात दिना से अधिक जो आप करोगे ऐश ।
जुर्माना एक लाख हो एक दिना का कैश ॥
यही शर्त शहँशाह की ठाकुर करी कबूल ।
गौना कर वापिस फिरा जैसा जाति वसूल ॥
मार्ग में इनको पड़ा जङ्गल बियाबान ।
इत्तफाक से मिल गया नरशह बाज पठान ॥
नरशहबाज पठान भी था एक सिपह सलार ।

हाथ उठा कहने लगा रुक राही मेरे यार ॥
जहाँ खुदा के वास्ते कर विनती अख्त्यार ॥
अमरसिँह तब रुक गया सुन उसकी आवाज ।
मुश्किल सुन नजदीक तक आया नरशहबाज ॥
यार मुझे पानी पिला हुए लबों पै प्राण ।
जीवन भर भूलूँ नहीं मैं तेरा एहसान ॥
खुर्ज खोल राठौर ने एक कटोरा नीर ।
प्याया नरशहबाज को जुर्रत हुआ शरीर ॥
हाथ मिलाया प्यार से तीन बार कह यार ।
हाँडी रानी कर गवाह कीन्हा कौल करार ॥

तर्ज़ः

पानी पी सन्तोष मिला और हिरदे का बुझगा शोला ।
हाथ मिला राठौर शेर ते नरशहबाज मियाँ बोला ॥टेक॥
कहाँ तक करुँ बड़ाई तेरी कुछ ताकत ना मेरी वाणी में ।
मिला खुदा का वजन मुझे तेरे एक कटोरा पानी में ॥
काया अर्पण करी तुझे मेरा साजा के जिन्दगानी में ।
जहाँ पसीना गिरे तेरा मैं खून देऊँ कुर्बानी में ॥
इस स्वार्थ की रजधानी में तू है हातिमताई मौला ॥१॥
काश मरूँ तुझसे पहले दुख जन्नत द्वार खड़ा सहूँगा ।
बनूँ चमन में फूल कहीं तेरी गैल जनाजे पै रहूँगा ॥
यार की विपत मुझे लिख दे मैं कलम खुदा की भी गहूँगा ।
हूँ इसका एहसान ऋणी ये बोल कयामत तक कहुँगा ॥
कह दूँगा तुम मौत दई मेरे यार ने फिर अमृत घाला ॥२॥
खुदा का कारिन्दा कभी एहसान फरोस नहीं होता ।
वफा नशीला जाम मगर बन्दा बेहोश नहीं होता ॥
यार मार करने से जिसे दिल में अफसोस नहीं होता ।
खुदा हुक्म कर देओ कतल कातिल को दोष नहीं होता ॥
पव खामोश नहीं होता जहाँ जुल्म मौत ने मुँह खोला ॥३॥
गुरशरणदास कह पाग बदल मेरे दिल के बीच अमन होवे ।
आदबर्ज सलाम करूँ तेरा भी वीर नमन होवे ॥
पगड़ी पलटी यार बने दोनों गुलजार चमन होवे ।
जिन्दे पै ये पाग बने मरगे तो यही कफन होवे ॥
साफा गैल दफन हो जब मैयत में उतरे डोला ॥४॥

॥ सवैया ॥

यार सुनो सच बात मुझे अब मौत जिबह करने को चली ।
तकसीम हुई तरकीब गुमी सब जीवन की बुनियाद हली ॥
दिल जाम हुआ सब होश खुवा खञ्जर सी लगी कुल कुन्द कली ।
सर्वेष दिली तुम यार मिले अल्लाह करे तेरे साथ भली ॥
आज करूँ फरमान इमान की किये सबाब रहो या जरो ।
जहाँ नैक पसेऊ गिरे मेरे यार का खून लबालब कुण्ड भरो ॥
थामले पाग तू अपनी दे एक साथ जियो एक साथ मरो ।
काह कौल सही अल्ला की कसम तुम यार यकीन करो न करो ॥
ठाकुर की ठकुराई तबै सुन यार की बात को बोल उठी ।
हम यार हुए पगड़ी पलटी रजपूति बिसात को बोल उठी ॥
धन्य हो यार विचार भला सब देव जमात को बोल उठी ।
भगवान की जोत रिझाय गई अल्लाह की हिमात को बोल उठी ॥

॥ दोहा ॥

करी कौल करार यों खुश हो दोनों यार ।
अपने मारग बँट गये घोड़े पर असवार ॥
नौमहले में आ गये अमरसिँह रजपूत ।
इनके सर पर चढ़ गया कामदेव का भूत ॥
आप युवा नारी नई, बोतल भरी शराब ।
धन का बल का घमँड था इनको बहुत जनाब ॥
एक दिना छत महल पर बैठे रानी साथ ।
पूर्णिमा के चाँद ने तभी सजाई रात ॥
पहले देखा चाँद को फिर देखी निज नार ।
खूबसूरती होड़ में करी चाँद की हार ॥

तर्जः

आसमान पै चन्दा बैठा तेरी बराबर है ना ।
मान लिया सुथरा चन्द्रमा पर सूना बिन नैना ॥
बोलो है ना ॥टेक॥
चन्द्रमा में दाग लगा है भारी दुखी बिचारा ।
शरमा रहा निशाकर तुमसे देख सिँदूर तुम्हारा ॥
तेरा हि रूप मिलेगा, ये दिन में नहीं खिलेगा,
देख तेरी मुस्कान पराजित ये तारों की सेना ॥१॥
नील गगन में बहका मौसम हो बेहोश रहा है ।
अमर के पास रति क्यूँ आई कर िफसोस रहा है ॥
हो खामोश रहा है, ये मुझको कोश रहा है,
पायल को सुन सारँग भूला मदन दुन्दुभी देना ॥२॥
सुघड़ नीड़ का लोभ करो मत कब पञ्छी उड़ जाये ।
ये मारग बेखबर सफर है कब रस्ता मुड़ जाये ॥
आये एक समय सुहानी तेरी मेरी रहे कहानी,
पिञ्जर बिखर उडेगा तोता वहाँ हवा में मैना ॥३॥
गुरशरणदास कर गौर भागमल ये दुनिया छल भारी ।
रह सकता है सुखी जगत में सन्तोषी ब्रह्मचारी ॥
म्हारी शिक्षा सुखी करेगी, रग रग में जाम भरेगी,
मारी मौत सवारी हरफ पत्थर पै लिख लेना ॥४॥

॥ दोहा ॥

रानी और राठौर का यों ही पनप गया प्यार ।
चौदह दिन तक ना गया अमर सिँह दरबार ॥
चुगली का मौका मिला शेख सलामत खान ।
गये गिनानर हाजरी जहाँ बैठे सुल्तान ॥
शेख सलावत कह रहे करो शहँशाह गौर ।
सात दिना की हाजरी खो बैठा राठौर ॥
परवाने भेजे कई नहीं करता परवाह ।
सरकारी कानून से है काफी गुमराह ॥
करो जल्द हाजिर उसे देओ सख्त आदेश ।
जुर्माना दाखिल करै रकम रकम कर पेश ॥
शाहँशाह कहने सुनो सलावत खान ।
जुर्माने का मत करो तुम उस पर ऐलान ॥
खान तड़फ कर कह उठे कागज फैंको फाड़ ।
हिन्द जिंल्द कानून को समझ लिया खिलवाड़ ॥
आम शख्स हरकत यही करन लगेगा रोज ।
काम छोड़ सरकार का सभी उड़ाये मौज ॥
अगर यूँ ही कानून का उड़ता रहे मजाक ।
हिन्दे तख्ते ताज ये मिल जायेगा खाक ॥
फिर समझाकर खान को कहन लगे सुलतान ।
पहले मेरी बात को समझो धर के ध्यान ॥

जबाब बादशाह का

तर्ज़ः

अमरसिँह है क्षत्री जात जुर्माने की सुन के बात, दहक जागा गात उसका मानिये।
जख्म ते दलखते सिँह पै निशाना ना तानिये ॥टेक॥
एक तौ कड़कती चढ़ती ससकती जवानी है ।
बोलते पपैया कोुल समय भी रुहानी है ॥
रानी है दिवानी आई शरबती सजीली स्याही, आँखों में कसक सी लाई जानिये ॥१॥
भट है सुभट है बाँका बहादुर दिलावर है ।
बाजुवों में बज्जर दिल में हाथियों का पावर है ॥
जाहिर है मिजाज तेज पलक में दे जन्नत भेज, हिन्दुओं से पैज मत ना ठानिये ॥२॥
परवाना दो भेज कासिद यहीं बोल लावेगा ।
कानूनी उल्लङ्घन गलती आप मान जावेगा ॥
आवेगा लजाता घर ते क्षत्री गुनाह ते डरते, गादला ना पिया करते छानिये ॥३॥
गुरशरणदास कहे अकल में अँधेर है ।
जुर्माना कुदरती इन पै समझने में फेर है ॥
शेर पिञ्जरे में छल तै डरै नहीं थारे बल तै, खुद नै अकल तै तू पिछानिये ॥४॥

॥ शेर ॥

नहीं लगती खलक शाह की जहाँ बात ये अच्छी,
कतल कानून का करके कुफर सोता जमाना है ।
बसय्यत हिन्द की तुम पर खुदा की ये अमानत है,
नजीकी ताल्लुकायत में धरोहर लुटाना है ॥

जबाब सलावत खान का

तर्जः

सुनके शहँशाह की बात सलावत, करने लगा इस्लामी वकालत ।
होगी भारी भीड़ शोर ते गूँजी अदालत ॥टेक॥
मुस्लिम कुल बुजदिले बता के करो बेईमानी ।
हिन्दु की खास तरफ सानी दिखा रहे आग और पानी ॥
अमरसिँह क्या बबर जबर रूस्तमी फरिस्ता है ।
क्या उससे गहरा रिश्ता है जिगर में वो ही बसता है ॥
रस्ता दिखा रहे जहरी जलालत, फेर करेगा हर शख्स शिकायत, होगी...॥१॥
बादशाह की कलम पै फर्द पै एक बार चलती ।
शियासत सब्ज फूल फलती लौटना बहुत बड़ी गलती ॥
शहँशाह का तख्त इजाजत अल्लाह की होती ।
हुकूमत हाकिम की ज्योती खाँ में खाँ क्यूँ तबियत रोती ॥
होती हैं होनी सदा सृष्टि कयामत, आप करोगे उनकी कितनी हिफाजत, होगी...॥२॥
आप बजरिये हुक्म भेजते नित के परवाने ।
न आता सूरत दिखलाने काम सब करता मनमाने ॥
शौरे पुस्त कमाल है माहिर गुनाह कुराफाती ।
समझ में बात नहीं आती असर है कुछ ल्याती जाती ॥
छाती दुखाना सबकी करना खिजालत, करता फना हैं रेल में सबको हिमायत, होगी...॥३॥
किया बड़ा मजबूर बादशाह बहस बहुत करके ।
तख्त पै इस्तीफा फरके तलब का रुकसाना भरके ॥
गुरशरणदास दिया भेज रामसिँह दिया परवाना ।
सोचता ऐसे मर्दाना चुका दूँ सारा जुर्माना ॥
मस्ताना बाबू सोचे भगवत की इनायत, भागमल न्यूँ बोला लेओ गुरु की इजाजत, होगी...॥४॥

॥ दोहा ॥

लिये घेर कानून से शहँशाह मजबूर ।
हुक्म रामसिंह को दिया करके तेज गुरूर ॥
लिया बुला राठौर को जुर्माना भी साथ ।
वरना उसका जेल में सड़ा करेगा गात ॥
रामसिँह फौरन चला था हृदय में जोश ।
चचा जाने क्या कहेंगे रहा वीर खामोश ॥
आधी रात करीब थी रामसिँह गढ़ द्वार ।
खोल गेट भीतर गया जगा लिया सरदार ॥
सारी गाथा कह दई जो बीती दरबार ।
अमरसिँह ने उसी दम उठा लई तलवार ॥
हाथ जोड़ रानी कही सुनो प्राण के नाथ ।
अब जानां नहीं ठीक है तुम जाना परभात ॥
क्रोध दाब कर थम गया अमरसिँह राठौर ।
रामसिँह को छोड़कर चल दिया होते हि भोर ॥
अर्ज अदब किंये बिना मय घोड़े असवार ।
नङ्गा खञ्जर तान कर खड़ा शेरं दरबार ॥
जब देखा राठौर को भूलं गये औसान ।
हिम्मत कर कहने लगा शेख सलावत खान ॥
शहँशाह तुम देख लो इसका सख्त मिजाज ।
किये इरादे ये खड़ा फना करेगा आज ॥
खुली तेग से सामंने आया है बदकार ।
लाड़ लड़ा बैठायलो जब इसको सरकार ॥
अमंरसिँह की हरकते अखर गई सुलतान ।
बोले जुर्माना तलब जल्द करो तुम खान ॥
बे अदबी इसने करी हर हरकत नापाक ।
जुर्माना इस पर बढ़ा और भी आधा लाख ॥
हुकम मिला जब खांन का बोला त्यौरी तान ।
ओ बेहूदा बेअकल जुर्म करो भुगतान ॥
सुनकर उसकी बात को बोला अमर जवान ।
जीभ खैंच लेऊँ तेरी शेख सलावत खान ॥
अमरसिँह ने मार दी शेख कण्ठ तलवार ।

कतल शेख को देख भाग उठा दरबार ॥
अमरसिँह के तहस से घबरा गये सुलतान ।
तखत छोड़कर जा छिपे महलों के दरम्यान ॥
बेगम का भाई मरा हो गया दुक्ख अपार ।
फेर भिड़ा सेना दई खूब हुई तकरार ॥
फिर भीं बाजी जीतगे अमरसिँह बलवान ।
नौमहले को आ गये दे ग का ऐलान ॥
शाहजहाँ ने जोड़ कर फेर किया दरबार ।
अमरसिँह के नुकंस पर किया गौर विचार ॥
बीड़ा गेरा मेज पर यों बोले सुलतान ।
गिरंफ्तार करे राठौर को है कोई बलवान ॥
बारह गाँव इनाम दूँ अफसर का अधिकार ।
सुन राठौर नाम को चुप होगे सरदार ॥
पहला साला अमर का था एक अर्जुन गौड़ ।
सुनकर नाम इनाम का बीड़ा ठाया दौड़ ॥
बीड़ा को खाकर चला नौमंहले की ओर ।
सोंचा वो किस तरह से गिरफ्तार होय राठौर ॥
लड़ना तो बसकी नहीं ले लेवेगा जान ।
धोंखे से पकड़ूँ उसे यों सोचा बेईमान ॥
ऐसे सोच विचार में गया महल दरम्यान ।
हाथ जोड़ कहने लगा सुनो हिन्द बलवान ॥
शेख सलांवत मारकर तुम्ह कीन्हा बड़ काम ।
हिन्दुन से दबने लगे तब से मियाँ तमाम ॥
अदब फैसला चाह रे तुमसे जब सुलतान ।
गौर करो फरमान पर शेरे हिन्दुस्तान ॥
सुनकर अर्जुन गौड़ की भभक गया रजपूत ।
मुझे लगै तेरी अकंल को दबा रहा कोई भूत ॥
बिगड़ बात बनती नहीं रजपूतों की आन ।
यो तो हम कायम रहे ना रहवैं सुलतान ॥
जीत जीत गढ़ देश के दिये उन्हीं को सौंप ।
जुर्माना और जेल का हमें दिखावै खौफ ॥
तू भी अर्जुन जाय कै हो जा उनकी ओर ।
हम भारत के सिँह हैं यों बोले राठौर ॥

तर्जः दिल कहे रुक जा रे रुक जा

यमराज फरद पै तू लिख दे चाहे मौत को अभी।
ये शेर इस तरहा ना झुकेंगे कभी ॥टेक॥
हम उस देश के वासी हैं जहाँ गङ्गा जी का नीर,
नित कल कल लरजे ।
तुम जैसे हैवानों ने लिया खैंच सती का चीर,
जब कृष्ण गरजे ॥
वर्दों के हर्जे, कभी तुले ना नर्जे, जो जीव जगत गुलसर्जे, वा जाँगे सभी ॥१॥
रामचन्द्र मर्याद बाँधते वन में फिरे निशङ्क,
जब सिया चुराई ।
हनुमान दिये भेज अकेले खाक बनाई लङ्क,
जग कीरत छाई ॥
है धर्म दवाई, मरकर भी भलाई, लाख कथा फुलवाई, इसी धरती में दबी ॥२॥
परशुराम से गुरु यहाँ पर जिनका जग में शोर,
चली तेग दुधारी ।
हम तुमसे घबरारे कब तुम नीच धर्म के चोर,
और धर्म के हारी ॥
ये धजा हमारी, वर्षों से बता री, यहाँ दिखा सका ना कोई, करिश्मा नबी ॥३॥
गुरशरणदास कवि लोग लिखेंगे कर कर के चतुराई,
म्हारा यश लहराये ।
यहाँ भागमल से हिन्दू अल्लाह के भी देय गवाही,
चाहे धड कट जाये ॥
हम ना घबराये, कर जो तू चाहे, ये स्वर्ग तलक टकराये, इन छन्दों की छवी ॥४॥

॥ दोहा ॥

अमरसिँह की बात से अर्जुन हुए निराश ।
छली निकम्मा नीच चल पहुँचा रानी पास ॥
ईश्वर, गङ्गा, पुत्र की खाई कसम अनेक ।
हाँडी रानी को लगा अर्जुन भाई नेक ॥
बुला लिया राठौर को रानी ने निज पास ।
अर्जुन को भेजो मती करके कती निराश ॥
हाँडी रानी ने किया अमरसिँह मजबूर ।
राजीनामा लिखन को शर्त करी मञ्जूर ॥
सुन ले अर्जुन गौड़ तू कान खोल कर बात ।
अदब नहीं पहले करूँ मैं क्षत्री की जात ॥
हाथ जोड़ कहने लगे उनसे अर्जुन गौड़ ।
एक शर्त मेरी सुनो अमरसिँह राठौर ॥
सभी शर्त मञ्जूर हैं उनको सर सरदार ।
खञ्जर लेकर साथ में मत जाना दरबार ॥
कर शर्तें मञ्जूर सब हुआ चलन को त्यार ।
छींक सामने से हुई असगुन हुए अपार ॥
होते असगुन देखकर रानी गई घबराय ।
अलग बुलाकर पति को कहन लगी समझाय ॥
पिया कती जाओ मती आज आप दरबार ।
असगुन होते देखकर हैरात हुई अपार ॥
अमरसिँह कहने लगा क्यूँ घबराई नार ।
असगुन को माने नहीं सिँह और सरदार ॥
रानी फिर कहने लगी करके जिया उदार ।
काम आयेगी वक्त पर रख लो यह कटार ॥
गुप्त कटारी फैंट में दबा लई बलवान ।
घोड़ों पर चढ़ के चले अर्जुन अमर जवान ॥
खिड़के के द्वारे गया लेकर अर्जुन गौड़ ।
चकित हुआ कहने लगा अमरसिँह राठौर ॥
क्यों बे अर्जुन गौड़ तू क्यूँ आया इस द्वार ।

शीश झुका कर ना धसूँ राठौरी सरदार ॥
अर्जुन तब खुश हो गया होनहार बलवान ।
पैरों से धसने लगा अमरसिँह नादान ॥
अर्जुन को मौका मिला मारा खञ्जर खींच ।
छुटा फुवारा खून का हुई रेत में कीच ॥
मरते मरते अमर को पड़ी कटारी हाथ ।
मारी तान सँभाल कर झट अर्जुन के गात ॥
चली कटारी घूमती काटी शठ की नाक ।
पड़ पत्थर बोली जुल्म टूट हुई दो फाँक ॥
अर्जुन मुँह दुबकाय कर पहुँच गया दरबार ।
बोला लड़कर मर गया अमरसिँह सरकार ॥
धरी हुई है ल्हाश अब खिड़की दरम्यान ।
सुनकर झूँठी बात को गर्ज उठे सुलतान ॥
दिया हुकुम तब पुलिस को लई हथकड़ी गेर ।
ले अर्जुन को आ गये जहाँ शेर का ढ़ेर ॥
देख अमर की ल्हाश को घबरा गये सुलतान ।
दहाड़ मार रोने लगे क्या किया बेईमान ॥

जबाब बादशाह का

तर्जः आसमान तक गूँज गया

दहल गया दिल बादशाह का देख ल्हाश की ढेरी को ।
जालिम तूने खपा दिया क्यूँ धोखे ते केहरी को ॥टेक॥
अमरसिँह की बहादुरी पर नाज हिन्द रखती थी ।
शहे तख्त पर इसके बल से ताज हिन्द रखती थी ॥
गैर मुल्क के जलसों में जाबाज हिन्द रखता था ।
बन्दा में शेर भी होते हैं अन्दाज हिन्द रखता था ॥
आज हुआ मौहताज हिन्द सिजदा है तेग तेरी को ॥१॥
शीरत में नहीं दीख रहा कोई वीर तेरी सानी का ।
छीन लिया सिन्दूर आज हम बे मौसम रानी का ॥
तवारीख रोयेगी हिन्द की जिकर तेरी कहानी का ।
पक्षपात से तोड़ दिया था हीरा रजधानी का ॥
कोसेगा इतिहास अन्त तक इस सियासत मेरी को ॥२॥
नहीं जानता था अर्जुन गद्दार कौम घाती है ।
भूल हुई मजबूर खड़ा गरदन झुकी जाती है ॥
ल्हाश देखकर फटी नहीं ये पत्थर की छाती है ।
इन्साफ कफन में गुमा गुनार की दहशत आती है ॥
माफ नहीं कर सकै खुदा इस नादानी मेरी को ॥३॥
शाबास अमर राठौर आज तुझे मौत मार रोती है ।
वफादार बन्दों को जीत सदा मर मर कर होती है ॥
दिल हिल जाता धरती का जब कोई शेर खोती है ।
खुदा नूर में मिल जाती तुम शहीदों की ज्योती है ॥
गुरशरणदास दिया मिटा लोभ ने भारत प्रहरी को ॥४॥

॥ दोहा ॥

बादशाह कहने लगे दिया नीच ने कहर ।
अर्जुन को करके नगन जल्द घुमाओ शहर ॥
उठा ल्हाश को ले गये शहँशाह दरबार ।
अब क्या होना चाहिए करने लगे विचार ॥
दफनाने का बाहना करना है मजबूत ।
इसी बात पर लड़ेंगे गोल बाँध रजपूत ॥
जो ले जाये ल्हाश को करके भुज बल जोर ।
उसको ही अफसर करूँ अमरसिँह की ठौर ॥
जो इतनी हिम्मत कोई कर नहीं सका जवान ।
सती कराऊँ स्वयम् मैं ये सोची सुल्तान ॥
यही खबर शहँशाह ने दी नौमहले भेज ।
रामसिँह घबरा गया पढ़कर दस्तावेज ॥
चाचा का मरना सुना कैसे धारे धीर ।
नाश वंश का हो गया खिँची एक तस्वीर ॥
रामसिँह कहने लगा कर मन में सन्तोष ।
चाची मत घबराय तू हुई जो होनी होय ।
ल्हाश लाऊँ दरबार से अज्ञा दे दे मोय ॥

तर्जः आजा जाने वाले

होता है जो होने वाला होके रहेगा, कर्म का तगाजा सबको भोगना पड़ेगा,
भोगे जा जन्म दुखियां ॥टेक॥
पापी वही है जो विष भरता है ।
होके पछताके वही मरता है ॥
जो धरता है जुल्म गठिया ॥१॥
कैरवों का किया हुआ नजरों में आया ।
पर्दे का पाप कोई छुपे ना छुपाया ॥
ये माया है बड़ी कुफिया ॥२॥
ईर्ष्या मनुष के मान को गिरा दे ।
देवता गरीबों को अपना बनाते ॥
बेखुदी में है जो किसी को सताते ॥
वे जाते हैं इसी बटिया ॥३॥
गुरशरणदास काल मुनका पिरोता ।
गिरता वही जो आसमाँ में सोता ॥
होता है कर्म मुखिया ॥४॥

॥ दोहा ॥

रानी फिर कहने लगी तू बालक रणघोर ।
तेरे बसकी है नहीं उन यवनों से जोर ॥
भल्लू तेरा चचा है दे परवाना भेज ।
शायद वो इस जङ्ग को लेवेंगे अङ्ग्रेज ॥
रामसिँह चिट्ठी लिखी भेजी भल्लू पास ।
अनुचर ले करके गया भल्लू के घर खास ॥
भल्लु ने चिट्ठी पढी दीना कागज फाड़ ।
रामसिँह के दूत को दीन्ही बहुत लताड़ ॥
भल्लु की सुनकर खबर हो गये बहुत निराश ।
रामसिँह से कह रही रानी अति उदास ॥
उमर तेरी नादान है कैसे भेजूँ तोय ।
पिया कबर के साथ ही दफन करा दे मोय ॥
रामसिँह कहने लगा भर जामे में जोर ।
दफनाने की राय दे बड़ी धर्म की चोर ॥
हाथ जोड़ कहने लगी सुन बेटे धर ध्यान ।
तेरे चचा का यार है नरशहबाज पठान ॥
उसको तू खत भेज दे करके अदब सलाम ।
आपत्ति में शाद वो आ सकता है काम ॥
बहुत कही तब मान ली रामसिँह ने बात ।
रानी ने खत लिख दिया लेकर कलम दवात ॥
खत पहुँचा राठौर का पढ़ने लगा पठान ।
ये क्या करने पर तुला मूरख शाहजहान ॥
साँप छछुन्दर की गति हो गये नरशहबाज ।
नबी रसूल फरजन्द वहाँ लगा रहा अन्दाज ॥
नबी रसूल पूछन लगा क्या है अब्बा जान ।
खत को पढ कर क्यूँ हुए तुम इतने हैरान ॥
दास्तान निज पुत्र से कहदी सभी पठान ।
कायरता लख बाप की बोला त्यौरी तान ॥

जबाब नबी रसूल

तर्जः कान छेदनी कर्द

आदत है इन्सान की दाता बनता है इकरारों का ।
मगर मुझे अफसोस वक्त पर दिल दहलाये यारों का ॥टेक॥
आब पिलाकर बचा लिया जब मोत के खड़े कगार थे तुम ।
अमरसिँह की हर आफत के उस दिन ठेकेदार थे तुम ॥
जब तक उन पर कुफर ना आया तब तक तो बड़े यार थे तुम ।
एहसान को सिजदा करते थे मजहबी बड़े वफादार थे तुम ॥
अब कह दोगे वार कौल में जिकर नहीं तलवारों का ॥१॥
कहर वक्त में जो बन्दा ईमान का सौदा करता है ।
दफन करे उस वायदे को इसलाम पै खञ्जर धरता है ॥
यारों की आत्मा को देखो जब इन पर कहर गुजरता है ।
वायदों की तकसीम देख अल्लाह कह आहें भरता है ॥
इम्तहान वक्त में क्या होगा इन इकरारी कलाकारों का ॥२॥
बने हल्फिया यार अमर के गोर से अब्बा जान सुनो ।
परवाना लेकर आया है यारों का ईमान सुनो ॥
इस्लाम वसूलो ने जकड़ा है आपका अब गिरेबान सुनो ।
तुम्हें है लाजिम यही किं हक में हो जाओ कुर्बान सुनो ॥
खञ्जर की धार पै धर जाओ गुलदस्ता ऐश बहारों का ॥३॥
जान हमारी वसीयत ना ये यार की या अल्लाह की है ।
खुदा वास्ते काम करैं हमें शोक नहीं परवाह की है ॥
ईमान की शन बचाने में खौफ नहीं शहँशाह की है ।
आप छिपो बुरके में भले मेरी त्यारी तो उस राह की है ॥
गुरशरणदास कह फर्ज फिदा को डर कैसा अङ्गारों का ॥४॥

॥ दोहा ॥

आप चलो या ना चलो मैं जाता हूँ आज ।
हैवानी सुलतान की करदूँ ठीक मिजाज ॥
सुन बेटे की बात को नरशहबाज पठान ।
लिख इस्तीफा दे दिया मान लिया सुल्तान ॥
लेकर अपनी फौज को चल दिये बाप शिताब ।
रामसिँह को धीर दे दीन्ही सेना दाब ॥
बादशाह ने उधर से भेजी फौज अपार ।
घोर जङ्ग करने लगे ये यारों के यार ॥
नरशहबाज पठान ने हुलिया कर दिया भङ्ग ।
मुगल फौज भागन लगी छोड छोड़ कर जङ्ग ॥
जब जानी सुल्तान ने छींने ल्हाश पठान ।
एक साथ मएदान में भेजे सात जवान ॥
घेर लिया सब ओर से नरशहबाज पठान ।
आखिर अपने यार पर करी जान कुर्बान ॥
दम तोड़ा शहबाज ने लड़ते हो गई शाम ।
नबी रसूल वापिस गया रामसिँह के धाम ॥
मरना सुना पठान का दुख से भर गया गात ।
तब तक भल्लू आ गया सेना लेकर साथ ॥
समझाये धीरज दिया पहुँच गया मैदान ।
आखिर ये भी ल्हाश पर अन्त हुआ बलिदान ॥
भल्लू का मरना सुना बोला नबी रसूल ।
चलो रामसिँह जङ्ग में होगी खुदा कबूल ॥
बची हुई सेना लई किसना नाई साथ ।
तीनों पहुँचे जङ्ग में खूब दिखाये हाथ ॥

तर्जः बाढ़ी आरे की तेज बना दे धार

खञ्जर ते नर की होड़ लगी मैदान ॥टेक॥
खञ्जर खड्ग कटारी चल रही दमन तमञ्चा और तिरशूल ।
करे सफाया रामसिँह कटी सेना उड़ी हवा में धूल ॥
दल के दल बादल फट जा जिधर को मुड़ जा नबी रसूल ॥
खून की दरिया बही धरण पर कहीं पड़े ल्हाशों के ढेर ।
फर्ज का दर्जा ऊँचा करने झूले बड़े अनोखे शेर ॥
अपना और पराया भूले सबको थी इज्जत की मेर ॥
दोनों पक्ष दुहाई दे रहे ओ अल्लाह भगवान ॥१॥
मजहब की तकरार छिड़ी सबका ईमान कफन होगा ।
एक दल कहे फुकेगा शव और एक दल कहे दफन होगा ॥
हारेगी अनरीत सदा इन्साफ का सिद्ध सपन होगा ॥
नबी रसूल बहादुर किसना तीजा रामसिँह राठौर ।
पूर्व ते पच्छिम को रौंदैं दल को दिया कती झकझोर ॥
हा हा करके मुगली सेना भगने लगी किले की ओर ॥
पहुँच गये फाटक तक लड़ते दोनों दल के ज्वान ॥२॥
नबीरसूल ने तोड़ दिया फाटक हथिखाने में दे दई आग ।
हल्ला पड गया मैदानों से छिपने लगे घरों में भाग ॥
मन्दिर और मस्जिद में दुबके खाके जखम पीठ पै दाग ॥
अकबर दुर्मे पर खड़े बादशाह देख रहे ज्वानों के हाथ ।
मन में कर रहे सरहना साहब धन्य धन्य राठौरी जात ॥
नबीरसूल धन्य है तुमको देते हो यारों का साथ ॥
तानें मार रहे मुगलों को दुर्ग खड़े सुल्तान ॥३॥
नबीरसूल रामसिँह दोनों पहुँचे तख्त आजम के पास ।
रामसिँह ने आगे बढ़कर उठा लई चाचा ल्हाश ॥
जीत गया इन्साफ युद्ध को जय से गूँज उठा इतिहास ॥
रामसिँह आँसू भर लाया जोश में बोला नबी पठान ।
ल्हाश दफन करै थे तुम तो कैसे दुबक गये सुल्तान ॥
जाते हैं हम नौ महले को जीत यारों की शान ॥
गुरशरणदास कर त्यौर शेर का बोले शाहेजहान ॥४॥

॥ दोहा ॥

शाहजहाँ कहने लगे सुनो बात ये खास ।
अजमाने के वास्ते रखी अमर की ल्हाश ॥
धन्य तुम्हारी वीरता तुम वाकई बलवान ।
अमरसिँह शहबाज का तुम ले लो स्थान ॥
रानी को कर दो सती अमरसिँह के साथ ।
जितना खर्चा चाहिए लेओ हाथ के हाथ ॥
जङ्ग जीत दोनों कुँवर आ गये रानी पास ।
लाकर रख दी महल में अमरसिँह की ल्हाश ॥
जैसा भी लिक्खा हुआ हिन्दू वेद विधान ।
उसी तरह राठौर का सज गया अन्त विमान ॥
चिता में रानी बैठगी पीतम का सिर थाम ।
अगनी की गोदी चढ़ी पहुँच गई उसी धाम ॥

महाराणा प्रताप

॥ दोहा ॥

असत्यता, अकर्मता, अशिष्टता, विलासिता, अदूरता अशूर मध्य मूर्ख निवासिता।
कुवागिता कुरागिता कुमन्त्रणा कुशासिता, कुमित्र से विनाश होत वेद यों हि भाषता॥

तर्जः

सर ना झुकैं कभी कर ना थकैं जब तक कन्धों पै नाड़ रही ।
अग्नि से अनुराग तेरा तुझे नमन करूँ मेवाड़ मही ॥टेक॥
मारवाड़ महि राजस्थल पै खूनों के नाले देखे ।
कितने पत्थरों की छाती पै गढ़े हुए भाले देखे ॥
सती देवियाँ हुई हजारों घर पाखे काले देखे ।
अपनी माँ की शान की खातिर सुत मरने वाले देखे ॥
सहगामिन श्रृङ्गार नया सिन्दूर पुराना झाड़ रही ॥१॥
चित्तौड़ उदयपुर की धरती पै खवे छुले तलवारों से ।
धोया वह कलङ्क लगा जो देश द्रोहि गद्दारों से ॥
दग्ध हुए सीने दुश्मन के वक्र दृष्टि अङ्गारों से ।
मानसिँह के कर्ण पटल फट गये बुरी धिक्कारों से ॥
इतिहास का भूषण दृष्य वह जहाँ मौत खेल खिलवाड़ रही ॥२॥
मेवाड़ मही का राजपुत्र जब घुटनों के बल चलता है ।
किसमिश, दाख, चिरौंजी, तलवार के लिए मचलता है ॥
वीर वधू के उदरस्थल से नूतन रवी निकलता है ।
जगत भास्कर छिप जाता उसका ना शौर्य ढलता है ॥
जहाँ चन्दन वृक्ष उगा करते वहाँ उगे बेरियाँ झाड़ नहीं ॥३॥
मुगलों के दिये दाँत तोड़ उस वीर की गाथा गाता हूँ ।
मेवाड़ मही के कण कण के तासीर की गाथा गाता हूँ ॥
प्रण पक्का बल पुञ्ज हठी रणधीर की गाथा गाता हूँ ।
चेतक जैसे पशु यहाँ तकदीर की गाथा गाता हूँ ॥
गुरशरण कथा बलिदानों की कोई कर्कट कूड़ कबाड़ नहीं ॥४॥

तर्जः

भारत देश गुलाम हुआ, क्यूँ हुआ वजह बतलाउँ मैं ।
जितना आया समझ मेरी में, उतना ही समझाउँ मैं ॥टेक॥
धर्म का दामन छोड़ क्षत्री अभरम मे पाँ धरण लगे ।
खड़ी स्वयंवर में कंन्या को धोखा देके हरण लगे ॥
मन्दिर की तज दई आरती चन्द्रमुखी का करण लगे ।
गीदड़, गिद्ध, स्वान की तरियाँ रोज माँस नै चरण लगे ॥
तरण लगे कागज की नाव, बिन माँझी तर जाऊँ मैं ॥१॥
होगे जब रजपूत विलासी कई कई रानी रखते थे ।
देश की चिन्ता छोड़ सदा उनकी निगरानी रखते थे ॥
राम कृष्ण की कथा त्याग घर फोड़ कहानी रखते थे ।
तिरस्कार कर विद्वानों का मन्त्री अज्ञानी रखते थे ॥
इतनी नादानी करते थे जिन्हें कहते में सकुचाऊँ मैं ॥२॥
जेठा पुत्र बनै शासक ऐसी सुथरी मर्यादा थी ।
ये भी बन्धन तोड़ दिया सत्ता की लिप्सा ज्यादा थी ॥
मूछों पै पौरुष झलकै, मन की नीयत कुछ मादा थी ।
पिता की हत्या कर छीने सत्ता कितनी बकयादा थी ॥
हर जुल्म की चाह अमादा थी कर पाप भूप बन जाऊँ मैं ॥३॥
बन्दर हाथ उस्तरा आ गया उसकी नाक बचै कैसे ।
मिश्री जान कपास सटकले फिर आसान पचै कैसे ॥
अपनी आप पराजय सुनकर ताली शोर मचै कैसे ।
गुरशरण कलङ्कित गाथा पर कविता कोई कवि रचै कैसे ॥
रस भरा छन्द जचै कैसे लिखते में हाय शरमाऊँ मैं ॥४॥

॥ दोहा ॥

दारू ने तकदीर के दिल नाखूनों को चूट लिया ।
सोच हुआ बेटे ने बाप से छीन के प्याला घूँट लिया ॥

तर्जः

डूब जा सितारा बदले वक्त का मिजाज ।
बेलों की खनक में दब जा शेरों की आवाज ॥टेक॥
बनै औषधी जहर, जेवड़ी नाग बणै सै, यो चन्दा आग बणै सै ।
तिलक भी दाग बणै सै ॥
काग बणै छवि राजहंस नै त्याग दे समाज ॥१॥
उतरी आब चढ़ै ना समय का जब विस्फोट हो, तपे सोने में खोट हो ।
फूल की खूनी चोट हो ॥
ओट हो सियार सिँह की उतर जा लिहाज ॥२॥
मानसिँह की बुआ सिँहनी जोधाबाई थी, शाह अकबर को ब्याही थी ।
देश के माथे स्याही थी ॥
उन दिनों की आई गर्दिश खटकती है आज ॥३॥
गुरशरणदास कह मानसिँह दुम हलता स्वान था, नहीं गौरव का भान था ।
पतन का कुछ ना ध्यान था ॥
पान था वो खाके जिसको थूकना रिवाज ॥४॥

तर्जः

मुगल और रजपूतों में शुरु जङ्ग हो गया ।
जूझण लगे जवान प्रलय का ढङ्ग हो गया ॥टेक॥
रण घोष गूँज गया नभ में तलवार प्राण हरंती थी ।
मुगलों को भारती सेना बाघों की तरह चरती थी ॥
राणा की लौहित दृष्टि बिजली का काम करती थी ।
पड़ गई जिधर बैरी पै उसे प्राण दिये सरती थी ॥
पीत वरण धरती का रङ्ग अब लाल हो गया ॥१॥
उड़ा चेतक पवन गति से किया दमन मुगल जाती को ।
राणा की आँख ढूँढ री उस मानसिँह घाती को ॥
पड़ गया निगाह जा पकड़ा उस अकबर के साथी को ।
राणा का लक्ष्य चूक ग्या ले भगा मान हाथी को ॥
डर गया मौत आती को देख मति भङ्ग हो गया ॥२॥
थोड़ी रजपूती वाहिनी सेना सम्राट बड़ी थी ।
फिर भी रजपूती सेना शेरों की तरह लड़ी थी ॥
राणा घिर गये अचानक भारत की पोच घड़ी थी ।
तीरों से घायल चेतक राणा पै चोट पड़ी थी ॥
मौत खड़ी मुँह खोले छलनी अङ्ग हो गया ॥३॥
झाला ने देख्या राणा दुश्मन का बनेगा निशाना ।
लिया ताज ओढ राणा का किया सेनापति का बाना ॥
दुश्मन टूटे झाला पै राणा हो गया रवाना ।
गुरशरणदास झाला को मिला मौत की गोद ठिकाना ॥
झाला मरा बचा राणा दल दङ्ग हो गया ॥४॥

तर्जः

सीना खुला मार भाला तुम गोद गुलामी की टिकण लगे ।
भारत माँ ते कह दुँगा तेरे पुत दाम ते बिकण लगे ॥टेक॥
बिगड़ गया सद्धर्म तुम्हारा, खाक हुई थारे बल की ।
मिट्टी करी अशुद्ध पापियो भारत के सुन्दर थल की ॥
शक्ति सिँह करी खाक हैसियत तुमने माँ के आँचल की ।
गर्दन गिरी हिमालय की और कमर झुकी विन्ध्याचल की ॥
शुद्ध सुता गङ्गाजल सी जिन्हें बुरखे में तुण ढ़कण लगे ॥१॥
राणा मरा मुगल जीते तेरे कान बड़ाई को तरसेंगे ।
देश में मातम गूँजेगा मुगलों में व्यञ्जन परसेंगे ॥
दासी करें आरता तेरा नफरत के दिल बरषेंगे ।
मेरी चिता जलै चित्तौड कोट और दिल्ली में नर हरषेंगे ॥
तेरी जीत पै आँसू बरसेंगे मेरी हार पै आँसू फिकण लगे ॥२॥
खाली हाथ कठिन घायल मैं साधन ल्हैस तमाम है तू ।
मैं आजाद सिपाही हूँ मुगलों का एक गुलाम है तू ॥
मुझको झुकें बादशाह जैसे करता रोज सलाम है तू ।
मन्त्र हूँ मैं गायत्री का कलमा बिका कलाम है तू ॥
मैं राजपूत हराम है तू दुर्गन्ध झरोके झिकण लगे ॥३॥
शक्तिसिँह मुझे मार कै एक भाई का फर्ज पटा देना ।
मेरी और चेतक की लाश मुगलों से दूर हटा देना ॥
तुर्कों से मेरा अङ्ग छुआ कै मत ना पुण्य घटा देना ।
हम दोनों देश शहीदों को एक चिता के बीच लिटा देना ॥
इतिहास में नई छटा देना गुरशरणदास कवि लिखण लगे ॥४॥

तर्जः

वीरता भरी थी सचमुच राणा की पुकार में ।
शक्तिसिँह का हृदय भीगा आँसुओं की धार में ॥टेक॥
देश भक्ति जागी दोनों मेंवाड़ी ज्वानों में ।
शक्तिसिँह ने हटके गोली मार दी पठानों में ॥
देश के दिवानों ने तन डुबाया दुलार में ॥१॥
महाराणा ने गिरता भाई बाजुओं में ठाया था ।
शक्ति सिँह के घोड़े ने सर चेतक को झुकाया था ॥
हृदय डगमगाया था वो दीवा मजार में ॥२॥
तड़फता था चेतक मिट्टी खुर से उठाई थी ।
दोस्ती अखीरी धूली सर पै चढाई थी ॥
माथे पै लगाई थीं वो जीत बदली हार में ॥३॥
गुरशरणदास करवट सिँह भी बदलते हैं ।
बहादुर वही है जो नर गिर कै सँभलते हैं ॥
कायर न्यूँ बिलखते हैं क्या लिख दी लिलार में ॥४॥

तर्ज़ः

महाराणा लौट जा सङ्कट को ओट जा ।
ये वक्त तेरे इम्तहान का है हीरा तू हिन्दुस्तान का ॥टेक॥
झुक जायेंगे पर्वत तुझको रुक जायेंगे झरना ।
बढ़े चलो महाराज लीक में हमें रे सिखााओ मरना ॥
मैं भी सगा बेईमान का, दुश्मन हूँ मैं तेरी जान का ॥१॥
महाराणा मेवाड़ी तेरा बाजू कभी ना थकेगा ।
भाले की चोट को चेतक की वीरता देश ना भूल सकेगा ॥
सौभाग्य है मुझ शैतान का, हुआ दर्शन तुझ इन्सान का ॥२॥
वो आई मुगलों की सेना सावधान हो जाओ ।
बुा रहे हैं देश के पर्वत गोदी में गो जाओ ॥
कर सामना अब तूफान का, कर्तब है भारत ज्वान का ॥३॥
गुरशरणदास भारत वीरों के सद के कदम कदम को ।
धन्यवाद है चले गये जो देश सौंप के हमको ॥
जीवें तो जीवन शान का, न तो बनै खाक श्मसान का ॥४॥

तर्ज़ः

महाराणा जब लौट के आया, अङ्ग झाड़ कै लाड़ लड़ाया ।
तार कै साफा कफन उढ़ाया धरती हलती सी लगण लगी ॥टेक॥
मेले हर वर्ष जुड़ेंगे, समाधी पै रङ्ग गुलाल उड़ेंगे ॥
पेज मुड़ेंगे इतिहासों में, चेतक नाम रहे साँसों में ॥
जिकर छिड़ेगा उन ल्हाशों में जिनके कण्ठ में नगन लगी ॥१॥
लाल रङ्ग रवि हुए शाम के, देख रहे तुझे तुरग थाम के ॥
नाम पै दीपक जलते रहेंगे, जोत पै आँसू ढलते रहेंगे ॥
दुख में हाथ मसलते रहेंगे शक्ती सोते से जगन लगी ॥२॥
गङ्गा, जमुना, विन्ध्य, हिमाचल, मारवाड़, गुजरात वीर थल ।
सिन्ध सँभल तेरी करेंगे आरती, चेतक जन्मेगी और भारती ॥
भारत की ना तेग हारती नये नाहर रचन लगी ॥३॥
गुरशरणदास कवि होय हुनर से, जैसे चलती घड़ी फनर से ॥
सिँह समर ते, नाग जहर से, शोभा दे रजपूत वैर से ॥
जल सोहै जैसे तरँग लहर से, सोना निखरे जो अगन लगी ॥४॥

तर्ज़ः

उड़ जा रे ओ पञ्छी, दौड़ कै चितौड़ जा तू मेरे काम को,
साथी विजय धाम को ॥टेक॥
धाम की निशानी सुन ले, खोज में सुभीता होगी ।
किले की शिखा पै बैठी सत्य शिला सीता होगी ॥
दरवाजे पै जोत सदन में रामायण और गीता होगी ॥
नीलकण्ठ कठला गल में नौ कण्ठों के पहरे होंगे ।
भवानी से कथनी शङ्कर भैरवी की कहरे होंगे ॥
व्यास जैमिनी नारद के चित योगासन में ठहरे होंगे ॥
डट जा रे ओ पञ्छी सरोवर में पानी पीकर देख शाम को ॥१॥
वनवासी भगवान मिलेंगे भरत का मिलाप होगा ।
बाली का वध लखन मूर्छा रावण से रण आप होगा ॥
खम्भ फटा प्रहलाद बचा सब तस्वीरों में साफ होगा ॥
विन्ध्याचल कैलाश हिमालय गङ्गा जी की मूरत होगी ।
जमुना जल में साफ दीखती भारत माँ की सूरत होगी ॥
इसी स्थान पै रुकना पञ्छी आगे ना जरूरत होगी ॥
झुक जा रे ओ पञ्छी भारती के पग में झुक ले राम राम को ॥२॥
जन्म भूमि से न्यू कह साथी मैमनों में घिर गया बाघ ।
सूरज अन्धा हुआ धुँआ से हिमालय ने चरगी आग ॥
हार कहोगे महाराणा की या भारत का सोया भाग ॥
दाँये बाँये हाथ गात के अचम्भा है होगे दूर ।
एक गया बैरी के पक्ष में एक झुका नहीं यही कसूर ॥
राजी है तेरी हार बता माँ या कह दे राणा मजबूर ॥
समझा रे ओ पञ्छी रणवेदी पै चेतक चढ़ गया जीत लाभ को ॥३॥
गुलामी के बन्धन तोड़ू बढ़ुँगा रुकुँगा नहीं ।
बैरियों के सम्मुख तेरी सौगन्ध मैं झुकुँगा नहीं ॥
दिवाकर हूँ बादलों के अङ्ग में लुकुँगा नहीं ॥
गुरशरणदास कह भारत माँ तेरे स्तनों का पिया दूध ।
खून का खदकता कतरा शपथ है चुकाऊँ सूद ॥
गुलामी की दीवारों को दुआ दे मैं जाऊँ कूद ॥
थम जा रे ओ पञ्छी राम राम कहना मेरी सारे गाम को ॥४॥

तर्जः

जब जङ्ग हार ग्या महाराणा मेवाड़ी ॥टेक॥
जङ्ग हार की खबर फैल गई जब राणा की रजधानी में ।
खून जाम काया का हो गया तरँग रही ना वाणी में ॥
दिन में रात गात में पीड़ा आग दीख रही पानी में ॥
जहाँ तहाँ हो गईं टोलियाँ कर आपस में सलाह रहे ।
सहज में बोलें सेठ काँपते अकल के अँकड़ चला रहे ॥
कोई कहै सुल्तान सीम पै अपना झण्डा हला रहे ॥
लाठी लिए किसान फिरैं इन्हें अकल होय बड़ी माड़ी ॥१॥
नन्द सेठ की चम्पा लड़की बोली ज्वानों डरो नहीं ।
समय के बीते बच ना सकोगे बिन आई के मरो नहीं ॥
तुम केहरी गजराज पछाड़ो घास भूल में चरो नहीं ॥
चारों खूँट किले की बैठो करो द्वार के बन्द किवाड़ ।
मिट्टी चाटो मारवाड़ की खेलो जीवन से खिलवाड़ ॥
जीते जी बड़ जायें किले में धड से अलग कतर दो नाड़ ॥
न्यूँ कहकै वा सुता सेठ की हँस कै पडी अगाड़ी ॥२॥
गलिहारों में कहती डोलै सुनो नारियो धर कै ध्यान ।
अकबर की सेना चढ़ आई राणा हार गये मैदान ॥
डर कै हिम्मत हार ना जाना चीर बढ़ा देंगे भगवान ॥
हल्दीघाटी जँग से थारा सिमट गया सिन्दूर सुहाग ।
दरवाजे पै चिता बना लो सुलगा देओ काठ में आग ॥
मारो मुगल आग में कूदो जो दामन पै लगै ना दाग ॥
गाओ गीत उमँग में भर कै पहरो जेवर साड़ी ॥३॥
राजपुरोहित कहन लगा तुम बचा लेओ महाराणी को ।
अमर सिँह को साथ में लेके छोड़ जाये रजधानी को ॥
रहम करे भगवान बचा ले राणा वंश निशानी को ॥
गुरशरणदास चित्तौड नगर में बारह घर थे राजलुहार ।
पराधीन रहना नहीं चाहते किया इकट्ठा सब परिवार ॥
महाराणा का सगुन बोल कै होगे तुरत शहर से बाहर ॥
आज तलक रही घूम देश में भूभलियों की गाड़ी ॥४॥

तर्जः

आधी रात घूम रही रानी लेकै सुत नै बन में ।
ठोकर खाकै गिर जावै थी चोट लाग जा तन में ॥टेक॥
बेरा ना इस दुनिया में अपना कौन पराया ।
लगै नहीं अन्दाज मनुष नै के खोया के पाया ॥
जिस दिन तेरा जन्म हुआ सुत जङ्ग में शङ्ख बजाया ।
बड़ा विलक्षण मनुष धोखे ने धोखा खाया ॥
कल तक थी माया की मालिक आज निरधन मैं ॥१॥
अजब गति परमेश्वर की कोई समझनहार नहीं सै ।
जीवन है सुख दुख बन्धन कोई आरोपार नहीं सै ॥
फूलों सै भी डर लागै अब इनमें भी बहार नहीं सै ।
सुना है ये भू गोल आज कल का संसार नहीं सै ॥
बैर भवन में प्यार नहीं सै हर खतरा जीवन में ॥२॥
न्यूँ ही गुजर गई रात सुबह की पीली फटन लगी थी ।
आधा सङ्कट खतम हुआ चिन्ता सी घटन लगी थी ॥
पन्छी की चहकाट में कुछ विपदा सी हटन लगी थी ।
बैठ हिंस की जड़ में रानी रब नै रटन लगी थी ॥
मिटन लगी भ्रम किरण रमी जो धरती के कण में ॥३॥
चार मुगल गये दीख घूमते जब प्रभात हुआ था ।
फेर बाढ चिन्ता की बढ़गी कम्पित गात हुआ था ॥
दिख गंई रानी मुगलों को फिर उत्पात हुआ था ।
मुगलों में से जफर अली दुखिया के साथ हुआ था ॥
गुरशरणदास भगवान हुआ था फिर साथी दुख के क्षण में ॥४॥

तर्जः हमने गाय के पनघट

जो तनिक हवा में बाग हिली और भनक पड़ी तेरे कान में ।
तू लेकर उड़ जाया करता राणा को असमान में ॥टेक॥
जग में कोई गली छिकी नहीं तेरे बिना भैरवी कभी झिकी नहीं ।
किस्मत दुश्मन की लिखी नहीं जिसपे तेरी ठोकर टिकी नहीं ॥
कोई जहाँ नहीं जहाँ फिकी नहीं, तेरी नजर किसी तूफान में ॥१॥
दुश्मन कहते थे वो यहाँ नहीं, वो चला गया है वहाँ नहीं ।
थी नहीं जगह तू जहाँ नहीं दुश्मन मस्तक पर कहाँ नहीं ॥
नर रहा ना कोई झुका ना हो जो किसी जङ्ग मैदान में ॥२॥
तेरी मौत जो आई लेकर परवाना, बोली जल बाजी कर स्पर्श ठिकाना ।
तू बोला मुझे तो जाणा जब तक ना बचे मेरा महाराणा ॥
नाले को कूद कर बचा लिया मैं तू सोया श्मसान में ॥३॥
गुरशरणदास को रण भाता है, चित्तौड़ हाथ से जाता है ।
मेरे यार तू क्यों नहीं आता है, तेरा राणा ठोकर खाता है ॥
तेरी हींस भयानक चाल थी चञ्चल विजय तेरी मुस्कान में ॥४॥

तर्ज़ः

दिल्ली का दरबार भरा सच शक्तिसिँह बोलै था ।
सुभा शेर का बदल गया दिल अकबर का डोलै था ॥टेक॥
न्यूँ बोल्या विष गरल बना मैं भारत माँ के धड़ में ।
कण्ठ काट कै डुबो दिया मनै लौहू की कीचड़ में ॥
विष पन्नग बिल देख बसा मैं अरँड वृक्ष की जड़ में ।
भारत में बस गये स्यार अब दो शेरों की अड़ में ॥
बाँस की छड़ में आग लगी मैं और हवा झोलै था ॥१॥
भारत जिन्दाबाद हिन्द की जय थमगी वाणी में ।
पड़ा फेर भी फरक नहीं मेरी आँख्याँ के पाणी में ॥
देश जोश सन्तोष घोष था हर हिन्दुस्तानी में ।
अकल पै पत्थर पड़े लाभ में देखूँ सूँ हानी मैं ॥
बेईमानी में डूब गया मैं पट पलड़े तोलै था ॥२॥
आठ पठान चले मिलकै जहाँ राणा ने घर घाला ।
चेतक चपल चतुर घूम रहा चपर हाथ से भाला ॥
खून के चहले में दीख रहा सुल्तान मेरा मुँह काला ।
फिर भी मैं शैतान जितावन चला अनीती पाला ॥
झाला ने सर झोंक दिया जब काल जीभ खोलै था ॥३॥
मैं चेतक की ओर चला वो पवन गति से जारा ।
झील कूद कै प्राण त्याग दिये दे जय हिँद का नारा ॥
पशु प्रेम से आँख खुली मनै दीख गया जग सारा ।
मार दिये दो सैनिक थारे मैं बन्धु प्रेम से हारा ॥
गुरशरणदास जलधारा में मैं रोज जहर घोलै था ॥४॥

तर्जः

दाँत के नीचे कलम दाब लई सुन रहे बहस वकीलों की ।
लिपीकार लगे लिखन फरद पै कुञ्जी तर्क दलीलों की ॥टेक॥
सरकारी विधिवेत्ता बोले खोल कै पेज किताबों के ।
पढ़े कई मजबून पुराने आजम हुकम नबाबों के ॥
हिंन्दू ताजे रात की धारा हरफ सवाल जबाबों के ।
दफा तीन सौ दो चौसठ पै दो मत हुए सहाबों के ॥
उमरावों के पढ़े फैसले फाँसी सजा जलीलों की ॥१॥
शक्ति ने दो खून किये अपराध दूसरा है भारी ।
दुश्मन की पनहा में गये वो हुकम तोड़ कै सरकारी ॥
शक्ति का विधिवेत्ता बोला सरकारी गलती सारी ।
भाई भाई का जङ्ग करा दिया भारी भूल हुई थारी ॥
खून के खत खलकत सारी ये खाका खिँची खलीलों की ॥२॥
शेर पींजरे से काढ़ दिया के बेरा कब मुँह खोल उठे ।
माँ का दूध खून की खूबी पता नहीं कब डोल उठे ॥
धार में नैया प्यार में मैया हार में भैया बोल उठे ।
क्षत्री की जात का के बेरा कब कालकूट विष घोल उठे ॥
दुखे जखम ने छोल उठै कुछ नहीं शनाख्त हठीलों की ॥३॥
पीठ दिखाकर भगने पर कभी क्षत्री करते रोष नहीं ।
राणा ने रण छोड़ दिया था घायल था कुछ होश नहीं ॥
फिर भी चले पठान मारने हुआ उन्हें सन्तोष नहीं ।
शक्ति सिँह ने मार गिराया ये हत्या का दोष नहीं ॥
गुरशरणदास कह जोश में पूरण कह दई कथा छबीलों की ॥४॥

तर्जः

भारती शिशौदिया की ऐसी रशम ।
माफी ना माँगते हैं देश की कसम ॥टेक॥
जब हमारी आँख का यो आब घट गया ।
उदय सिँह कि आतमा का ख्वाब लुट गया ॥
अँधेर मिट गया और खुलगे चशम ॥१॥
झुकेगा ना नीचे सर ये हुए बिन जुदा ।
जानते नहीं हो तुम रजपुत की अदा ॥
खुदा तू नहीं है जो कर दे फूँक ते भसम ॥२॥
रुतबा बढ़ाया हमने आपकी खुदाई का ।
खून तक बहाया रण में देश के सिपाही का ॥
खाई पाटने को काटा भाई का जिसम ॥३॥
शरणदास सर हमने तेरा उठाया है ।
जहाँ को जहन्नुम हमने कई बर बनाया है ॥
धर्म का बताया लक्षण मनु ने दशम ॥४॥

आदर्श झाँकी राम की गीता में धुन घनश्याम की ये भूमि मेरे गाम की,
जिस देश में मेवाड़ है ।
बढ़के कदम रुकते नहीं सर कट सके झुकते नहीं होकर जखम दुखंते नहीं,
जिस देश में मेवाड़ है ॥
हिँगलाज के आखीर तक कन्याकुमारी तीर तक फैला हुआ काश्मीर तक,
जिस देश में मेवाड़ है ।
गुरशरणदास इतिहास के उपदेश गौतम दास के छन्द कालीदास के,
जिस देश में मेवाड़ है ॥

तर्जः

दूर क्यूँ बैठ गये इतने लगो रे तुम तो चेतक से, ओ साथी ओ यार ॥टेक॥
साहस था शेर का उसमें गजराज का बल था ।
भालू सी भय उसकी हिरणों सा चञ्चल था ॥
हंस सा सुन्दर शीतल था युद्ध के निकट मोर्चों को हो जावे था पार ॥१॥
उड़ाने क्या उड़े पञ्छी तसल्ली दिल नहीं करती ।
उड़े था जङ्ग में चेतक निगाहें ढूँढती फिरती ॥
हवायें वेदना सहती मेरी तकदीर का तख्ता डूब गया मझदार ॥२॥
पञ्छियों बूझ ल्यो जाके अकबर के नौकर से ।
मान के मान का चूर्ण हुआ चेतक की ठोकर से ॥
शिकायत परमेश्वर से है मिटाया पल भर में जिसने आशा का संसार ॥३॥
जानवर जान देते हैं प्राण लेते हैं जहाँ भाई ।
आदमी डूब के मरजा तेरे चेहरे पै है स्याही ॥
गुरशरणदास जग में सार ये पाया है हमने जानवरों से प्यार ॥४॥

तर्जः

जमगी चेहरे पै धूल णाग में क्या,
जब मुरझा जावे फूल फाग में क्या ॥टेक॥
महाराणा ने देखी मुड़ कै निगसह उसके तन पै धरी ।
बाज के कुफर सें गुजरी फाकता गमों से भरी ॥
बेबसी में तडफै जैसे पङ्ख के कटे से परी ॥
बावली से देंखै राणी महाराणी ने करके गौर ।
राणा पै ना पिछनी राणी दोनों पै गमों का दौर ॥
बैरियों का जलसा लग रा धोखे में बहकरा त्यौर ॥
जहाँ कदली चीरै शूल बाग में क्या ॥१॥
प्रेम का समन्दर छलका राणी ने पिछाने पिया ।
चरणों में फफक कै गिर गई सुत राणा ने थाम लिया ॥
मगन हुए आरण्य गूँज गया राम जी से मिलगी सिया ॥
शीश को उठा कैं राणी राणा को निहारण लागी ।
बिन बाजी बञ्जारा बण में देख कै विचारण लागी ॥
कर चेतक की याद कहर से धरती में सिर मारण लागी ॥
जाका सरवस लुटा समूल पाग में क्या ॥२॥
चेतक के सँग देखे पिया कूदते कँगूरा कोट ।
बिन घोड़ा मृगराज साजना पत्थरों में खा रे चोट ॥
मेरी आयूं लेंकै चेतक राणा के लिए उल्टा लौट ॥
विधाता विडम्बन पर क्यों नीचता विहङ्गों की ।
जल में से उत्पत्ति करता पवन से तरङ्गों की ॥
पवन थाम हत्या करता दरिया के उमङ्गों की ॥
जाने अनृत करा कबूल राग में क्या ॥३॥
चेतक था तो महाराणा ने झुके ना मानी दाब कहीं ।
चेतक मरा बने वनवासी आबरू पै आब नहीं ॥
वाह रे पशु परमेश्वर तेरे काम का जबाब नहीं ॥
गुरशरणदास कह महाराणा ने बाजुओं में ठाली नार ।
हिड़की बँधगी धीरज टूटा विपदा में पहाड़ का भार ॥
जींव जन्तु जब जँग में रोये आँसुओं की बहगी धार ॥
गये शेर सुभा को भूल नाग में क्या ॥४॥

तर्जः

विपदा के दरिया का दुर्गम किनारा,
बाजू थकाये राणी रोना तुम्हारा ॥टेक॥
रोना घबराना राणी आपका कसूर है ।
चढ़ा है जो नभ में बादल फटना जरूर है ॥
मोह का सरूर देगा गम ही सहारा, साथी हमारा ॥१॥
शेर हाथियों का होता रोज टकराना ।
कभी कभी सिँह को पड़ै भूखा लौट जाना ॥
झुकाना ना सीखा सर ना हमने गँवारा, जीवन उधारा ॥२॥
अपने पराये को गम कसौटी बतायेगी ।
घबराने से भारत माँ की धीर टूट जायेगी ॥
आयेगी समय फिर सुर में बजे इकतारा, गाये बञ्जारा ॥३॥
गुरशरणदास विपदा चाहती गरीब को ।
कोसता बिचारा निर्धन अपने नसीब को ॥
हमारे करीब जो थे भूल गये दुबारा, घोर अँधियारा ॥४॥

तर्जः मेरा रँग दे बसन्ती चोला

भाई हिन्दुस्तान तुम्हारा ।
जमुना तेरे राखी बाँधे बल गङ्गा की धारा ॥टेक॥
हर गम से हर तूफानों से हर पर्वत हर घाट से ।
साहस का वरदान माँग ले लड़ना है सम्राट से ॥
बाट से काँटा तुझे हटाना जो साफ बने गलिहारा ॥१॥
आज की ठोकर आज के झञ्झट आज के धोखे पार के ।
जी भर के पछताये कल को मनसूबे सरकार के ॥
फूँक मार के फना ना होगा अम्बर में ध्रुव तारा ॥२॥
बहन मुसलमाँ भईया हिन्दू सुमर खुदा भगवान को ।
मानसिँह अकबर के दोनों दफनाएँ अरमान को ॥
आन को जिन्दा रखना होगा अर्पण जीवन सारा ॥३॥
गुरशरणदास सङ्घर्ष बनाता लौह पुरुष इन्सान को ।
तुझको सबक सिखाना होगा दिल्ली के सुल्तान को ॥
प्राण को बेशक रखी दाव पै जो गौरव बचे हमारा ॥४॥

॥ छन्द ॥

बादशाह का हुक्म था तुम देश से बाहर हो रहोगे ।
देश को स्वदेश अपने मुख से तुम ना कहोगे ॥
सुन के ये आदेश शाह का दुक्ख था शक्ति को भारी ।
किन्तु हुक्म हुक्म ही था लग गया करने को त्यारी ॥
बादशाह की एक लड़की यङ्ग दौलत नाम की थी ।
देखने राणा की इच्छा बहुत दिना से बाम की थी ॥
बालिका की चेष्टा की शक्तिसिँह को भी खबर थी ।
पहुँचगा दौलत के धोरे हिम्मते उसकी जबर थी ॥
लग गया कहने कि दौलत देखना जो चाहे राणा ।
आज मेरे सङ्ग में तू शीघ्र ही होले रवाना ॥
हो गई दौलत भी सहमत शकित सिँह के साथ में वो ।
बैठ घोड़े पर चली आरण्य को उस रात में वो ॥
शत्रू कीं बालिका को लेके शक्ति उड़ चला था ।
मानता अपनह्र विजय बदनीत ने ऐसा छला था ॥

तर्जः

भाई बहन जोट खुली प्रेम पोट पीपल की ओट से,
राणा दौड़ चले ॥टेक॥
सुन दौलत की बात गात में सहसा प्यार उभर आया ।
दौलत जिन्दाबाद कही लई उठा गोद आनँद छाया ॥
जियो भारती बहन दुलारी देश सुता मेरी माया ।
तू भारत का भविष वन्दिनी जीवन का हीरा पाय ॥
आया दिल में चैन लगे राणा कहन तू अमर बहन हम नाता जोड़ चले ॥१॥
जो होता चित्तौड़ आज जण के के बात ठान लेता ।
देता राज ताज दे देता छत्र वर्क तान देता ॥
जो चेतक जिन्दा होता तो उसको तुझे दान देता ।
मैं हारा हुआ ना होता तो तुझपै वार प्राण देता ॥
कह देता आज दिया सौंप राज तू देश लाज हम वन की ओर चले ॥२॥
प्यार का पञ्जा दुआ देश की तू मीठी वाणी ले ले ।
चौदह सहस्र देवियाँ जलगीं तू उनकी कहानी ले ले ॥
बेटी और बाप का रिश्ता दे सकता दानी ले ले ।
फला के आँचल सुता शेरनी आँखों का पानी ले ले ॥
मेरी ले ले दुआ मनै मन्त्र सुहा मजबूर हुआ हम गर्दन मोड़ चले ॥३॥
शक्ति सिंह ने ला गेरी जहाँ परवाने का गात फुका ।
कर्म यातना मैं भोगूँ तेरा जीवन क्यूँ बे बात फुका ॥
गुरशरणदास संयोग मिटे ना काठ आग का साथ फुका ।
सूरज दिन में तपन छोड़ दे दीवा सारी रात फुका ॥
रुका राणा बोल गया गात डोल बिगड़ी का मोल सब रिश्ता छोड़ चले ॥४॥

तर्जः

बालधौ पड़ैगो थामणो, बोलदे कड़ै जावणो, मैं भर के लाई माट में ।
मैंनें घुलौ रांवड़ो प्याणो राणो बैठो मेंरी बाट में, ओ धूलिया ओ, बागड़ो रै ॥टेक॥

तर्जः

हल्दीघाटी के सूरमा तेरे दरश करण को मैं आई ।
जल्दी से पीले रावड़ो बागड़ो चेतक ने बुलवाई ॥टेक॥
रेखा खिँची विराट भाल भारत की तकदीर लिखी ।
होगा जीवन सफल हिरदै पै आज मेरी तस्वीर लिखी ॥
रण में हारा पीठ दिखा कै, तमाचा मारा आज कसा कै, इस लड़की के त्याग ने ॥१॥
पूछेगा इतिहास मेरे चेहरे पै थूंकेगा ।
स्वारथ के लिए बता और किस किस ने फूकेगा ॥
रुकैगा ना विस्फोट जहर का, हरदम मातम रञ्ज कहर का, कैसे धोऊँ दाग मैं ॥२॥
दौलत है मेहमान भूख में प्राण तजैगी ।
तेरी सजी है चिता कबर उसकी भी सजैगी ॥
बजैगा ढ़ोल बुरी बदनामी, शामी आज छछुन्दर थामी, जैसे भूखे नाग ने ॥३॥
गुरशरणदास कह दौलत के लिए घूट जहर ले ।
लिख सन्धी जञ्जीर गुलामी की गल में पहर ले ॥
करले जो ना करना चहिए, बन कै नौकर दिल्ली रहिए, सर तै तार पाग नै ॥४॥

तर्ज:

धर दई चिता पै ल्हाश कफन बिन गूँज उठा इतिहास, दिया है धोखा भाग ने।
मिटी नहीं मुसकान बागड़ो चर लई आग ने ॥टेक॥
बूझेगा इतिहास तेरे चेहरे पै थूकेगा ।
स्वारथ के लिए बता और किस किस ने फूकेगा ॥
रुकैगा ना विस्फोट जहर का, हरदम मातम रञ्ज कहर का, कैसे धोऊँ दाग मैं ॥१॥
धरे पीठ पै हाथ सोच रे महाराणा मन में ।
तेरी घणी कीमती खाक बिखरती डोलैगी वन में ॥
रण में हारा पीठ दिखा कै, तमाचा मारा आज कसा कै, इस लड़की के त्याग ने ॥२॥
दौलत है मेहमान भूख में प्राण तजैगी ।
तेरी सजी है चिता कबर उसकी भी सजैगी ॥
बजैगा ढ़ोल बुरी बदनामी, शामी आज छछुन्दर थामी, जैसे भूखे नाग ने ॥३॥
गुरशरणदास कह दौलत के लिए घूट जहर ले ।
लिख सन्धी जञ्जीर गुलामी की गल में पहर ले ॥
करले जो ना करना चहिए, बन कै नौकर दिल्ली रहिए, सर तै तार पाग नै ॥४॥

तर्जः

कागज के कर दिये खण्ड और झट से कलम तोड़ दी ।
मोह में अन्धे हुए पिता क्यूँ अधबर नाव छोड़ दी ॥टेक॥
दुश्मन की पनहा में गये से काल नहीं रुक जायेगा ।
राणा का सर झुकने सा सब देश का सर झुक जायेगा ॥
चेतक और झाला का पतन हो स्वर्ग में दिल दुख जायेगा ।
कायरता से आज देश का सब वैभव फुक जायेगा ॥
मुरझायेगा चमन फूल में जो दुर्गन्ध फोड़ दी ॥१॥
शेर घास नहीं चरा करै दम तोड़ै चाहे भूख से ।
सूरज जोत बुझा नहीं करती कितनी तेज फूँक से ॥
मान प्रतिष्ठा गिरा ना करती है ये किसी रूख से ।
देश भविष बिगड़ जाता है इतनी बड़ी चूक से ॥
बलिदानों की ओर उदासी कितनी तेज दौड़ दी ॥२॥
अपनी मरजी करने का तुमको अधिकार कहाँ से ।
बोलो किसी सिपाही की इस रण में हार कहाँ से ॥
देश के सम्मुख किया हुआ तेरा इकरार कहाँ है ।
माँ को देकर वचन भूलने का व्यवहार कहाँ है ॥
सुन दौलत की बात राव ने नीची नाड़ मोड़ दी ॥३॥
गुरशरणदास कह चिङ्गारी वो फिर से जाग उठी थी ।
दबी राख से मुरझागी वो फिर से आग उठी थी ॥
कायरता परछिन्न शेर के दिल से भाग उठी थी ।
हृदय की बारूद योग पाते ही दाग उठी थी ॥
टूटी हुई तरङ्ग दौलत ने करके यतन जोड़ दी ॥४॥

तर्जः

धीरवान सन्तोष पुरुष को मोह ना सकती माया ।
सजग हुए परताप निकल जन फेर दिवाकर आया ॥टेक॥

तर्जः

आदाबऽर्ज जनाब हैसियत वाकई जौहर सलाम लिखा ।
अकबर ने बेटी की खातिर खत राणा के नाम लिखा ॥टेक॥
अव्वल अदब बन्दगी दिल से हम चेतक के लिए लिखी ।
दास्तान वो याद मान के गज मस्तक पै टाप टिकी ॥
आया था गज भाग दौड़ कै जब हौदे पै निगाह फिकी ।
जान गया मुगलों की मर्दगी जङ्ग बीच बेभाव बिकी ॥
थकी कलाई मानसिँह की बुजदिल नीच हराम लिखा ॥१॥
शक्तिसिँह को सजा दई ये संविधान का पालन था ।
हुआ रुझान न्याय के रुख में नियमों का सञ्चालन था ॥
खुला छोड़ दिया शक्तिसिँह मेरी नीती का पगलपन था ।
उठा लियां मेरी बेटी को आबरू मुकम्मिल जो धन था ॥
दुख दारुण हो गया मुझे मनै एकदम हृदय थाम लिखा ॥२॥
सन्धी कर ले महाराणा मनै तेरा लोहा मान लिया ।
भाई भाई में फूट गेर कै बहुत बड़ा नुकसान किया ॥
तुम जीते मैं हार गया लिख कागज पै एलान किया ।
लौटा दूँ चित्तौड़ तेरा मैंने हृदय से सम्मान किया ॥
मेरा खाक में मिला गुमान दिया तेरा वापिस मुल्क मुकाम लिखा ॥३॥
हल्दीघाटी जँग जौहर से मेरे दिल पैं छाप पड़ी ।
जिद में इज्जत खो बैठा जब ये आ गई कोई पाप घड़ी ॥
राजदोष बीजारोपण से समय बुला ली आप कड़ी ।
गुरशरणदास कह आँखों में तस्वीर तेरी परताप खड़ी ॥
करी कैफियत बन्द लिफाफा दीगर हाल तमाम लिखा ॥४॥

तर्ज:

खत मिला आपका सुन लो जबाब हमारा ॥टेक॥

तर्ज़ः

नाड़ झुका कै बैठगी, लुटा सपनों का संसार,
दुख हो ग्या, दुख हो ग्या भारी गात में ॥टेक॥
दौलत प्रेम खिलौना गुड़िया बैठ शिला पै बनी शिला ।
आँसू टपके धरण किरोदैं कुदरत से कर रही गिला ॥
हृदय के उद्‌गार तरङ्गित ज्यूँ पीपल का पात हिला ।
मालिक मुझे वियोग ना दे तू चाहे घोल के जहर पिला ॥
प्यार मिला जिस गोद में उसे मत छीने करतार, दुख हो ग्या...॥१॥
हे खग मृग मधु भृङ्ग तितलियाँ तुम बिन मुझ पै रहा ना जाय ।
तुम कह दो परताप पिता से जो मेरे पै कह्या न जाय ॥
जल की प्यासी मीन वियोगन शोला गर्म गह्या ना जाय ।
सब जहमत मञ्जूर मुझे पर दुक्ख वियोग सह्या ना जाय ॥
नीर बह्या जब नैन से बही श्वेत शिला पै धार, दुख हो ग्या...॥२॥
गद्‌गद्‌कण्ठ कलेश में राणा न्यू बोले मत घबरइये ।
मेरी लाज के लिए यातना झेल चली दिल्ली जइये ॥
अगले जनम में खुदा की रहमत मेरी सुता बन के अइये ।
वो आये चर चार शाह के साथ चली जाना चहिये ॥
करिये मना मत लाड़ली तेरे बापू का अधिकार, दुख हो ग्या...॥३॥
गुरशरणदास मेवाड़ केसरी, रुदन गले में घोट गये ।
आते देख सवार चार मन मार बनी को लौट गये ॥
दौलत रोती रही अकेली कर असमञ्जस चोट गये ।
होकर गिरी अचेत पिता जब हो पर्वत की ओट गये ॥
देख रहे छुप दूर से महाराणा बारम्बार, दुख हो ग्या...॥४॥

तर्जः

दौलत बैठ बताण लगी जो फर्क मिला दिल्ली में ।
शेर साँथरी सुरग अरावली नरक मिला दिल्ली में ॥टेक॥
यहाँ इमारत बनी पाप की वहाँ विधाता की झाँकी ।
यहाँ पै धाय दुलारा करती वहाँ मिली ममता माँ की ॥
सद कै जाऊँ भैया के वर बाजू पै हँसती राखी ।
वहाँ पिता का प्यार यहाँ पै स्वारथ का जीवर खाकी ॥
शाकी का शौक शराब खरों का खरक मिला दिल्ली में ॥१॥
शिष्टाचार अपार धीर वो चरित देवता की नगरी ।
दिल्ली की बेशर्म सियासत स्वयम् आतमा को ठग री ॥
भारत माँ की लाज बचै बस यही लगन उनको लग री ।
यहाँ लुटेरे सभी लोभ के चिङ्गारी चित में जग री ॥
गगरी में विष घोल दमन का चर्क मिला दिल्ली में ॥२॥
यहाँ बेड़ियाँ पड़ी हुई बेगुनाह चलें गलिहारों से ।
वहाँ स्वतन्त्र निंकुञ्ज गूँजता शेरों की ललकारों से ॥
ये है मातम भवन भरा मजबूरी की चित्कारों से ।
वहाँ चाँदनी रात सजी मुसकाते हुए सितारों से ॥
यारों का दिल चीर खून हुआ गर्क मिला दिल्ली में ॥३॥
गुरशरणदास दौलत बोली बन बसा आत्मा मेरी में ।
कोई कीड़ा कर्कट में राजी कोई फूलों की ढेरी में ॥
चन्दा देख चकोर खुशी पर उल्लू हँसे अँधेरी में ।
अल्लाह के मौहतैत जिन्दगी जीऊँ जहाँ ला गेरी मैं ॥
तेरी गोदी में पली खुदा का तर्क मिला दिल्ली में ॥४॥

तर्जः

अरावली आरण्य भयङ्कर अन्तराल गहरी घाटी ।
कच्चा पहाड चटान फटै कदै अकस्मात गिर जा माटी ॥टेक॥
चढ़े सूर्य तपै दुपहरी धरती बनी तवा जलती ।
बिन पानी गई जीभ सूख धीरज की दाल नहीं गलती ॥
रो पड़ै अमरसिँह बालक था पर ममता हृदय में हलती ।
आग में भुनकै दिन कट जा पर बैरन रात नहीं ढलती ॥
होनहार टलती कोन्या के होना खबर नहीं पाटी ॥१॥
दिग्दर्शक पर्वत चोटी पै थी मुगलों की कुमक घणी ।
चीते शेर भुजङ्ग भूख बुरी काल रूप बन गई बणी ॥
तरकस में से तीर सिमटगे शेरों से तकरार ठणी ।
क्या होगा भगवान मेरे जो मुगलों से जुड़ जाय अणी ॥
खुरी छणी अब घोड़े की मग जाती नहीं कदम डाटी ॥२॥
आठ दिनों तक यूँ ही जूझता वो मेवाड़ी शेर रहा ।
घोडा भी चल बसा एक दिन हो माटी का ढेर रहा ॥
घोडे के मर जाने का दुख अब जाता ना फेर सहा ।
शिथिल हुए सब अङ्ग सोच रा किस्मत में अन्धेर रहा ॥
किस तरह सहा दुख वो जाने किस तरह समय उसने काटी ॥३॥
पिसी घास की रोटी ने ले भगा बिलाव घणा पापी ।
ऊपर गोली की सन सन सुनते ही काया काँपी ॥
विपत समन्दर गहरी बनगी जाती नहीं सतह नापी ।
हो मजबूर लिखी सन्धी अब सोच विचार लिया काफी ॥
गुरशरणदास सन्धी मत लिखियो राणा कलम बहुत नाटी ॥४॥

तर्जः

पढे ना जाते हरफ नजर कई इल्मेगार गेरगे ।
मानो अक्षर कागज पै रो रो कै पीठ फेरगे ॥टेक॥
काढ़ रहे सारांश पत्र का देर दो घड़ी होगी ।
समझन को मजबूर गौर से बहौत भीड़ खड़ी होगी ॥
हरफ धूल में हुए गमक चट्टान धूल झड़ी होगी ।
स्याही की पड़ी बूँद हार कै कलम रो पड़ी होगी ॥
समय बड़ा बलवान सुभा को पल में बदल शेर गे ॥१॥
काढ लिया सारांश पत्र सन्धी का राणा हारा ।
सुनीं शेर की हार खुशी में हौल गूँज गया सारा ॥
एक तरफ बज उठी तालियाँ एक तरफ गम भारा ।
कहीं खुशी की लहर दौड़गी कहीं नैन जलधारा ॥
सपनों की दीवारों के बन माटी के विकट ढेर गे ॥२॥
चेतक की गई चटक समाधी चहट देश के दिल में ।
चैन लुटा चित्तौड़ व्यञ्जना मुगलों की महफिल में ॥
चढ़ता सूरज डूब गया क्यूँ अधवर मञ्जिल में ।
शेर स्यार की थली खड़े और स्यार शेर के बिल में ॥
अकबर जिन्दाबाद मुसलमाँ बोल हजार बेर गे ॥३॥
पृथीराज कवि बोले थारी अकल हुई माडी सी ।
चमके के मारै मानस नै धूप लगै आँधी सी ॥
लोभी नर देख्या ना करते जल में सिप्पी चाँदी सी ।
जैसे गणिका ने भी लग्या करै सै रति रम्भा बाँदी सी ॥
गुरशरणदास खत झूठा सै वो छल में तुम्हे घेर गे ॥४॥

तर्जः

खुर कुण्डल में खून खुश्क नर चिर निद्रा सोये थे ।
लाल रङ्ग की मसी बनी जब राष्ट्र कवि रोये थे ॥टेक॥
लेख लेखनी लिखन लगी ये खण्ड हुई कहानी से ।
विष खाया विश्वास मरा ये भारत की वाणी से ॥
माँ के आँसू कौण गिनै जब यूँ ही धूल खाणी सै ।
के बणता जाका बिखर लिया हो लज्जा का पानी सै ॥
आम बीज के धोखे में माँ शूल तरू बोये थे ॥१॥
महाराणा तुम रहे नहीं कहुँ चाटुकार अकबर के ।
मूल नराधम निषध कुकर्मी स्वयम् शत्रु घर के ॥
सन्धि लिखते समय चित्र तुम्हें याद नहीं उस नर के ।
सौंप गया जो देश तुम्हें हो गया अमर वो मर के ॥
हँसते हँसते कुपित मौत की गोदी में गोये थे ॥२॥
ये चेतक का वतन और ये झाला की धरनी थी ।
बलिदानों की धरण तुम्हें नीलाम नहीं करनी थी ॥
देश शहीदों के गर्म खून की घूँट नहीं भरनी थी ।
बिना कफन बणी में फुकी बागड़ो वो लाज नहीं मरनी थी ॥
कई हजार नारियों ने तेरे लिए प्राण खोये थे ॥३॥
सर गिरता तो सर झुकते सर झुका यही रोना है ।
समझणिया सङ्केत समझ अब आगे के होना है ॥
देश धर्म का भार तो घुटने टेक टेक ढ़ोना है ।
सब कुछ तो खो चुका मगर अब वक्त नहीं खोना है ॥
गुरशरणदास कवि हो ना सके न्यू ही कण पत्थर ढ़ोये थे ॥४॥

तर्जः

चला चेतना पत्र वहाँ यहाँ बदनामी भी दौड़ चली ।
महाराणा हट गया परण से कान के परदे फोड़ चली ॥टेक॥
देश क्षुब्ध हो गया धरण का कण कण क्रन्दन करण लगा ।
गौरव था प्राचीन देश का लज्जा खाकै मरण लगा ॥
रघू, भगीरथ, शिबि दधीचि का देश निराशा भरण लगा ।
आशा के विपरीत केसरी क्या करने आचरण लगा ॥
माया से परमेश्वर का सिंह स्यार का नाता जोड़ चली ॥१॥
कोई कहै मेवाड़ी तो बेईमान मान का नौकर सै ।
देखो तो दरबार बीच उसे ठुकराते हैं ठोकर सै ॥
यवन जिकर पै जिकर करें वो तो दरबारी जोकर सै ।
कोई कहता गुलसब्ज के खातिर जल ढोता है पोखर सै ॥
कहीं कराहती कहीं विंहसती दुखद कंथा चित्तौड़ चली ॥२॥
सभी देश हो गया विकल और भारी हाहाकार मचा ।
भयभीत नारियों ने होकै सती होने का शृङ्गार रचा ॥
सब निन्दक हो गये आज कोई यार ना रिश्तेदार बचा ।
सन्धी से मरना बेहतर था सबको यही विचार रचा ॥
के बनता अब सिवा कहर के आँखें नीर निचोड़ चली ॥३॥
कहर खबर बिच्छू विष लेकै भामाशाह के कान पड़ी ।
पश्चिम में रवि उदय हुआ सुन अकल हुई हैरान बड़ी ॥
गुरशरणदास कह समय घड़ी भर एक वर्ष सी जान पड़ी ।
इस तरह हुआ निर्जीव वह जैसे मौत खींच रही प्राण खड़ी ॥
देश प्रेम गया जाग निराशा जब भामा की ओड़ चली ॥४॥

तर्जः

गलानी में राणा गल रहे ।
नैन से आँसू पात बिखर गालों पै ढ़ल रहे ॥टेक॥
सन्धी के प्रस्ताव का मुझको क्या अधिकार था ।
इस धरती के रेत में चेतक का दुलार था ॥
था झाला का प्यार उसे फिर हम क्यूँ छल रहे ॥१॥
मैं ही धोखेदार हूँ मेरा सभी कसूर है ।
भारत तेरे वास्ते हर पीड़ा मञ्जूर है ॥
शेर हुए मजबूर द्वार पै स्यार पल रहे ॥२॥
दर्द समाया देश में मेरे ही उत्पात से ।
हत्या हुई उसूल की धोखे के आघात से ॥
पीपल जैसे पात अङ्ग राणा के हल रहे ॥३॥
कैसे मुक्ति पाप से विष प्याया विश्वास को ।
कालिख हमने आप दी भारत के इतिहास को ॥
गुरशरणदास ये इधर उधर से भामा चल रहे ॥४॥

तर्जः

भामा के घोड़े ने घुटने टेक झुका दिया सर को ।
अभिनन्दन कर दिया पशू ने सिंह सरीखे नर को ॥टेक॥
राणा ने लिया लगा गले से धन्य धन्य हो बाजी ।
हिड़की दे रो पड़ा भूप एक याद उभरगी ताजी ॥
तू चेतक की जगंह तुरग सच मेरे अङ्ग में साजी ।
वही करुँगा काम यार तू जिस कर्तब से राजी ॥
मेरा अङ्ग समर्पित है तू दे दे पीठ समर को ॥१॥
सूखे हुए दण्ड की भाँती भामाशाह धरण में ।
सहसा ख्याल हुआ राणा को आँसू गिरे चरण में ॥
देश की रक्षा करो महिप मैं आया तेरी शरण में ।
सन्धी है अपयश का प्याला ख्याती भरी मरण में ॥
बेसुध प्रेम विभोर हुए ये एक मुहूरत भर को ॥२॥
भामा को लिया उठा गोद में हिड़की दे रोये थे ।
कौन कहाँ किसलिए यहाँ सब प्रेम बीच खोये थे ॥
करुण भाव सब जाग उठे जो आज तलक सोये थे ।
उठने लगे मलाल तड़फ जो हृदय में गोये थे ॥
त्रिवेणी मिल एक खोजंने चली जङ्ग समन्दर को ॥३॥
करुणा रस में डूब गये सब चाहे चेतन चाहे जड़ थे ।
खग मृग आँसू बहा रहे तरु पात पवन बिन झड़ते ॥
गुरशरणदास कह अकथ दृष्य दो मिले वियोगी लड़ते ।
विधि के दिये विधान मनुष को सर पै सहने पड़ते ॥
होगा वही सदैव जल्द जो करना परमेश्वर को ॥४॥

तर्जः

सुन महाराणा तू है इतिहास पुराना ।

तर्जः

शङ्कर प्रलय स्वरूप सुमर कै शोध शीघ्र धधकाकै आग ।
भाला थाम कवच धारण कर फिर पकड़ो घोड़े की बाग ॥टेक॥
महाराणी और पुत्र अमरसिँह इनको दे नैहर में भेज ।
अरावली आरण्य पार कर दौड़ा दे घोड़े को तेज ॥
जो नृप कर परतन्त्र स्वयम् को सोये हुए मौज की सेज ।
मन्त्र फूँक उनके कानों में निकट द्रोह का करो परेज ॥
पहले मुक्त कराओ उनको जो गा रे दुश्मन का राग ॥१॥
जितने हिन्दू राज देश में छोटे और बड़े परकोट ।
दबी आग को सुलगा देओ जो बुझ रही आग की ओट ॥
भूल गये हम स्वयम् स्वयम् को स्वीकारो तुम अपना खोट ।
हिन्द चेतना जाग उठेगी विजय मिलै डङ्के की चोट ॥
हंस सरोवर पर जड़ जाँगे व्यर्थ रैंकते रह जा काग ॥२॥
शोलापुर को मुक्त कराओ फिर वहाँ की मिल जाय अनीक ।
करो दूसरा किला मुक्त फिर अन्य भूप आवें नजदीक ॥
इसी तरह से सम सम्बल में होते रहैं राव सरीक ।
सङ्घ सङ्गठन में शक्ति है अनुभव सिद्ध जनों की लीक ॥
विजय आपके पग चूमेगी दुल्हन बनी सजा के माँग ॥३॥
हींस हींस कर बुला रहा है ये घोड़े पर लेओ सवार ।
होने लग गये शगुन दिशायें करनें लगी तेरा सत्कार ॥
देखो तो चेहरा धरती का वत्सलता से रही पुकार ।
तुम्ही उतारोगे महाराणा धरती दबी असङ्गत भार ॥
गुरशरणदास कह कर्म आज का यही भविष का बनता भाग ॥४॥

तर्जः

महाराणा अविराम रात दिन मग में चल रहा ।
कब दिन निकला पता नहीं कब सूरज ढल रहा ॥टेक॥
जलधार निरन्तर जैसे जलनिधि की ओर ढलती है ।
मेवाड़ मरू भूमी पर जिस तरह पवन चलती है ॥
इस तरह चला मेवाड़ी ज्यूँ आग रुई जलती है ।
घोड़े की टाप चटक से आरण्य भूमि हलती है ॥
धरती से उठी धूल हिमालय जैसे गल रहा ॥१॥
एक हाथ प्रलयङ्कर भाला कटि भाग ढाल लटकै थी ।
राणा के वज्र से दिल में प्रतिशोध तरँग खटकै थी ॥
अवरोध कोई मारग में तलवार प्राण सटकै थी ।
पा रहा विजय महाराणा जो भी बाधा अटकै थी ॥
बाट घाट का ख्याल नहीं शोला सा जल रहा ॥२॥
पहुँचा घणी दूर सीम से एक बहुचालित मारग था ।
नजदीक एक मन्दिर पर छवि सौख्य सवर्ग लगभग था ॥
वहाँ छत्तर था गुम्बट सा वट वृक्ष अनोखा नग था ।
रुक गये रुचिर छाया में ये थल सरिता के लग था ॥
चल रही पवन झकोर वृक्ष मस्ती में हल रहा ॥३॥
गुरशरणदास घोड़े को पुचकार पिलाया पानी ।
दिया छोड़ दूब चरने को मेरे पास यही मेहमानी ॥
सम्भव कुछ भोजन खाया सो गये समर विज्ञानी ।
सज्जन श्रोता गण देखो अब फिर बढ़ चली कहानी ॥
होना है कुछ और समय सब ही को छल रहा ॥४॥

तर्ज़ः

राणा को दुख देगा, कौआ मोती लेगा,
दब गया गात बटेर का, आज मान घटा दिया शेर का ॥टेक॥
अफसर का पद लेके पिया आके क्यूँ दिखा दी शान ।
चेहरे पै पुकारे पाप मानसिँह बेईमान ॥
छाती पै हँसैगा खून राणा के गड़ेंगे बाण ॥
आसमान हँस रहा, लहू दीवा चस रहा, धँस रहा पहाड़ सुमेर का ॥१॥
कूड़ी पै चढा दिया पापी सरोजनी सा सुथरा फूल ।
केतू को संजाया तूने चन्दा में लगा के धूल ॥
कुत्ते को उढा दी बैरी शिव के नाँदिया की झूल ॥
मत छुओ मेरी कांया, मैं चन्दन की छाया, तू जहरी पेड़ कनेर का ॥२॥
सेज पै ना चढियो पापी शेरनी रिसाई जागी ।
तेरे खून से जो हो बेटी तुरकड़ों कै ब्याही जागी ॥
आबरू के व्यापारी पै इज्जत ना लुटाई जागी ॥
तन भी सड़ेगा, नरक में पड़ेगा, साथी मिले ना तेरी मेर का ॥३॥
गुरशरणदास कह राणा कुल की महलों में बिगड़गी नार ।
मानसिँह सेनापति के ताज में दी ठोकर मार ॥
महलों से पछाड़ खाके पहुँच गई देव द्वार ॥
पापी से मुँह मोड़ के चाली जग छोड़ के, दिया तोड़ पिञ्जरा शेर का ॥४॥